प्रमोद-पुस्तकमाला की बाइसवीं पुस्तक

व्यवधान

[ग्रामीण जीवन का घटना पूर्ण, सामाजिक उपन्यास]

—:o:—

लेखक

राय दुर्गाप्रसाद रस्तोगी 'आदर्श'

—:o:—

प्रकाशक

प्रमोद पुस्तकमाला

यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

द्वितीय वार सन् १९४५ ई० मूल्य १॥) रुपया

प्रकाशक—

पं० करुणाशंकर शुक्ल

प्रमोद-पुस्तकमाला, यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
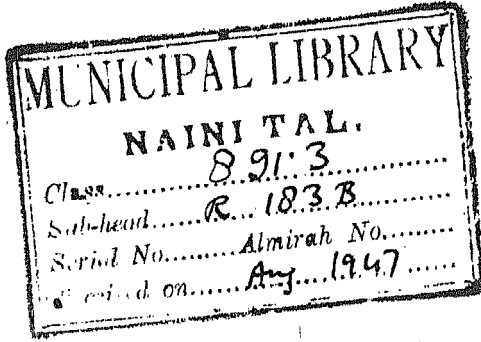
मुद्रक—

पं० करुणाशंकर शुक्ल

प्रमोद प्रेस, यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

१

सामने यह लम्बा रास्ता पड़ा है। किनारे किनारे हरे हरे खेतों का फैलाव है और बीच से जाता हुआ यह रास्ता ऐसा जान पड़ता है जैसे कोई पतली सी नदी बहती हुई चली जा रही हो या आकाश के बीच चमकते हुये तारों को पिघला कर किसी ने ढुलका दिया हो। सदाशिव धीरे-धीरे इस पुरानी पगदण्डी पर चला जा रहा था। पश्चिम में अवसान की ओर अग्रसर होते हुये सूर्य की किरणें पीली पड़ रही थीं। सदाशिव के अधरों पर मुस्कान खेल उठी और उसका मुँह फैल गया। यों निर्जन भाग में एकाकी चलते हुये हँसना कुछ विचित्र सा ही प्रतीत होता है पर सदाशिव का स्वभाव कुछ ऐसा ही है कि वह जीवन में सदैव हँसता ही रहना चाहता है। जीवन में मुस्कान और व्यथा यही दो तो हैं। मनुष्य इनमें से किसी एक को अपना लेता है। सदाशिव ने जीवन में मुस्कान को अपना लिया है।

सदाशिव सहसा चौंक पड़ा, दृष्टि उठा कर उसने एक ओर देखा। संध्या की हवा जोरों के साथ चल रही थी। आजकल हवा कुछ तेज चलती भी है। इसीलिये वह बाहर निकल आया था। हरे भरे खेतों को देख कर उसका जी खिल उठता है और वह एक बार प्रकृति के समस्त सौन्दर्य को अपने में समेट लेने को उत्सुक हो जाता है।

थोड़ी दूर वह और आगे बढ़ा। मार्ग पथरीला हो गया है; आगे चढ़ाई है, किसी समय में शायद उस ऊँची भूमि में कोई गाँव बसा

रहा होगा; पर अब तो वह एक टीले के रूप में ही शेष रह गया है। सदाशिव ने अनेक बार इस टीले पर बैठ कर इसके गत इतिहास पर विचार किया है। उसने एक बार टीले की ओर देखा। एक लड़की ऊपर से उतर रही थी। क्षण भर वह उसे देखता रहा जैसे पहचानने का प्रयत्न कर रहा हो। गाँव के सभी लोगों को वह पहचानता है; इस लड़की को उसने अभी तक तो गाँव में नहीं देखा। कौन हो सकती है यह? तभी उसने सोचा सम्भव है कहीं और जगह की रहने वाली हो। यहाँ दो-चार दिन के लिये आ गई हो। पर किसके यहाँ की हो सकती है। वह विचार करता रहा। लड़की और निकट आ गई। अभी अवस्था अधिक नहीं है। शैशव के अबोध जगत को छोड़ कर अभी-अभी उसने एक मदमाती दुनिया में पग रखा है। तभी तो उसके पगों में कम्पन है। पर सदाशिव किसी नारी में यह सब देखने-समझने का अभ्यासी नहीं है। उसने दृष्टि दूसरी ओर की ही थी तो सामने चीख सुन कर वह चौंक पड़ा। बढ़ कर लड़की के पास पहुँच गया। बेचारी संकोच से सहायता के लिये आये हुये व्यक्ति को देखने लगी। सदाशिव कारण पूछना भूल उसे देखने लगा तो उसने कहा—खेत में तोते बैठे थे; बहुत से थे। मेरे चारों ओर से इतने निकट से उड़े मैं घबड़ा गई।

सदाशिव हँसने लगा। लज्जापूर्ण हास की रेखा लड़की के अधरों पर मुस्कान बनकर खेल गई। सदाशिव ने अवसर पा पूछा—तुम इस गाँव की तो हो नहीं फिर यहाँ कैसे आईं।

'तुम यह सब जान कर क्या करोगे!' उसने चापल्यपूर्ण नेत्रों को घुमाते हुये उत्तर दिया।

प्रश्न का उत्तर प्रश्न नहीं होता पर जब कोई प्रश्न के उत्तर में प्रश्न कर दे तो फिर पूर्व प्रश्नकर्ता का उत्तर देना कर्तव्य हो जाता है। इसलिये सदाशिव ने कहा—मैं इस गाँव के सभी आदमियों को जानता हूँ। तुम्हें नहीं पहचानता था इसीलिये पूछा।

'और यदि मैं न बताना चाहूँ तो।'

'तोक्या ? मुझे मालूम तो हो ही जायगा।' सदाशिव ने गर्व से उत्तर दिया।

'अच्छी बात है, मालूम कर लेना।' लड़की ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया और अपनी राह आगे बढ़ गई।

सदाशिव अपने-स्थान पर खड़ा सोचता रहा; आखिर यह लड़की है कौन ? पर है बड़ी विचित्र और चपल ! गाँव की कोई भी लड़की इस तरह उत्तर नहीं दे सकती थी।

सदाशिव आकर टीले पर बैठ गया, उसके अधरों पर इस समय प्रसन्नता की मुस्कान खेल रही थी। वह सोचता रहा, यौवन में शायद चपलता आही जाती है। जब यौवन की अंगूरी शराब गालों पर कोई अनजाने में ढाल देता है तब आँखों में भी चंचलता आकर छा उठती है। सदाशिव का जीवन इसी गाँव में बीता है, गाँव का एक-एक कण जैसे उससे परिचित है और इस लड़की को वह नहीं जानता। स्त्री कितनी जटिल पहेली है उसे भला कब कौन जान सका है। जानने का प्रयत्न तो सभी किया करते हैं पर जान जैसे उसे कोई नहीं पाता।

उसने चिन्तना से अलसाई हुई आँखें ऊपर उठाई; सामने टीले की उच्च भूमि पर बबूल का एक पेड़ खड़ा है अडिग, तन कर वह खड़ा है जैसे उसे किसी का भय न हो। यौवन में आदमी निर्भय होकर खड़ा होता है और यह बबूल, इसमें भी तो अभी यौवन लहराने लगा है। टीले के नीचे हरे हरे खेत फैले हुए हैं। लहराते हुए पौधों की नोक हवा में झूल रही थी। चारों ओर प्रकृति जैसे हँस रही हो। हरियाली को छू कर बहती हुई हवा उसके सिर पर रखे अँगोछे से क्रीड़ा कर रही थी और वह जैसे सब कुछ भूला हुआ बैठा था। प्रकृति के सौन्दर्य का जैसे उसे कुछ ज्ञान ही न हो।

कितनी देर तक वह उसी प्रकार बैठा रहा इसका उसे ज्ञान नहीं। जब धरती पर अंधकार फैलने लगा तब वह उठा और अपने घर की ओर चल दिया। वह अपने खेत देखने के लिये आया था पर उसे इसका जैसे कुछ ध्यान ही नहीं था। चलने लगा तो उसने अपने खेतों पर एक नजर डाल दी। धीरे-धीरे वह टीले से नीचे उतर रहा था। उसे बार बार उसी लड़की का ध्यान आ जाता। कितनी सुन्दर थी वह, गोला सुन्दर सा चेहरा, बड़ी बड़ी चमकीली आँखें, कमर तक बिखरी हुई काली केशराशि, मुस्कान और व्यंग भरे अधर! वह एक घाँघरा पहने हुए थी सिर पर काले रंग का एक दुपट्टा था। उसके गाँव की स्त्रियाँ या लड़कियाँ घाँघरे नहीं पहनती। इसीलिए तो उसने अनुमान किया कि वह अवश्य ही कहीं और जगह से आई है।

सदाशिव गाँव की ओर बढ़ रहा था। सहसा खेत में झींगुरों की झिनझिन सुनाई पड़ने लगी। गाँव का हरवाहा हरखू अपने ढोर लेकर लौट रहा था। उच्च स्वर से वह अपना गीत अलाप रहा था। सदाशिव को गीत की ध्वनि सुन कर हँसी आगई। यह हरखू भी विचित्र आदमी है। दिन भर यह ढोरों के साथ-साथ मारा मारा फिरता रहता है पर गाँव आने लगता है तो गीत अवश्य ही छेड़ देता है। रधिया है न, उसे यह जाने क्यों इतना प्यार करता है यह बात सदाशिव की समझ में कभी नहीं आती। सदाशिव को जान पड़ा कि जैसे हरखू का यह गीत अपनी प्रेमिका को मिलन संदेश दे रहा। हरखू के गीत का भावार्थ था—

"जब से मैंने तुम्हें प्रेम किया है मैंने अपना एकमात्र उद्देश्य तुम्हारी पूजा करना बना लिया है। मैं तुम्हें प्राप्त करना नहीं चाहता वरन् मैं केवल तुमसे प्रेम करने का अधिकार चाहता हूँ। वह भी अधिकार यदि तुम दे सको।"

सदाशिव सोचने लगा—हरखू का प्रेम किस प्रकार का है जो यह केवल प्रेमिका की पूजा करके ही सन्तुष्ट हो जाता है। स्वयं वह तो

कभी इस प्रकार संतुष्ट नहीं हो सकता। वह तो जिससे प्रेम करेगा उसे हर तरह से अपनी बनाने पर ही संतुष्ट हो सकता है। कहते हैं रधिया भी हरखू को बहुत चाहती है जब कभी वह 'हार' में जाती है तो हरखू से अवश्य मिलती है और हरखू भी ढोरों को अपने साथी छोटे-छोटे लड़कों के ऊपर छोड़ कर स्वयं बैठ कर उससे घंटों बातें करता रहता है। एक बार तो इसी तरह वह बैठा बातें कर रहा था। ढोरों को उसने अपने साथियों पर छोड़ रखा था। संध्या समय जब वह सब जानवरों को एकत्र करके घर को चलने लगा तो उसकी चिर-परिचित दृष्टि ने अनुभव किया कि चौधरी की काली बड़ी गाय नहीं है। उसका हृदय धक से हो गया। चौधरी का मामला ठहरा। फिर जानवरों की देखभाल के लिए ही तो वह चरवाही लेता है। उसे अपने ऊपर खिजलाहट आ रही थी। परन्तु उसका भाग्य अच्छा था। गाय अपने घर पहुँच गई थी। पर दूसरे चौधरी ने हरखू को डाँट डपट कर ताकीद कर दी कि भविष्य में वह इतना लापरवाह न रहे। सदाशिव सोचने लगा प्रेम भी विचित्र वस्तु है अभी तक जीवन में उसने किसी स्त्री को प्रेम नहीं किया और न कभी किसी को प्रेम वह कर ही सकता है।

सदाशिव ने जीवन में कभी किसी से प्रेम नहीं किया। इसलिए उस लड़की को देख कर उसके हृदय में एक विचित्र अनुभव हो रहा था। गाँव की अनेक स्त्रियों से उसका परिचय है, उनका सामीप्य उसे प्राप्त हुआ है परन्तु अभी तक उसे कभी इस प्रकार नहीं लगा। अपने मन में वह इस नवागन्तुका के सम्बन्ध में विचार करता हुआ गाँव की ओर चला जा रहा था।

गाँव के पूर्व की एक ओर एक घर है। दूर से ही उसके द्वार पर जलता हुआ प्रकाश टिमटिमा रहा था। सदाशिव ने सोचा इधर कई दिनों से वह विपिन भाई के यहाँ नहीं गया। जान पड़ता है विपिन भाई इस समय घर पर ही है तभी तो द्वार पर जगरमगर हो

रही है। गाँव में विपिन का बहुत सम्मान है, वह शहर में नौकरी करता है, घर में उसकी माँ और पत्नी रहती हैं। खेती का कारबार करने के लिए उसने एक नौकर रख लिया है। वही सब करता है। छुट्टियों के दिन वह जब आता है तो गाँव वाले उसके यहाँ एकत्र हो जाते हैं। वह भी उसी ओर को चल पड़ा। विपिन उसका बचपन का साथी है। पिता की मृत्यु, जब विपिन बहुत छोटा था, तभी हो गई थी। तब गाँव वालों ने सोचा था कि विपिन अब अपने पिता की सो धाक नहीं सुरक्षित रख सकेगा परन्तु भगवान ने उसकी सहायता की और सदाशिव का विपिन भैया एक दिन घर वालों को बिना बताये घर से चला गया। बूढ़ी माँ रो-रो कर दिन काटने लगी। तब सदा-शिव प्रतिदिन उसके यहाँ जाता और विपिन की माँ को सान्त्वना दिया करता। लगभग दो महीने बाद विपिन जब लौटा तो गाँव वालों को बहुत आश्चर्य हुआ। वह शहर में नौकर हो गया था। गाँव भर की दृष्टि में अब वह पहले का विपिन न रह गया था। अपने प्रिय साथी का यह विकास देखकर सदाशिव को बड़ी प्रसन्नता हुई।

विचारों की श्रृंखला चल रही थी और उसके पग आगे की ओर बढ़ रहे थे। विपिन का घर निकट आ गया। उसने देखा लोग बैठे हुये हैं। सदाशिव को देखते ही विपिन ने कहा—अरे सदाशिव भाई, तुम खूब आये! कहो कहाँ रहे दिखाई नहीं दिये।

'कहाँ और जाऊँगा। पर मुझे पता नहीं था कि तुम आ गये।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

'आज ही तो प्रातः आया। तुम्हारा क्या समाचार है?'

'अपना क्या समाचार पूछते हो। सरिता बहती रहती है, उसके दो कूल होते हैं और कितनी ही वर्षा क्यों न हो, समस्त जल को वह अपने में समेट कर बहती रहती है।' सदाशिव ने विचारक की भाँति मुस्करा कर कहा।

विपिन मुस्कराया बोला—नहीं भाई, तुम्हारी यह बात तो ठीक

नहीं। कूलों में बहने वाली सरिता में भी तो कभी-कभी बाढ़ आ जाती है।

'आ जाती होगी पर यदि बेचारी सरिता मरुभूमि में ही बहती हो तो बाढ़ आयेगी कहाँ से।' सदाशिव ने तुरन्त ही उत्तर दिया।।

'तुम्हारी भी बातें बड़ी विचित्र होती हैं सदाशिव।' निकट ही बैठे हुये रामलाल ने कहा।

'इनकी बातें ऐसी ही होती हैं।' विपिन ने कहा।

किवाड़ों के निकट जो छोटी सी दीवालगीर टँगी हुई टिमटिमा रही थी उसे देख सदाशिव उठ खड़ा हुआ और पास जा बत्ती तेज़ करते हुये वह बोला—इतने कम प्रकाश में तुम सब बैठे हो मुझे तो बहुत परेशानी सी अनुभव होने लगती है।

'अन्धकार में भी तो लोग जीवन व्यतीत करते हैं।' विपिन ने कहा।

'हाँ पर उनके पास भी आशा का प्रकाश या परिस्थितियों की विवशता रहती है।' सदाशिव ने कहा और आकर फिर अपने स्थान पर बैठ गया।

रामलाल फिर बोल उठा—विपिन भैया, यह सदाशिव हमारे गाँव में रहने योग्य नहीं। इसे तो शहर वालों के बीच में रहना चाहिये। इसे क्यों नहीं तुम शहर लिवा जाते, कहीं कोई नौकरी दिला देना।

'मैंने तो इससे कई बार अपने साथ चलने को कहा पर जब यह माँ का आँचल छोड़ना चाहे तब न।' विपिन ने कहा।

'मैं वहाँ क्या करने जाऊँ? हाँ, तुम्हीं लोग मुझे गाँव में न रहने दो तो बात दूसरी ही है।' और सदाशिव जी खोल कर हँस पड़ा।

रामलाल अप्रतिभ सा हो उठा बोला—नहीं सदाशिव। भला हम सब यह क्यों चाहेंगे। हम तो यही चाहते हैं कि तुम सदा हमारे बीच में रहो पर भाई गाँव में धरा क्या है?

सदाशिव के मन में आया कि वह कह दे गाँव में तो आज मैंने

वह चीज़ देखी है जो शहर में भी न दिखाई देगी पर वह चुप रहा। बात मुँह तक आकर रह गई।

थोड़ी देर बात करके जब रामलाल चला गया तो विपिन ने उठते हुये कहा—चलो सदाशिव भीतर ही बैठें।

'चलो' कह कर सदाशिव उठ खड़ा हुआ।

माँ आँगन में ही बैठी थीं। उनकी आँखों से तनिक दिखाई कम पड़ता है। विपिन के साथ सदाशिव को बातें करते सुन कर उन्होंने पूछा—अरे यह सदाशिव है क्या?

'हाँ माँ!' सदाशिव ने कहा।

'भला जो, विपिन न आता तो तू काहे को इधर दिखाई पड़ता।'

'नहीं तो माँ, मुझे विपिन भैया के आने का पता भी नहीं था। मैं तो तुम्हें और भाभी को देखने आया था।'

'चल बातें बनाना तुझे बहुत आता है।'

सदाशिव हँस दिया। माँ को सदाशिव से बहुत स्नेह है। बचपन से ही वह और विपिन एक साथ रहते थे। सदाशिव तो दिन भर विपिन के ही यहाँ रहता था।

माँ ने कहा—अभी उस दिन जीजी से भेंट हुई थी तो मैंने उनसे भी कहा था कि सदाशिव इधर नहीं आया, कहाँ रहता है। उन्होंने कहा कि तू दिन भर जाने कहाँ घूमता रहता है। जब तक तेरा ब्याह करके घर में बहू लाकर न रख दी जायगी तब तक तेरा ढङ्ग ठीक न होगा।

विपिन की स्त्री इतने में ही आँगन में आगई। माँ की बात सुन कर बोली—माँ इनके माथे मढ़ कर क्यों किसी अबोध लड़की का जन्म नष्ट करने की सोच रही हो।

सदाशिव हँसने लगा। माँ ने कहा—क्यों बहू, चल भला तू ऐसा क्यों कहती है। मेरे लड़के में कौन ऐसी खराबी है।'

'खराबी, अरे यह कुछ कम है ? इन्हें घूमने फिरने के मारे कभी बहू की ओर भी देखने का अवकाश मिल सकता है।'

'भाभी तुमने मुझे ठीक ही समझा है। इसीलिये तो मैं चाहता नहीं कि किसी लड़की को लाकर घर में डाल दूँ।' सदाशिव ने भाभी की ओर देख कर उत्तर दिया।

भाभी भी आकर माँ के पास ही बैठ गई। माँ जब कभी सदाशिव को देखती हैं तो उनकी इच्छा बराबर यही रहती है कि उसे किसी प्रकार विवाह करने के लिये राजी करें। विपिन की बहू के रिश्ते की एक बुआ है। उनकी लड़की के लिये माँ ने सदाशिव की माँ से बात चलाई थी। बेचारी बुढ़िया तो तैयार थी पर सदाशिव ही नहीं तैयार हुआ। इसी लिये भाभी सदाशिव का बहुधा परिहास किया करती हैं। कहती हैं—लल्ला, किसी लड़की को घर में लाकर रखना कुछ हँसी खेल नहीं है। सदाशिव भी हँस देता है। भाभी की बात का उत्तर वह कभी कुछ नहीं देना चाहता। आज अवसर देख भाभी, ने चुटकी ली थी। सदाशिव ने भाभी की ओर देख कर कहा—भाभा माँ बूढ़ी हो गई इनको तो लगता है कि घर में एक और स्त्री आ जाय।

'हाँ रे, आ न जाय तो फिर तू करेगा भला क्या ?' माँ ने कहा।

सदाशिव ने कोई उत्तर न दिया पर भाभी चुप नहीं रह सकती थीं बोली—माँ, अभी यह व्याह नहीं करते फिर देखना इनको कोई ऐसी ही वैसी बहू मिलेगी।

'सब का भाग्य विपिन भैया सा नहीं होता।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

भाभी सकुचा गई। उन्होंने दृष्टि नीची करली पर धुँधले प्रकाश में वे विपिन की ओर देख रही थीं शायद वे अपनी आँखों ही आँखों में पति से कह रही थीं कि तुमने क्या कभी ऐसा अनुभव किया है ?

विपिन ने बात की शृंखला में एक मोड़ देने के लिए पुकारा—रामा, एक गिलास पानी तो देना।

भाभी ने मुड़ कर पीछे की ओर देखा। शायद वे यह अनुमान लगा रही थीं कि बात जिससे कही गई है उसने सुना या नहीं!

भीतर घड़े से पानी उड़ेलने की ध्वनि हुई तो वे फिर बातें करने लगीं।

रामा पानी का गिलास हाथ में लिये हुये आँगन में आई तो सदाशिव की आँखें उठ गईं। नाम सुन कर ही वह जैसे चौंक उठा था। वह जानता है कि विपिन के यहाँ माँ भाभी और विपिन के छोटे बच्चे को छोड़ कर और कोई नहीं है पर 'रामा' नाम सुन कर उसे आश्चर्य हुआ था। इसलिये वह इस नई रामा को देखने के लिये उत्सुक हो उठा था।

सामने उसने देखा, हाथ में गिलास लिये रामा खड़ी थी। 'तुम!' सहसा सदाशिव के मुख से निकल गया।

रामा कुछ न बोली। विपिन ने रामा के हाथ से गिलास लेते हुये कहा—सदाशिव, तुम इसे कैसे पहचानते हो?

सदाशिव को अपनी भूल ज्ञात हुई। वह कुछ उत्तर देने की बात सोच ही रहा था कि रामा बोल उठी—अभी संध्या को मैं टीले से लौट रही थी तो यह खेतों के तोते उड़ा रहे थे। तभी मुझे इन्होंने देखा था।

'क्या उड़ा रहे थे तोते!' विपिन ने आश्चर्य से पूछा।

'हाँ, तोते और तोतों को देख कर यह ऐसी डर गई कि—'सदाशिव ने हँसते हुये कहा।

रामा खाली गिलास लेकर फिर चली गई। सदाशिव ने कई बार पूछने की इच्छा की यह रामा कौन है पर पूछ न सका।

जब वह घर लौट रहा था तब भी मन में सोच रहा था कि आखिर यह रामा हो कौन सकती है। उसे सहसा यह सोच कर हँसी आगई कि रामा ने उससे कहा था कि मेरा नाम-गाँव पता लगा लेना। सो उसने पता लगा लिया।

चारों ओर अन्धकार व्याप रहा था और वह बराबर आगे बढ़ रहा था। माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी। घर पहुँचते ही माँ ने पूछा—किधर चला गया था, इतनी रात हो गई तब जाकर लौटा है।

'विपिन भैया आये हैं, उन्हीं के यहाँ चला गया था।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

२

रात सदाशिव को अच्छी तरह नींद न आई। भोजन करने के पश्चात वह अपनी खाट पर लेट गया। घर में माँ बेटे तो हैं ही ? चौके का सारा काम करके माँ भी आ गईं और खाट बिछा कर सदाशिव के निकट ही लेट गईं। सदाशिव विचारों में मग्न शून्य की ओर निहार रहा था। यह बाहर की ओर विस्तृत शून्य है; आकाश आज साफ़ था, नील नभ में खिली हुई तारिकायें टिमटिमा कर प्रकाश कर रही थीं। नभ के इस शून्य अन्धकार में जगती का जीवन सुप्त हो जाता है। तब कोई आँखें खोल कर नभ की ओर देखता रहे तो उसे इस सृष्टि के अङ्क में एक विचित्रता का आभास मिलता है। सदाशिव भी शून्य की ओर निहार रहा था जैसे वह अपने हृदय के शून्य की बाहर फैले हुये इस विस्तृत शून्य से तुलना कर रहा हो। मानव का यह स्वभाव होता है कि वह प्रकृति के विचित्रागार में अपने ही जीवन की झाँकी देखने का प्रयत्न किया करता है।

सदाशिव ने करवट ली तो माँ ने कहा—सोया नहीं क्या बेटा !

विचारों के प्रपात के पथ पर एक विशाल पाषाण आकर पड़ गया और उसकी विचार धारा टकरा कर चूर चूर हो गई; मोती से जलकण ऊपर की ओर उछल उठे। सदाशिव ने अपने विचारों को समेटते हुये कहा—नहीं तो माँ, सो तो नहीं रहा हूँ। अभी नींद नहीं आई।

'काहे, या तो तू खाने के बाद खाट पर लेटते ही सो जाता था।' माँ ने कहा।

'हाँ, पर आज नींद नहीं आ रही है।'

'तू दिन भर तो घूमता रहता है। शरीर थक जाता है नींद आये कहाँ से।' माँ ने स्नेह सिक्त स्वर में कहा।

सदाशिव को माँ की समझ पर हँसी आई। घूमता भला वह कहाँ रहता है। दिन भर तो उसे काम से ही अवकाश नहीं मिलता। यह अवश्य है कि वह अपना कोई काम नहीं करता परन्तु इससे क्या होता है। काम तो उसे करना ही पड़ता है। गाँव का हर व्यक्ति उसे कुछ न कुछ काम बता ही देता है। आज किसी के यहाँ कोई बीमार है तो कल उसे खेत में एक सहायक की आवश्यकता है। सदाशिव सभी की सहायता करने को तैयार रहता है। उसने कहा—माँ, तुम भी अजीब हो। भला मैं दिन भर घूमता कहाँ रहता हूँ?

'तो फिर क्या करता रहता है।'

सदाशिव ने कोई उत्तर न दिया। माँ ने फिर पूछा—'आज दिन भर तू कहाँ रहा?

'रहा कहाँ, अधीन मामा के खेत में आज बुआई हो रही थी। वहीं चला गया था। दिन भर लग गया।'

'यह भी कोई काम है।'

अवसर देख माँ ने उपदेश देना चाहा—बेटा, अब तो तुम बड़े हो गये! मेरी पकी अवस्था! पता नहीं कब तक रहूँ अब तो तुम्हें अपना काम धाम देखना चाहिये।

'क्या काम देखूँ माँ! सभी तो काम दूसरों से करा लेती हो।' सदाशिव ने कहा।

'न करा लूँ तो जानती भी तो हूँ कि तू काहे को करेगा।'

'करूँगा क्यों नहीं पर जब कोई काम ही न हो तो फिर मेरा क्या अपराध।'

'तुझे कभी बुद्धि न आयेगी। जब तेरी बहू आयेगी तो वही तुझे राह पर लायेगी।'

बहू का नाम सुन कर सदाशिव तनिक चौंक सा पड़ा। उसकी आँखों के सामने जाने क्यों 'रामा' का चित्र उतर आया। हाँ, वह भी अब बहू होने के योग्य हो गई है। एक दिन वह भी किसी घर की बहू हो जायगी। अपने पति के घर वह चली जायगी तो क्या वहाँ भी वह इसी प्रकार चपलता करेगी। नहीं, लड़कियाँ ससुराल में आकर सागर सी गम्भीर हो जाती हैं। विवाह स्त्री के जीवन में एक चौराहा है जहाँ पहुँच कर वह क्षण भर के लिये रुक कर अपना मार्ग निश्चित करती है। और फिर अपने मार्ग पर अग्रसर हो जाती है। यहीं आकर अपना अतीत और वर्तमान उसे भूलना पड़ता है। उसे नये जीवन में प्रवेश करने के लिये पहले से तैयारी करनी पड़ती है। आज के व्यवसायिक जग में एक व्यक्ति एक ही प्रकार के व्यवसाय में संलग्न रहता है। प्रत्येक व्यवसाय के लिये उसे कुछ समय उस कार्य को करने की क्षमता प्राप्त करने में लग जाता है परन्तु बेचारी स्त्री इसके लिये भी अवसर नहीं पाती। पिता के शैशव के आश्रय को छोड़ कर उसे सहसा पति के घर जाना पड़ता है। वहाँ वह पहाड़ पर की मुक्त गिलहरी नहीं रह जाती। साँसों सी मुक्त, यौवन के उन्माद के साथ खेल करने वाली उस लड़की को पति के घर में आकर कुछ और ही बन जाना पड़ता है।

यह है एक स्त्री का जीवन। क्षण भर में यह सभी बातें सदाशिव के मस्तिष्क में घूम गईं। वह सोचता ही रहता परन्तु उसे सहसा माँ के प्रश्न का ध्यान आया इसलिये उसने कहा—माँ, मुझ में बुद्धि लाने के लिये क्या तुम पर्याप्त नहीं हो।

'मैं! नहीं बाबा! मेरे मान का यह काम नहीं।' माँ ने हँस कर उत्तर दिया।

'तो फिर तुम्हारी बहू भी कुछ न कर सकेगी यह भी तुम मान लो।'

'पर बेटा, आखिर तुम इस तरह ब्याह को कब तक टालते रहोगे।'

'टालता कहाँ हूँ माँ! पर जब बहू की इस घर में जरूरत हो तब न!'

'है क्यों नहीं आवश्यकता सदाशिव! देखता तो है कि जब तू छोटा था तभी तेरे पिता मर गये और तभी से इस घर का सारा जंजाल अपने सिर पर लेती आ रही हूँ। अब तो मुझे मुक्ति दे।'

'तुम अपने से करती हो, तो नहीं मैं सब करने को तैयार हूँ।'

'तू क्या करेगा, खाना बनायेगा या गृहस्थी की देख भाल करेगा!'

'दोनों ही।' कह कर सदाशिव हँसने लगा।

माँ चुप हो गई थीं फिर बोलीं—अब मेरी अवस्था यह आई कि घर में बहू हो कुछ मेरी भी सेवा करे।

'और मैं जैसे तुम्हारी कुछ सेवा करता ही नहीं।' सदाशिव ने शिकायत की।

'तेरी सेवा से तो मेरा काम नहीं चल सकता न। अब अच्छी तरह समझ ले सदाशिव कि इस साल मैं तेरा विवाह करके ही चैन लूँगी।'

'तो तुमने अब मुझ पर जबर्दस्ती करने की बात सोच ली है।'

'जबर्दस्ती नहीं; देख, अभी उस दिन विपिन की माँ मिली थीं। उनका अनुरोध है, कि मैं उनकी बताई लड़की की बात मान लूँ। लड़की हजार में एक लड़की है। अपने घर का सारा भोजन वह स्वयं बनाती है। और उनका घर कुछ अपने जैसा नहीं है। बहुत बड़ा परिवार है।'

'तो इससे क्या होता है। जब अपने यहाँ आकर कोई लड़की ऐसी हो तब न!'

'होगी क्यों नहीं, जब अपने घर में वह इतना करती है तो ससुराल में जाकर तो वह और भी अधिक करेगी।' माँ ने कहा।

'फिर भी माँ दुनिया में और भी तो बहुत सी स्त्रियाँ हैं। रामगुलाम ने विवाह किया होगा तब क्या उसने कुछ न सोचा समझा होगा। अब देखो बहू ने आते ही रामगुलाम की माँ को घर से निकलने के लिये बाध्य कर दिया।'

'अरे चुप रह! सब ऐसी नहीं होतीं। वह तो पूरी कर्कशा है। बेचारी बुढ़िया को अपने अन्तिम दिन भी सुख से न काटने दिये।'

'इसीलिये तो मैं विवाह करता नहीं। जब तक कोई अच्छी लड़की न मिल जाय ऐसे ब्याह करने से लाभ!'

'तो बाबा तू ही बता, कोई अच्छी लड़की। मुझे तो उस लड़की में कोई खराबी नहीं दीख पड़ती।'

सदाशिव क्षण भर सोचता रहा फिर बोला—थोड़ा धैर्य धरो। कोई न कोई लड़की अवश्य मिल जायगी तब मैं भी तैयार हो जाऊँगा तुम्हीं तो कहती हो माँ कि सब काम का समय होता है।'

माँ चुप हो गईं। क्या उत्तर दे। जीवन में उन्होंने सभी कुछ विधाता के हाथों समर्पित कर दिया है। एकमात्र उसी भगवान का उन्हें सहारा रहा है। जो कुछ होता है वह उसी की इच्छा से यह सोच उन्होंने सदैव ही अपने ऊपर व सन्तोष किया है। अपने ही तर्क से आज स्वयं हार कर वे चुप रह गईं।

सदाशिव फिर विचार मग्न हो गया। रामा का उसे स्मरण हो आया। सहसा उसके मस्तिष्क में आया यदि रामा से उसका विवाह हो जाय तो कैसा! अरे, वह यह क्या सोच गया। रामा से वह विवाह करेगा! नहीं, वह इतनी चपल है कि उससे उसकी कभी पट नहीं सकती। ऐसी लड़की को घर में लाकर वह करेगा ही क्या? पर...पर नहीं, रामा कितनी सुन्दर है! उसकी वह काली ओढ़नी कैसी सुन्दर लगती है। उसके गाँव की स्त्रियाँ, लड़कियाँ कोई भी घाँघरा नहीं पहनतीं। उसे घाँघरा पहने कोई स्त्री पहले कभी भली नहीं दीखी पर रामा के शरीर पर यह घाँघरा भी कितना सुन्दर लगता है!...होगा

मुझे यह सब कुछ न सोचना चाहिए। वह रामा के सम्बन्ध में अधिक कुछ नहीं सोचना चाहता। पर जैसे उसे कोई उसके सम्बन्ध में सोचने के लिए बाध्य कर रहा हो। वह बार बार सोचता ही जा रहा है—

किन्तु रामा के सम्बन्ध में वह कुछ जानता भी तो नहीं। अभी आज उसे उसने देखा है। उसका पूरा परिचय भी तो उसे प्राप्त नहीं है। विपिन के यहाँ आज उसने उसका नाम भर सुन लिया है। और वह उसके सम्बन्ध में जानता ही क्या है? पर यह रामा विपिन की कौन है। उसने पूछना चाहा था पर जाने क्यों उस समय उसे संकोच हो आया और उसने फिर कुछ नहीं पूछा। विपिन के जितने भी सम्बन्धी हैं उन सभी से वह परिचित है पर यह लड़की उसके लिए अपरिचिता है।

माँ को सम्भवतः नींद आ रही थी। सदाशिव ने पुकारा—माँ!

माँ चौंक कर बोली—क्या है?

'तुम विपिन के घर इधर नहीं गईं?'

'नहीं, क्यों?'

'यों ही पूछा। उनके यहाँ कोई मेहमान आया है।'

'आज!'

'यह तो नहीं कह सकता पर आज जब मैं गया तो देखा घर में एक लड़की भी थी।'

माँ को कुछ ध्यान आ गया बोलीं—हाँ, उस दिन विपिन की माँ भी कहती थीं।

'क्या कहती थीं?' सदाशिव ने उत्सुकता से पूछा।

'यही, इस लड़की के सम्बन्ध में।'

माँ को कोई सन्देह न हो कि सदाशिव क्यों उस लड़की के सम्बन्ध में इतना उत्सुक है। इसलिए वह चुप हो गया पर मन की जिज्ञासा शान्त न हुई। उसने फिर पूछा—यह लड़की कौन है माँ?

'विपिन की मौसी की नन्द की लड़की है। यहाँ आई है दो चार दिन के लिये।'

'हूँ।' सदाशिव सोच रहा था।

माँ चुप हो गईं उन्हें नींद आ रही थी। पर सदाशिव चाह रहा था कि माँ जगती रहें तो वह उनसे कुछ और बातें करे।

मानव के मन में जब जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो वह उसको शाँत करने के लिये संलग्न हो जाता है और जब तक उसकी शांति नहीं हो जाती तब तक वह शान्ति नहीं ग्रहण करता। मनुष्य का यह स्वभाव ही उसकी सभ्यता के इस विकास का उत्तरदायी है। वह सदैव ही प्रकृति के रहस्यों का अनुभव करता रहता है और फिर उन रहस्यों का उद्घाटन करने में तत्पर हो जाय यही इस सभ्यता की देन, विज्ञान का रहस्य है। मनुष्य जन्म से ही वैज्ञानिक होता है। परिस्थितियों के अन्तर्गत पड़ कर वह सतत अपनी खोजों में संलग्न रहता है।

जिस समय रामा से सदाशिव की भेंट हुई थी और उसने उसे चुनौती दी थी कि मेरे सम्बन्ध में पता लगा लेना। तब उसने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि कभी इतनी सरलता से वह उसके सम्बन्ध में इतनी जानकारी प्राप्त कर सकेगा। वह संकोच ही पर था।

सदाशिव को कब नींद आ गई इसका उसे स्वयं ही ज्ञान नहीं। प्रातः जब माँ ने उसे जगाया तब पूरब में काफ़ी धूप चढ़ आई थी। वह उठा तो उसकी तबीअत कुछ भारी सी लग रही थी। शायद नींद अधिक देर से आई थी इसलिये शरीर कुछ भारी भारी सा था। माँ ने कहा—सदाशिव आज बेटा तू घर पर ही रहना। आज मेरा पर्व है मैं नहाने जाऊँगी।

सदाशिव कुछ न बोला। गंगा जी गाँव से थोड़ी ही दूर पड़ती हैं। माँ ने अपने वैधव्य को काटने के लिये व्रत उपवास को ही अपना सहारा बना रखा है इसलिये कोई भी पर्व वे बिना गंगा स्नान किये नहीं छोड़ती। जिस दिन वे गंगा नहाने जाती हैं सदाशिव को घर पर

ही रहना पड़ता है। घर में यद्यपि उसके कुछ ऐसी सम्पत्ति नहीं है पर माँ को सदैव ही चोरी हो जाने का भय लगा रहता है। इसलिये सदाशिव को अपने घर की देखभाल करने के लिए रहना पड़ता है।

माँ चली गईं तो सदाशिव घर में बैठा सोचता रहा। उसकी इच्छा एक बार फिर विपिन के यहाँ जाने की हो रही थी। वह चाहता था कि यदि रामा उसे अकेले में मिल जाय तो वह उससे कहे कि देख तू कहती थी कि मैं तेरे सम्बन्ध में पता नहीं लगा सकता पर कितनी जल्दी मैंने सब जान लिया न। तब वह क्या उत्तर देगी? बेचारी को अपने ऊपर बहुत गर्व था। पर सदाशिव को चुनौती देना कुछ हँसी खेल नहीं है।

माँ उस दिन गङ्गा स्नान करके अधिक देर से लौटी। सदाशिव का एक एक क्षण कठिनाई से कट रहा था। वह चाहता था कि माँ यदि आ जाय तो वह स्वतंत्र हो जाय। माँ के आते ही उसने सन्दूक से अपनी दूसरी धोती और कमीज निकारी। उसे पहना और आँगन में आया तो माँ ने तुरन्त प्रश्न किया—अब आज कहीं जाना है क्या जो यह कपड़े निकले हैं।

सदाशिव अप्रतिभ हो गया माँ को क्या उत्तर दे। उसने यह नहीं सोचा कि उसे कहीं जाना है। यह कपड़े वह सँजो कर रखता है। कहीं आना जाना होता है तो इन्हें पहन लेता है। गाँव में ऐसे अवसर आते भी कम हैं। पर आज तो उसे कहीं जाना था नहीं। फिर भी उसने यह कपड़े निकाल कर पहने थे। विपिन भैया के यहाँ जाने के लिये तो उसे यह कपड़े पहनने की आवश्यकता थी नहीं। माँ को कोई उत्तर देना ही होगा सोच कर उसने कहा—नहीं माँ, पर वह कपड़े बहुत खराब हो गये थे। और इनको बहुत दिन से पहना नहीं था। रखे कपड़े खराब हो जाते हैं।

माँ जानती हैं कि सदाशिव को अच्छे कपड़े पहनने का शौक है।

इसलिये माँ ने कहा—खैर पहन डाल! कपड़े दूसरे बनवा लेना। पहनने के लिये ही तो कपड़े होते हैं।

सदाशिव बाहर निकला। एक बार उसने अपने को देखा। आज उसे कुछ अजीब सा लग रहा था। पर कहीं भाभी ने न टोक दिया। नहीं तो उसे बहुत लज्जित होना पड़ेगा।

विपिन के घर पहुँचा तो रामा दरवाजे पर ही खड़ी मिली। आज उसने हरे किनारे की एक धोती पहन रखी थी। सदाशिव ने उसे दूर से देखा। सोचा कोई भी कपड़ा क्यों न हो इसका शरीर ही कुछ ऐसा है कि सब कुछ इस पर अच्छा लगता है। रामा ने आज अपने बाल संवारे थे। सदाशिव को लगा जैसे वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे देखते ही रामा ने कहा—तोते उड़ाने जा रहे हो।

सदाशिव लजा गया। बड़ी ही शोख लड़की है यह। चुप रहना उसे अच्छा न लगा। सोचा कह दे यहाँ तो अपना ही तोता उड़ गया है उसी को खोजने चला आया पर मुँह न खुल सका। वह उसकी ओर पल भर देखता रहा फिर बोला—विपिन भैया हैं।

'पता लगा लो।' उत्तर मिला चट से।

'यही तुमने कल अपने लिये कहा था तो तुम्हारा पता तो लगा लिया। रही बिपिन भैया की बात उसके लिये तुमसे पूछ ही लिया नहीं तो मैं उनका पता तो लगा ही लूँगा।'

भाभी ने भीतर से आवाज सुनी तो दरवाजे पर आ गई और कहा—अरे लल्ला तुम हो। उनकी खोज में आये होगे। पर वे घर पर नहीं हैं।

सदाशिव जाने को मुड़ा तो भाभी ने कहा—आओ बैठो न कि सारा नाता नेह बस भैया से ही है।

'ऐसा नहीं है भाभी। पर सोचा चलूँ उनके पास ही बैठूँ। किन्तु वे हैं कहाँ। कब जायँगे।'

'शाम वाली गाड़ी से जायेंगे।' भाभी ने उत्तर दिया।

'कहाँ गये हैं।'

'खेत गये होंगे।

'क्यों ?,

'आज बुवाई हो रही है न।'

'अच्छा तो मैं भी उधर ही जा रहा हूँ वहीं मिल लूँगा।' सदाशिव ने कहा।

भाभी के पास शायद कोई काम नहीं इसलिये वह कुछ देर बातें करना चाहती थीं। सदाशिव को जाते देख कर बोलीं—आज तो माँ नहाने गई रही होंगी।

'हाँ।'

'और अब आकर खाना बनाने लगी होंगी तो तुम घूमने निकल पड़े।' हँस कर भाभी ने कहा।

सदाशिव के होठों पर मुस्कान की एक रेखा खिंच गई उसने उत्तर दिया—क्या करूँ भाभी! घर में कोई काम रहता नहीं। बैठे बैठे जी ऊबने लगता है। मुझे तो आश्चर्य होता है कि तुम दिन रात इसी चौखट के भीतर कैसे बन्द रहती हो।

'रहना ही पड़ता है लल्ला आने दो बहू को तो तुम भी घर से बाहर न निकलोगे।' भाभी ने परिहास किया।

सदाशिव ने कनखियों से रामा की ओर देखा। वह हँस रही थी। सदाशिव ने कहा—यह तो देखना भाभी।

'सब देखा है। बड़े-बड़े की यही दशा होती है।'

रामा ने मुस्करा कर सदाशिव की ओर देखा। उसने लजा कर आँखें नीची कर लीं। क्या कहे बेचारा। क्षण भर शांति रही फिर सदाशिव ने कहा—अच्छा भाभी चलूँ विपिन भैया से वहीं मिल लूँगा।

'अच्छी बात है।' भाभी ने कहा।

सदाशिव के पैर आगे बढ़ गये। जब वह विपिन के घर से दूर गली की मोड़ पर पहुँचा तो उसने एक बार फिर मुड़ कर देखा। भाभी भीतर चलीं गई थी पर रामा वहीं खड़ी थी। उसे लगा जैसे वह उसी को देख रही थी। शीघ्रता पूर्वक सदाशिव ओट में हो गया।

३

सदाशिव खेत की ओर गया था। मित्रों में बैठने की उसकी इच्छा आज नहीं हो रही थी मन कुछ उचटा-उचटा सा हो रहा था। मन में जब कोई चिन्ता व्याप्त हो जाती है तब वह मनुष्य को बराबर खाती रहती है। सदाशिव ने जब से रामा को देखा है उसके हृदय में एक उथल-पुथल सी मच रही है। वह बहुत चाहता है कि वह रामा की बात न सोचे पर जाने क्यों उसे बार-बार रामा का ध्यान आ जाजा है, बार बार वह उसी की बात सोचने लगता है। उसने कई बार अपने मन से पूछा कि आखिर वह इस अपरिचिता के सम्बन्ध में इतना क्यों सोचता है, पर कभी किसी निर्णय पर वह पहुँच नहीं पाता। आज वह प्रातः जब उठा तो उसने सोचा कि वह गाँव से दूर कहीं चला जाय जहाँ उसे गाँव का कोई व्यक्ति न मिले। यह सोचकर वह घर से निकला। गाँव से थोड़ी दूर पर एक तालाब है, वहीं जाकर वह बैठ गया तालाब में छोटी छोटी मछलियाँ खेल रही थीं। सदाशिव किनारे पर बैठा हुआ मछलियों की यह क्रीड़ा देखता रहा। उसके मन में आया कि संसार का प्रत्येक प्राणी इन्हीं मछलियों की भाँति ही तो है जो परिस्थितियों के अगम सागर में रहता है। वह इन्हीं की भाँति अपनी दुनिया में सुख-दुख समेटता रहता है। पर जब यही मछलियाँ पानी से बाहर हो जाती हैं तब एक क्षण के लिये भी वह जीवित नहीं रह पातीं।

मनुष्य भी तो इसी प्रकार है यदि एक क्षण के लिये भी वह इन परिस्थितियों से निकाल कर बाहर कर दिया जाय तो वह जीवित नहीं रह सकता पर मनुष्य यह सब कभी अनुभव नहीं करता। वह अपने जीवन से कितना अनजान रहता है।

उसकी विचारधारा चल रही थी। पास ही पड़े हुये एक कंकड़ को उठाकर उसने तालाब में फेंक दिया। लहरियाँ उत्पन्न हुईं और क्षण भर के लिये किनारे की ओर दौड़ पड़ी। मनुष्य के मन में भी तो इसी प्रकार कुछ आकर गिर पड़ता है और तब इच्छाओं की लहरियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और फिर कितनी शीघ्रता से नष्ट हो जाती हैं।

वह अपने विचारों में इतना लीन हो गया कि उसे इसका पता भी नहीं चला कि निरंकार कब आकर उसके निकट ही बैठ गया। निरंकार के हाथ में एक पतला लम्बा बांस था जिसमें एक डोर और एक कटिया लगी थी। उसने अपनी कटिया में मछली फंसाने का चारा लगाया। और फिर उसे पानी में फेंक दिया। छप की एक आवाज़ हुई। सदाशिव चौंक पड़ा। उसने आँखें उठाकर देखा कहा—अरे निरंकार तुम कब आकर यहाँ बैठ गये। मुझे तुम्हारे आने का पता भी नहीं लगा।

'पता कैसे लगता तुम तो किसी दूसरी दुनिया में विचर रहे थे।' निरंकार ने कहा।

निरंकार का घर सदाशिव के गांव में ही है। दोनों में पुराना परिचय है। दोनों जब मिल जाते हैं तो घंटों बातें करने में काट देते हैं।

सदाशिव ने कहा—मैं यह सोच रहा था कि इन मछलियों को शायद इसका पता भी न होगा कि अभी तुम बंशी लेकर आते होगे और उनके जीवन का यह अन्तिम क्षण है।

'यह सोचने की हमें क्या आवश्यकता! मैं तो समझता हूँ कि संसार

में एक व्यवधान हैं। जो होता है उस सब का एक समय होता है और मनुष्य उसे समझ नहीं पाता।

सदाशिव सोचने लगा तो क्या यह भी समय के निश्चय के अनुसार हुआ है कि उसका परिचय रामा से हो गया। जब पहले दिन रामा से उसका परिचय हुआ था तब उसने यह नहीं सोचा था कि रामा उसके जीवन में इतने निकट आकर बस जायगी। किसी अज्ञात नियति की ही प्रेरणा थी कि वह उसके इतने निकट आ गई है। पर वह यह सब क्या सोच रहा है। अपने हृदय को उसने बार बार टटोल कर देखा पर कहीं यह न जान पड़ा कि वह रामा को प्यार करता है। तब फिर यह भी मोह कैसा? किन्तु हो सकता है यह उसका प्रेम ही हो। प्रेम क्या है यह भी तो वह अभी नहीं जानता हाँ उसने इतना ही अनुमान कर रखा है कि जब किसी पुरुष के हृदय में किसी स्त्री के प्रति मोह उत्पन्न होता है तो लोग कहते हैं यही प्रेम है। और आज तक उसके हृदय में किसी नारी के प्रति मोह नहीं उत्पन्न हुआ। तो क्या यही प्रेम है। वह किसी से पूछेगा कि प्रेम क्या है।

सहसा उसे निरंकार का ध्यान आया। उसने सोचा निरंकार कहता था कि वह रधिया को प्रेम करता है। उसकी इस बात को लेकर गाँव में बड़ी चर्चा उठ खड़ी हुई थी तब कुछ दिन के लिये निरंकार बाहर चला गया था। कई महीने बाद वह जब गाँव को लौटा था तब वह बीमार था। उसका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था और वह पहले वाला निरंकार नहीं दीखता था। गाँव वालों को उसकी दशा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। निरंकार ने उसे बताया था कि वह कलकत्ता चला गया था। वहाँ का पानी उसके अनुकूल नहीं पड़ा और वह बीमार हो गया। उसने तो निश्चय कर लिया था कि वह गाँव न लौटेगा पर सोचा अपनी देहली पर मरना अच्छा है।

यहाँ आया तो उसका स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधरने लगा। तब से वह घर का कोई काम नहीं करता। अधिकतर वह घर में ही बैठा रहता है

या कभी अधिक मन ऊबा तो आकर वह इस तालाब पर बैठ जाता है और मछलियाँ पकड़ा करता है।

सदाशिव ने पूछा—तुम्हारे प्रेम का क्या हुआ?

निरंकार ने एक निश्वास खींची और कहा—उसका स्मरण न दिलाओ सदाशिव! जब उन दिनों की बात सोचता हूँ तो कलेजा टूक-टूक हो जाता है।

बात कुछ ऐसी दिशा की ओर मुड़ गई कि सदाशिव आगे कुछ न पूछ सका। पर थोड़ी देर चुप रह कर निरंकार ने कहा—देखते हो भैया! मेरा यह शरीर! यह सब उसी प्रेम ने किया। सोने का वह शरीर अब मिट्टी हो गया है पर उसकी याद अभी तक हृदय से न बिसरा सका हूँ।

'मैं यह न समझ सका निरंकार कि यह प्रेम होता क्या है?' सदाशिव ने वार्तालाप को आगे बढ़ाने के अभिप्राय से कहा।

निरंकार ने कहा—न समझो तभी अच्छा है नहीं तो यह निश्चिन्तता का जीवन शाप बन जायगा और मेरी तरह तुम भी घुल-घुल कर प्राण दोगे।

सदाशिव ने हँसने का प्रयत्न किया पर हँसी अधरों पर आकर ही रह गई। अधिक वह कुछ हँस न सका। निरंकार ने फिर कहा—स्त्री को जब विधाता ने बनाया था तब उसे सब कुछ दिया और उसके साथ ही पत्थर का कलेजा दे दिया।

'पर तुम्हें वह भी प्रेम करती थी या नहीं?'

'प्रेम करती थी!' निरंकार ने उत्तेजित होते हुये कहा—'प्रेम में तो वह प्रभाव है कि वह कठोर से कठोर हृदय वाले को भी अपने सम्मुख झुकने को बाध्य कर देता है और फिर रधिया वह तो मुझे अपना सब कुछ समझती थी।'

'तो बस यही प्रेम हो गया!'

'अरे तू तो यार कुछ समझता ही नहीं। प्रेम है फिर क्या? जब

दो प्राणी एक दूसरे से मिल जाते हैं तो उसी को प्रेम कहते हैं।' निरंकार ने दार्शनिक की भाँति उत्तर दिया।

सदाशिव क्षण भर सोचता रहा। यह भी कोई प्रेम हुआ। जहाँ दो हृदयों का मेल हुआ कि बस प्रेम कह दिया।

निरंकार की बंशी में एक मछली फँस गई थी। डोरी नीचे को बैठ रही थी। निरंकार ने उसे पकड़ कर खींच लिया। मछली कंटिया को अपने मुँह में दबाये हुये तड़पती हुई किनारे पर आ गई। इस करुण दृश्य में भी सदाशिव को हँसी सूझी उसने कहा—मछली को कंटिया से प्रेम हो गया है।

निरंकार हृदय खोल कर हँस पड़ा।

उस दिन सदाशिव को यह मजे की बात मिल गई। निरंकार के साथ वह बहुत देर तक रहा। फिर दोनों साथ ही घर लौटे। रास्ते भर जहाँ भी कोई दो वस्तुएँ साथ दिखाई पड़तीं सदाशिव कह उठता वह देखो प्रेम हो रहा है।

दिन भर सदाशिव प्रेम की ही बात सोचता रहा। इस समय जब वह खेत की ओर जा रहा था तब भी वह निरंकार के प्रेम की परिभाषा की बात सोच-सोच कर हँस रहा था।

खेतों के पश्चिम की ओर एक खाई है किसी समय उधर से नाला बहता था। उसका पानी खेतों में आ जाता था इसलिये यह खाई बना ली गई। इस पर सरपत की गाँठें लगी हुई हैं। जहाँ पहले नाला था अब वह रास्ता हो गया है। पर सरपत के कारण वह ओट में पड़ जाता है। सदाशिव जब मोड़ पर आया तो सरपत की पंक्ति से बाहर आते ही उसे रामा दिखाई दी। दोनों मोड़ पर आकर मिल गये। सदाशिव को हँसी आ गई। निरंकार की प्रेम की परिभाषा वह भूल नहीं सका था। जोरों के साथ वह हँस पड़ा।

रामा उसकी हँसी सुन कर आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी। उसने पूछा—

'तुम हँसे क्यों ?'

'यों ही ।'

'यों ही तो कोई नहीं हँसता

'एक बात याद आ गई थी ।'

'मुझे देख कर ?'

'हाँ !'

'क्या ?'

'यह नहीं बताता ।'

रामा ने उसकी ओर इस तरह देखा जैसे उसे सदाशिव का यह व्यवहार अच्छा न लगा हो। फिर उसने कहा—

'तुम्हें बताना होगा ।'

'और यदि मैं न बताऊँ ।'

'बताओगे क्यों नहीं। उसका सम्बन्ध मुझसे जो है ।'

'उसका सम्बन्ध सब से है ।'

'तो सभी को बताना पड़ेगा ।'

सदाशिव बड़े असमंजस में पड़ा। पहले उसने यह नहीं सोचा था। पर रामा को वह यह कैसे बताये कि वह क्यों हँसा। उसने बातों की शृंखला बदलने के उद्देश्य से पूछा—तुम इधर कहाँ से आ रही हो।

'यह मैं क्यों बताऊँ ।'

'बताने में कोई हर्ज है ?'

'नहीं तो ।'

'तब फिर क्यों नहीं बतातीं ।'

बताने की ज़रूरत ?'

'यों ही। तो सभी से पूछा जा सकता है ।'

'परन्तु मैं सब तो नहीं हूँ ।'

'हाँ, ठीक हैं' वह सब तो है नहीं। वह तो कुछ विशेष अवश्य ही है। उसने कहा—यह तो मैं नहीं कहता।

'तो फिर बताओ न!'

'पहले तुम अपने हँसने का कारण बताओ।'

बात आकर एक बिन्दु पर रुक गई। सदाशिव को लगा कि उसे अपने हँसने का कारण बताना ही पड़ेगा। उसने कहा—बात ऐसी है कि बताने योग्य नहीं है।

'बताने योग्य नहीं। क्यों, ऐसी क्या बात है?'

'ऐसी ही है।'

'बताओ।

'निरंकार को तुम तो न जानती होगी।'

'नहीं। कौन है।'

'यहीं हमारे गाँव में रहता है। आज सुबह तालाब पर मिला था तो उसने प्रेम की परिभाषा बताई थी।'

'क्या परिभाषा बताई

'उसने कहा कि दो प्राणी जब मिल जाते हैं तो उसी को प्रेम कहते हैं।'

रामा हँस पड़ी। सदाशिव को भी हँसी आ गई। दोनों खूब जोर से हँसे। तब सदाशिव ने कहा—तुम सहसा मुझे यहाँ मिल गई तो मुझे निरंकार की वह बात याद आ गई।

रामा चुप कुछ सोचती रही। एक कुत्ता एक गिलहरी के पीछे दौड़ता दीख पड़ा सदाशिव ने कहा—कुत्ता गिलहरी से प्रेम करने जा रहा है।

रामा के गम्भीर मुख पर हँसी आ गई। उसने कहा—तुम्हारी बातें भी बड़े मजे की होती हैं।

'अच्छा तो अब तुम बताओ।'

क्या।'

'कि तुम कहाँ से आ रही हो।'

'तुम्हें यह पूछने का क्या अधिकार?'

हाँ, अधिकार तो कुछ नहीं है। सदाशिव कुछ कह न सका; बोला—अच्छा बताओ किधर जा रही हो।

'यह इधर!' कह कर रामा गाँव की ओर चल दी। सदाशिव उसे देखता रह गया। अजीब यह लड़की है। इसकी सभी बातें निराली हैं। अब जब यह कभी मिलेगा तब मैं इससे यह कहूँगा।

थोड़ी दूर जाने पर रामा ने मुड़ कर उसकी ओर देखा और फिर हँस कर बढ़ गई। सदाशिव तब तक वहीं खड़ा रहा जब तक रामा दिखाई पड़ती रही। फिर वह एक ओर को चल पड़ा।

४

यौवन में प्रथम बार जब प्रेम का जन्म होता है तब मानव का हृदय अनेक प्रकार की भावनाओं से पूर्ण हो जाता है। सदाशिव के हृदय में रामा के लिये एक विचित्र प्रकार की भावना पोषित हो रही थी। अनेक बार अपनी इस भावना का विश्लेषण करने का उसने प्रयत्न किया था। उस दिन वह विपिन भैया के घर गया था। विपिन ने इस वर्ष एक नई गाय खरीदी थी। कहते हैं गाँव में उससे अधिक दूध देने वाली दूसरी गाय नहीं थी। पर स्वभाव से गाय में यह अवगुण था कि वह एक ही व्यक्ति को पहचानती थी। गाय का सारा कार्य भाभी करती थीं। इसलिये भाभी को वह इतना परच गई थी कि उनके निकट पहुँचते ही वह अपनी समस्त ममता के साथ उनकी हथेलियों को चाटने लगती।

विपिन जिस दिन गया उसके दूसरे ही दिन भाभी को ज्वर हो आया। तब से उनका जी कुछ अच्छा नहीं रहा है। ऐसा कुछ

ज्वर भी तो नहीं था कि वह चारपाई पकड़ लें। पर आज जी अधिक भारी था। दोपहर के बाद से ही उन्हें ज्वर अधिक हो गया। वे चारपाई पर लेट रही थीं। परन्तु उनके गिर जाने के कारण गाय तो भूखी रह नहीं सकती। माँ का साहस गाय के निकट जाने का नहीं होता। दूर से उसे देख भर लेकर वे सन्तोष कर लेती हैं।

रामा ने परिस्थिति को देख गाय को चारापानी देने का निश्चय प्रगट किया। माँ ने कहा रहने दे किसी को बुला कर उससे सब करा दिया जायगा। पर रामा न मानी कहा नहीं ऐसा क्या है। इतने दिन से वह इस गाय को देखती आ रही है। ऐसा भी क्या कि एक दो दिन भी वह उसका कार्य न कर सके। माँ ने भी कह दिया तेरा साहस पड़े तो देदे पर भाई मैं तो नहीं कहती।

रामा गाय को चारापानी देने सार को चली गई तभी वहाँ पहुँचा सदाशिव। माँ आँगन में ही मिली। सदाशिव ने पूछा—माँ भाभी नहीं हैं क्या?

'हैं तो, सदाशिव पर आज उनकी तबीयत ठीक नहीं है।'

'क्यों क्या बात है।'

'ज्वर आ गया है।'

'ज्वर।' सदाशिव ने आश्चर्य के साथ कहा। अभी उस दिन जब उससे और भाभी से दरवाज़े पर बातचीत हुई थी तब तो वे बिल्कुल ठीक थीं परन्तु इससे क्या? मनुष्य का जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी क्षण अस्वस्थ हो सकता है।

'हाँ, उसे तो जिस दिन से विपिन गया उसके दूसरे ही दिन से ज्वर आ रहा है। दो तीन दिन तो जी कुछ हलका रहा पर आज फिर जोरों का ज्वर हो आया है।'

'कहाँ हैं?' सदाशिव ने पूछा!

'दक्षिण के कमरे में।' माँ ने उत्तर दिया।

सदाशिव ने अधिक कुछ नहीं पूछा और भाभी के कमरे की ओर

चला गया। दरवाजे पर पहुँच कर वह तनिक ठिठका, पुकारा—भाभी !

भीतर से निर्बल स्वर में उत्तर मिला—हाँ।

सदाशिव रुका रहा तो भाभी ने फिर पुकारा—आओ लल्ला

सदाशिव भीतर चला गया। भाभी के निकट जाकर वह खड़ा हो गया। भाभी का गोरा चेहरा ज्वर के कारण लाल हो गया था। उनकी आँखें और भी बड़ी हो रही थीं।

कोने में एक मचिया रखी हुई थी ? भाभी ने इशारा करते हुये कहा—बैठो लल्ला।

सदाशिव ने मचिया खींच ली और भाभी के निकट ही बैठ गया। उसने कहा— भाभी कैसी तबीयत है।

'अच्छी है लल्ला !'

'हाँ तभी तो तुम पड़ी हो।'

कष्ट में भी भाभी के अधरों पर मुस्कान खेल गई। वह क्षण भर एक ओर को देखती रहीं फिर बोलीं—साधारण ज्वर है।

'साधारण तो अब यह नहीं रहा। माँ कहती थीं तुम कई दिन से बीमार हो।'

'बीमार तो हूँ ? पर ऐसी कुछ बीमारी नहीं है।'

'दवा मँगाई थी।'

'व्यर्थ की बात करते हो तुम भी लल्ला मुझे ऐसा हुआ क्या है जो दवा मंगाती।'

सदाशिव कुछ क्षण के लिये सोचता रहा फिर उसने कहा—अच्छा अपनी तबीयत का हाल मुझे बता देना अभी शाम को मैं गौसपुर की ओर जाऊँगा तो वैद्य जी से दवा भी लेता आऊँगा।

गौसपुर कोई तीन मील पड़ता है। भाभी समझ गईं कि सदाशिव को वहाँ जाने का कोई प्रयोजन नहीं है। गौसपुर में ही एक वैद्य रहते हैं। उन्हीं से दवा लानी होगी। भाभी ने कृतज्ञता के साथ सदाशिव की

ओर देखा—कहा नहीं लल्ला कोई बात नहीं। और तुम्हें वहाँ जाने की आवश्यकता भी नहीं!

'पर दवा आ हो जाय तो क्या हानि है?'

'हानि तो नहीं पर जब बहुत कष्ट होगा तो तुम्हें भेजती ही।'

सदाशिव चुप हो गया। सहसा भाभी को कुछ स्मरण हो आया, उन्होंने कहा—आज मैं बीमार पड़ गई हूँ पता नहीं गाय को किसी ने चारापानी दिया या नहीं।

'देखता हूँ।' कह कर सदाशिव उठ आँगन में आया। माँ ने पूछा—चला क्या सदासिव।

'नहीं माँ आता हूँ!'

वह सार में पहुँचा! द्वार पर ही आश्चर्य के साथ वह रुक गया। देखा रामा गाय के हौदे में चारा डालने जा रही है। वह क्षण भर खड़ा देखता रहा। रामा ने चारा हौदे में डालने को किया ही था कि गाय ने मुँह फेर कर क्रोध के साथ सीगें नीची कीं। भय से रामा चीख उठी, चारा फेंक, वह पिछड़ी कि खूँटे से अटक कर गिर पड़ी। गाय ने अपनी सीगों से उसे एक ओर उछाल दिया।

पलक मारते ही यह सब हो गया। सदाशिव खड़ा का खड़ा ही रह गया।

फिर दौड़ कर उसने रामा को उठाया। भय के मारे वह काँप रही थी। गाय की सींग उसके हाथ में लगी थी। पीड़ा के मारे उसकी दशा बुरी थी। उसने सदाशिव की ओर देखा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में उस समय पीड़ा और ममता के भाव छलक आये थे। सदाशिव उन भावों को पढ़ने का प्रयत्न करता रहा।

सहसा रामा को लगा जैसे उसका शरीर शिथिल होता जा रहा है। सदाशिव उसको अपने हाथों पर सम्भाले रहा। रामा को जाने कैसा लग रहा था।

जीवन में बहुत से कार्य हम अज्ञानता की स्थिति में कर जाते हैं।

रामा को भी उस समय अपनी पीड़ा का कुछ ज्ञान न रहा। परन्तु मानव की यह स्थिति, जब मन हमारे शरीर पर अधिकार कर लेता है, अधिक समय तक नहीं रहती। रामा की भी स्थिति कुछ ऐसी ही थी। क्षण भर पश्चात् ही वह सम्भल कर खड़ी हो गई। एक आश्चर्य से उसने अपनी ओर देखा और फिर सदाशिव की ओर लज्जा से उसकी आँखें नीची हो गईं। उसी समय उसे प्रतीत हुआ कि उसकी बाँह में जोरों की पीड़ा हो रही है।

अभी तक उसने इस पीड़ा का अनुभव नहीं किया। तो क्या अभी तक यह पीड़ा नहीं हो रही थी। हो तो अवश्य रही थी पर उसे लगा जैसे वह क्षण भर आत्मविस्मृत हो उठी थी। उसने सुना है अस्पतालों में जब डाक्टर फोड़ा चीरते हैं तब उसे कोई दवा सुँघा देते हैं। तब वह जैसे पीड़ा का अनुभव ही नहीं करता। कौन सी होगी वह दवा! पीड़ा के कारण उसका हृदय तड़प उठा। उसे लगा कि यदि उसे भी वह दवा मिल जाती तो वह इस पीड़ा का अनुभव न करती जैसे अभी तक उसे इस पीड़ा का अनुभव नहीं हो रहा था।

रामा ने एक बार सदाशिव की ओर देखा और फिर वह सिर नीचा किये हुये घर की ओर चली गई। क्षण भर तक सदाशिव उसकी ओर देखता रहा। जब वह दरवाजे के भीतर चली गई तब उसने एक निश्वास खींची और गाय को चारापानी देने लगा। परन्तु उसका मस्तिष्क कहीं और था। आज का रामा का व्यवहार उसे बहुत भला लगा था। वह उसके सम्बन्ध में सोच रहा था। धीरे-धीरे उसने भी अन्दर प्रवेश किया।

आँगन में पैर धरते ही माँ ने कहा—सदाशिव देख तो रामा के हाथ में चोट लग गई है।

सदाशिव चुप रहा फिर पूछा कहाँ है?

'बहू के पास!'

वह भाभी के कमरे में चला गया। रामा भाभी की चारपाई के निकट बैठी पीड़ा से कराह रही थी। सदाशिव ने पूछा—क्यों रामा क्या बात है?

उसने कोई उत्तर न दिया। भाभी ने कहा—देखो तो लल्ला इसके हाथ में चोट आ गई है।

सदाशिव ने झुक कर उसके हाथ को अपने हाथ में लिया। उसके शरीर में बिजली सी दौड़ गई। क्षण भर वह स्तब्ध सा रहा. फिर बोला—जान पड़ता है मोच आ गई है।

'हाँ,' भाभी ने उत्तर दिया।

'तो मैं न हो झुनुआ को बुला लाऊँ। वह ठीक कर देगा।'

'हाँ लल्ला, नहीं, देखो बेचारी कितनी तड़प रही है।'

सदाशिव उठ खड़ा हुआ। झुनुआ पास वाले गाँव में रहता है। इस समय वह मिले या न मिले पर सदशिव को तो उसे खोज कर लाना ही होगा। पर इस समय वह जाने कहाँ गया होगा। सदाशिव सोच विचार करता जब उसके घर पहुँचा तो झुनुआ वैसे ही कहीं से आया था। सदाशिव ने उसे देखते ही कहा—झुन्नू भाई तनिक तुम्हें हमारे गाँव चलना होगा। विपिन भैया के यहाँ एक मेहमान आई हैं उसके हाथ में गाय ने सींग मार दी सो चोट आ गई है।

'कब!' झुनुआ ने पूछा!

'अभी थोड़ी देर पहले! विपिन भैया की घर वाली बीमार हो गई हैं। और उनकी गाय का तो हाल जानते ही हो। उसका स्वभाव देख उसे भला गाय कौन कहेगा। वह लड़की बेचारी उसे चारा देने गई थी। उसी समय गाय ने उसे मार दिया। हाथ में चोट आ गई।'

'क्या उखड़ गया क्या?'

'कह नहीं सकता भाई पर दर्द बहुत है?'

'अवश्य उखड़ गया होगा।

'हो सकता है।'

'तो तुम चलो भाई, मैं अभी आता हूँ। खाली होकर आता ही हूँ।' झुनुआ ने कहा।

पर सदाशिव को लग रहा था कि वह कितनी शीघ्र झुनुआ को लेकर रामा के पास पहुँच जाय। कितनी पीड़ा उसे हो रही होगी। उसने कहा—नहीं झुन्नू भाई तुम मेरे साथ ही चलो।

झुनुआ कुछ देर तक सोचता रहा। सदाशिव ने अनेक कठिन अवसरों पर उसका साथ दिया है। उसकी इतनी छोटी सी विनती भी वह न पूरी करे तो ठीक नहीं। उसने कहा—अच्छी बात है भाई सदाशिव, तुम्हारी आज्ञा टाली भी नहीं जा सकती। और कोई होता तो शायद आज मैं न भी जाता पर तुम्हारी बात ही दूसरी है। झुनुआ तो तुम्हारा है।

कृतज्ञता से सदाशिव का सिर झुक गया। वह झुनुआ को साथ लेकर विपिन के यहाँ आया। रामा के हाथ की पीड़ा बढ़ गई थी। झुनुआ ने देख कर कहा—कोई खास बात नहीं है। अभी ठीक हो जाता है। कुहनी की नस टल गई है।

यह कह कर झुनुआ ने अपनी कुशल हथेली रामा के हाथ पर फेरी। क्षण भर इधर उधर स्पर्श करने के पश्चात उसने हाथ को एक झटका दिया, चट की आवाज हुई और रामा ने अनुभव किया कि जैसे उसकी पीड़ा एक चीख के साथ बाहर निकल गई हो। झुनुआ ने हाथ सेंकने की विधि बताई और चला गया।

सदाशिव थोड़ी देर तक बैठा रहा फिर उठ कर चलने लगा तो उसने कहा—देखो रामा अब तुम गाय के निकट न जाना नहीं दूसरा हाथ भी तोड़ लो।

रामा के अधरों पर एक पीड़ा मय हँसी खेल गई, पर उसने कुछ उत्तर न दिया। सदाशिव को आश्चर्य हुआ। वह नहीं समझता था कि रामा कभी शाँत रह सकती है। उत्तर वह कुछ अवश्य ही देगी।

जाते जाते उसने एक बार फिर रामा की ओर देखा और फिर चुपचाप घर से बाहर चला गया। जब विपिन के घर से कुछ दूर चला गया तब उसे सहसा ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका हृदय प्रसन्नता के मारे खिल उठा है। रामा की कुछ सेवा वह कर सका है इससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसके हृदय से एक मधुर संगीत निकल पड़ा और वह उच्च स्वर से गाता हुआ घर की ओर जा रहा था।

दूसरे दिन फिर वह विपिन के यहाँ गया। भाभी को ज्वर नहीं था। वे अपने काम काज में लगी थीं। रामा अपने एक हाथ में पट्टी बाँधे हुये थी पर आज उसकी आँखों में फिर वही चंचलता थी। सदाशिव जब घर से चला था तब उसने सोचा था कि वह भाभी के पास अधिक देर तक बैठेगा, उसकी इच्छा हो रही थी कि वह रामा को देखता रहे—सदैव। पर यह भी कहीं होना सम्भव है। पर जब वह विपिन के यहाँ पहुँचा तो उसे आज विचित्र प्रकार के संकोच का अनुभव होने लगा। उसे लग रहा था कि वह उन सब के सामने अधिक समय तक नहीं बैठ पावेगा और फिर जब भाभी आकर उससे बातें करने लगीं तो रामा भी आकर बैठ गई। सदाशिव को बड़ा संकोच लग रहा था।

वे आँगन में बैठे बातें कर ही रहे थे कि बकरी का एक छोटा बच्चा आँगन में आ गया। गाँव की बात ठहरी। दरवाजा खुला ही था। उसे कौन रोकता। आँगन में आ वह आश्चर्य के साथ चलने और देखने लगा। रामा ने देखा और दौड़ कर उसने दरवाजा बन्द कर लिया। बाहर बकरी के मिमयाने की आवाज सुनाई पड़ी। आँगन में बन्दी हो गये बच्चे ने भी अपनी माँ की पुकार का उत्तर दिया।

आपनी आजादी के लिये बच्चा आँगन में इधर-उधर उछलने लगा। रामा ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया। भाभी ने कहा—क्या करती है रामा उसे जाने दे।

'कितना अच्छा लगता है।' रामा ने कहा।

'बच्चा सभी का प्यारा होता है।' भाभी ने अनुभव के बचन कहे।

सदाशिव मुस्करा रहा था। रामा बच्चे को गोद में लिये हुये भाभी के निकट आ गई। भाभी ने फिर कहा—रामा को बकरी के बच्चों से इतना स्नेह है कि रोज ही एक न एक पकड़ लाती है।

'पर यही बच्चा बड़ा हो जायगा तब इनका इतना स्नेह न पा सकेगा।' सदाशिव ने कहा।

'बड़े होने पर यह इतना सुन्दर जो नहीं रहेगा।' रामा ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

'न हो एक बच्चा तुम पाललो।' सदाशिव ने कहा।

'हाँ, यदि कोई अच्छा बच्चा मिलेगा तो अवश्य ही पाल लूँगी।'

सदाशिव कुछ देर तक सोचता रहा फिर उसने कुछ कहा नहीं। थोड़ी देर तक वह और बैठा रहा पर बातें करने की उसकी इच्छा नहीं हो रही थी। मन उसका जैसे कहीं और था। इसलिये वह उठा और चुपचाप चल पड़ा।

द्वार तक पहुँचा था कि उसे सहसा जैसे कुछ याद हो आया। उसने मुड़ कर रामा की ओर देखते हुये पूछा—तुम्हारा हाथ आज कैसा है।

'ठीक हो गया।' रामा ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया। बकरी का बच्चा अब भी उसकी गोद में था। सदाशिव उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देख रहा था।

सदाशिव बाहर आ गया। रामा भी बच्चे को लिये हुये द्वार तक आई। दरवाजे से थोड़ी दूर पर ही बकरी खड़ी थी। बच्चे को देख कर वह रामा को अत्यन्त करुण दृष्टि से ताकने लगी। सदाशिव ने बकरी की ओर देख कर कहा—बेचारी कितनी दुखी है।

रामा हँस पड़ी। उसने कहा—आपको जान पड़ता है बहुत दया आ रही है।

'दया की तो बात ही है !'

'क्यों, क्या मैं बच्चे की जान ले लूँगी !'

'जान न लोगी पर माँ का हृदय जो ठहरा ।'

रामा गंभीर हो उठी । सच तो है । माँ का हृदय ठहरा । अपने बच्चे के लिये वह सदैव ही चिन्तित रहती है । उसने बच्चे को छोड़ दिया । बच्चा अपनी माँ की ओर भाग गया ।

सदाशिव ने रामा की ओर देखा और हँस दिया । रामा क्षण भर जाती हुई उस बकरी और बच्चे को देखती रही फिर वह अन्दर चली गई ।

सदाशिव धीरे-धीरे चल रहा था । विपिन के घर से थोड़ी दूर पर ही खेत शुरू हो जाते हैं । वह खेतों की ओर चल पड़ा । उसका मस्तिष्क विचारों में लीन था । वह सोच रहा था नारी में मातृत्व की भावना कितनी सजग होती है । रामा में माँ का हृदय है, कितना प्यार वह बच्चों को करती है । बकरी का बच्चा ही तो ठहरा । उसके प्रति भी उसके हृदय में कितना प्रेम है ।

थोड़ी दूर ही वह गया होगा कि घसीटे उधर से आ रहा था । उसने सदाशिव को देखते ही कहा—राम राम भैया ।

सदाशिव ने जैसे उसकी बात सुनी नहीं ।

घसीटे को आश्चर्य हुआ वह और निकट आकर बोला—राम रामा भाई ।

चौंक कर सदाशिव ने कहा—राम राम घसीटे । कहो किधर से आ रहे हो ।

'तनिक गया था बैजू के यहाँ, सुना उसके यहाँ कुछ बुवाई के लिये बीज मिल जायगा ।

'मिला ?'

'कहाँ भैया ।'

'क्यों ?'

'बात यह है भैया कि मेरा उससे कभी व्यवहार नहीं रहा ।'

'तो इससे क्या होता है ? व्यवहार तो करने से होता है ।'

'हाँ भैया, होता तो है, पर बैजू भला कब सुनने वाला ।'

'हाँ बड़ा कठोर आदमी है ।'

सहसा सदाशिव को जैसे कुछ ध्यान आ गया । उसने कहा—घसीटे, तुम्हारे तो बकरी है न ?

'हाँ, है तो भैया ।'

'ब्यायी है ।'

'हाँ, दो बच्चे हैं, अभी पन्द्रह दिन तो हुये ही ।'

'तो एक बच्चा तुम मुझे दे दो घसीटे । मैं पालूँगा ।'

घसीटे ने आश्चर्य के साथ सदाशिव की ओर देखा । भला वह बकरी का बच्चा पाल कर क्या करेगा पर यह सदाशिव अजीब व्यक्ति है। इसे सदैव ही कुछ विचित्र बात सूझती है । हँस कर घसीटे ने कहा—भला तुम क्या करोगे सदाशिव भैया !

'बताया नहीं कि पालूँगा ।'

'भला तुम क्या पालोगे । यों तो तुम्हारी बकरी ही है, दूध खाना हो तो ले जाओ ।'

'नहीं भाई, मैं बकरी नहीं चाहता, एक बच्चा भर मुझे चाहिये । बकरी का बच्चा देखने में मुझे बड़ा प्रिय लगता है ।'

'तो ले लो भैया ।'

'कल आऊँ ?'

'हाँ, हाँ, जब तुम्हारी इच्छा हो ।'

दूसरे दिन सदाशिव बकरी का बच्चा ले आया । माँ ने देखा तो वह बहुत बिगड़ीं, कहा—सदाशिव, तुझे बैठे बैठे यही सूझता रहता है । भला यह बच्चा क्यों लाया ?

'पालूँगा माँ !

'पालेगा नहीं तो सब ? मेरे जान की एक आफत लाया है !'

'नहीं माँ, इसके लिये तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा !'

'सब देखूँगी। बाबा, तू इसे लौटा आ ?'

'पर अब तो मैंने इसे मोल ले लिया !'

'किससे ?'

'घसीटे की बकरी ने बच्चे दिये हैं न !'

'वह घसीटा, वह बड़ा ही धूर्त है। बेचना रहा होगा तो उसने तुझे फँसाया।'

माँ अधिक क्या कहती; वह जानती है कि सदाशिव का स्वभाव विचित्र है। जो मन आ जाता है वही वह करता है। यह चुप रही। सदाशिव क्षण भर सोचता रहा फिर कहा—माँ, तुम व्यर्थ परेशान होती हो। मैं किसी को दे दूँगा।

'बस तेरा यही काम है ?' कह कर माँ चली गईं !

उस दिन शाम को सदाशिव विपिन के यहाँ गया। माँ कहीं गईं थीं। भाभी घर के दूसरे खण्ड में कोई काम कर रही थीं। रामा अकेली ही बैठी थी। सदाशिव को देख कर उसने कहा—बैठो बुलाती हूँ।

'तुम रहने दो वे अपने आप ही आयेंगी !' सदाशिव ने उत्तर दिया।

रामा फिर बैठ गई। सदाशिव बात करने का कोई विषय खोज रहा था। सहसा उसने कहा—रामा, तुम्हें बकरी का बच्चा तो बहुत अच्छा लगता है।

'हाँ, क्यों ?'

'मैंने आज ही एक बकरी का बच्चा लिया है !'

'तो !'

'पर मेरी माँ उसे नहीं रखना चाहती !'

'क्यों !'

'उन्हें पसन्द नहीं है !'

'तो मैं क्या कर सकती हूँ।'

'यदि तुम चाहो तो उसे ले लो।'

'मुझे बकरी का बच्चा अच्छा लगता है पर इसका यह आशय नहीं है कि मैं बच्चे मोल लेती फिरूँ।'

सदाशिव लज्जित हो गया। रामा के हाथ बच्चा बेचने की बात तो उसने नहीं कही थी। उसने फिर कहा—मैं उसे बेचना नहीं चाहता।

'फिर?' रामा ने पूछा।

सदाशिव क्षण भर रुका फिर बोला—तुम मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर लो।

रामा जोर से हँस पड़ी। उसने कहा—तुम मुझे क्यों भेंट करना चाहते हो मेरा तुम्हारा परिचय ही कौन अधिक दिन का है।

सदाशिव कुछ उत्तर न दे सका। उसके मन में आया कि वह कह दे कि यह स्वल्प परिचय भी कुछ कम नहीं है। इतने परिचय के लिये भी तो मैं अपना समस्त जीवन दे सकता हूँ। पर कुछ कहा नहीं उसने।

रामा कुछ देर सोचती रही। सदाशिव के चेहरे पर होने वाले परिवर्तनों को देखती रही। फिर सहसा उसने कहा—अच्छी बात है मैं तुम्हारी भेंट स्वीकार कर लूँगी।

सदाशिव ने आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखा। प्रसन्नता के कारण उसका हृदय गद्गद् हो उठा। कंठ जैसे भर-सा गया। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि भाभी दूसरे खण्ड से आ गई। सदाशिव ने कुछ न कहा भाभी ने सदाशिव को देखते ही कहा—आज तो लल्ला तुम बड़े प्रसन्न दीखते हो।

यह भाभी भी मन के भाव समझने में कितनी पटु हैं। सदाशिव ने कहा—सच भाभी!

'हाँ!'

'पर मैं तो कुछ प्रसन्न नहीं हूँ।'

'क्यों झूठ बोलते हो लल्ला ?'

'झूठ कहाँ बोलता हूँ।'

'और नहीं फिर क्या तुम्हारा मुख तो आज कितना खिल रहा है।'

'तुम्हारी आँखों में मैं सदैव ही ऐसा ही दिखता हूँ भाभी।'

भाभी हँस पड़ीं। रामा अपने नयनों की कोर से सदाशिव को देख रही थी। अवश्य ही सदाशिव आज अधिक प्रसन्न है। उसने जब बकरी का बच्चा लेना अस्वीकार कर दिया था तब वह कितना दुखी दिखाई देने लगा था।

रामा ने आज पहली बार यह समझने का प्रयत्न किया कि सदाशिव को उसके लिये कुछ करने में इतनी प्रसन्नता क्यों होती है। जब उसके हाथ में गाय ने मार दिया तब वह तुरन्त ही हाथ ठीक करने वाले को बुलाने दौड़ा गया। कल उसने बकरी के बच्चे के प्रति मोह प्रदर्शित किया तो आज बकरी का बच्चा भी आ गया।' यह सदाशिव आखिर उसके लिये इतना सब कुछ क्यों करना चाहता है।

वह उठ कर चली गई भाभी से बहुत देर तक बातें होती रहीं। भाभी ने बताया कि रामा को वह अपने यहाँ कुछ दिनों तक रखना चाहती हैं। सदाशिव को यह सब सुन कर प्रसन्नता ही हुई।

दूसरे दिन जब वह विपिन के यहाँ गया तब वह अपने साथ बकरी का बच्चा भी लेता गया। रामा न दिखाई दी। भाभी ने सदाशिव को बकरी का बच्चा लिये देखा तो हँस कर बोलीं—यह क्या लिये हो लल्ला।

'बकरी का बच्चा लिया है भाभी।'

'अच्छा! यह शौक कब से हुआ ?'

'पालने के लिये सोचा है।'

'तो गोद में लिये लिये फिरते हो।'

'नहीं, मैंने सोचा रामा को यह बहुत पसन्द है तो जब तक यह

छोटा है इसे उसी के पास छोड़ दूँ ।'

भाभी हँसी; फिर गम्भीर होकर उन्होंने कहा—पर तुम्हारी इच्छा पूरी न होगी ।

'क्यों ?' सदाशिव ने आश्चर्य से पूँछा ।

'रामा कल चली जायगी ।'

'चली जायगी !'

'हाँ ।'

क्षण भर चुप रहा फिर उसने कहा—पर भाभी, तुम तो कहती थीं कि उसे यहाँ कुछ दिनों तक रखोगी ।

'पर मेरा क्या वश । उसकी माँ ने उसे बुलाने को आदमी भेजा है ।'

'क्यों ?' सदाशिव ने प्रश्न कर दिया ।

भाभी ने उत्तर दिया—बात यह है कि रामा की माँ घर में अकेली हैं । रामा के पिता कई वर्ष हुये मर चुके हैं । घर में इसके काफ़ी जायदाद है; खेती बारी है । खाने पीने से वह बड़े मजे में है । रामा की माँ इधर कई वर्ष से जब से रामा सयानी हुई इसी चिन्ता में थी कि कोई ऐसा लड़का मिल जाय जो उसके साथ ही आकर रहे । उस सारी जायदाद की स्वामिनी आखिर माँ के बाद रामा को ही तो होना है । इसी माघ में इसका विवाह करने के लिये वह बहुत उत्सुक हैं । कोई लड़का ठीक भी हो गया ।

सदाशिव को लगा जैसे उसके ऊपर बिजली गिर पड़ी हो । उसका हृदय टूक-टूक हो उठा उसकी सारी आकांक्षायें विदीर्ण हो गईं । उसके हृदय में आया कि वह तुरन्त ही उठ कर चला जाय परन्तु ऐसा वह न कर सका ।

बकरी के बच्चे को उसने धरती पर बिठा दिया । भाभी को देख कर बच्चा भयभीत सा हो उठा । सदाशिव ने उठते हुये कहा—अच्छा भाभी, बच्चे को लिये जाता हूँ, इसे यहाँ छोड़ना व्यर्थ है !

भाभी ने कोई उत्तर न दिया। सदाशिव की पीड़ा का वे अनुमान सा कर रही थीं। उन्हें चुप देख सदाशिव ने बच्चे को फिर गोद में उठा लिया और बाहर की ओर चल पड़ा।

उसके बाहर जाते ही रामा आ गई। भाभी कुछ सोचती सी बैठी थीं। रामा को लगा जैसे कोई बात अवश्य हो गई है। उसने पूछा—कैसी बैठी हो जीजी!

'यों ही, अभी सदाशिव आया था वही बैठ गई।'

'गये क्या ?'

'हाँ!'

'आज बड़ी जल्दी चले गये।'

भाभी ने कहा—तेरे लिये बकरी का बचचा लेकर आया था! मैं ने कहा कि तू कल चली जायगी तो उसने कहा कि फिर बच्चा छोड़ जाना व्यर्थ है और उठ कर चला गया।

'देर हुई।?'

'नहीं अभी ही तो गया है।'

रामा तुरन्त ही दौड़ कर दरवाजे पर पहुँची। दूर पर सदाशिव सिर नीचा किये चला जा रहा था। रामा देख कर उसकी ओर दौड़ पड़ी। निकट पहुँच कर उसने पुकारा—सदाशिव।

सदाशिव ने चौंक कर पीछे की ओर देखा। रामा उसे बुला रही है। पर क्यों? वह रुक गया। बकरी का बच्चा अब भी उसकी गोद में था। रामा निकट आ गई। वह हाफ रही थी उसने कहा—तुम यह बच्चा मेरे लिये लाये थे?

सदाशिव ने बड़ी कठिनता से कहा—हाँ।

'तो फिर लौटाये क्यों लिये जा रहे हो?'

'तुम तो कल जा रही हो?'

'तो।'

सदाशिव चिन्तित हो उठा। सचमुच उसे बच्चा लौटा नहीं लाना

चाहिये था उसने कहा—मैंने सोचा शायद तुम इसे अपने साथ न ले जा सको।

इस बात की ओर तो रामा ने अब तक ध्यान ही नहीं दिया था ? वह विचारमग्न हो गई। फिर उसने कहा—हाँ, मैं इसे नहीं ले जाऊँगी। पर······पर······

'पर······' सदाशिव ने पूछा।

'पर यह बच्चा मेरा है इसे मैं तुम्हारे पास छोड़ जा रही हूँ। जब चाहूँगी मँगा लूँगी।'

सदाशिव उसे देखता रहा उसके हृदय में अनेक बातें आ रही थीं। वह चाहता था कि वह रामा से अपने हृदय की सब कुछ बात कह दे। पर वह चुप रह जाता। बात मुँह तक आकर जैसे रुक जाती। वह रामा को देखता खड़ा रहा। रामा को सदाशिव की स्थिति समझ में आ गई उसने तुरन्त ही कहा—तुम कुछ कहना चाहते हो क्या ?

सदाशिव को बल मिला ! उसने कहा—हाँ, यदि तुम बुरा न मानो।

'नहीं, कहो।'

सदाशिव ने आँखें नीची करके कहा—तुम्हारा विवाह निश्चित हो गया है।

'यह भी कोई पूछने की बात है।' रामा ने मुस्करा कर कहा '

सदाशिव चुप रहा।

रामा ने फिर कहा—हाँ, क्यों ?

सदाशिव ने अपनी वाणी को अत्यन्त कोमल बनाकर कहा—मैं तुम से विवाह करना चाहता हूँ।

'पर मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती।' रामा ने उत्तर दिया। उसका हृदय धड़क रहा था।

सदाशिव को लगा कि वह तुरन्त ही भाग जाय पर ऐसा वह कर नहीं सकता था इसलिये उसे बाध्य होकर कहना पड़ा—क्यों ?

'हर बात का कारण नहीं होता।'

'मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।'

'यह मैं जानती हूँ पर मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती !'

'क्यों, क्या तुम किसी और से प्रेम करती हो ?' सदाशिव ने पूछा।

'नहीं।' रामा दृढ़ थी।

'फिर क्यों ?'

'मैंने कह दिया हर बात का कारण नहीं होता।' रामा ने तेज़ पड़ते हुये उत्तर दिया।

'क्या हमारा यह प्रथम प्रेम था ?' सदाशिव ने साहस के साथ पूछा।

'हाँ अब तक मुझे किसी ने प्रेम नहीं किया।'

सदाशिव चुप हो गया। थोड़ी देर तक रामा खड़ी अपने पैर के अँगूठे से धरती कुरेदती रही। फिर उसने सिर उठाया। हाथ बढ़ा कर उसने बकरी के बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया। थोड़ी देर तक वह उसके सिर पर प्रेम के साथ हाथ फेरती रही।

सदाशिव मूक सा आश्चर्य के साथ यह सब देख रहा था।

थोड़ी देर बाद रामा ने बच्चे को धरती पर खड़ा कर दिया और बोली—मेरे बच्चे को ठीक से रखना और जब मैं मंगाऊँ तब इसे भेज देना।

'अच्छा !' सदाशिव ने उत्तर दिया।

'और कुछ कहना है ?' रामा ने फिर प्रश्न किया।

सदाशिव को भला क्या कहना हो सकता है। जो कुछ कहना था उसने कह दिया परन्तु रामा को तो उसकी कोई बात सुनने का अवसर ही नहीं अब वह कह ही क्या सकता है।

उसने कहा— नहीं !

'तो अब तुम जा सकते हो ।' रामा ने कहा ।

बिना कुछ कहे हुये सदाशिव ने बच्चे को धरती पर से उठा लिया और उसे गोद में लेकर वह सिर झुकाये घर की ओर चल पड़ा । रामा थोड़ी देर तक खड़ी हुई उसे देखता रही फिर वह घर की ओर चल पड़ी ! उसके पैरों को जैसे कोई पीछे की ओर खींच रहा था । परन्तु स्त्री में अपनी प्रगति होती है जो उसे सदैव एक निश्चित पथ पर निरन्तर आगे बढ़ाती रहती है । रामा के हृदय में इस समय एक भीषण तूफ़ान उठ रहा था परन्तु अपने हृदय के इस तूफ़ान से क्षुभित लहरों की छाया वह आँखों में आने नहीं दे सकती। आँगन में पहुँचते ही भाभी ने पूछा—क्यों, सदाशिव से बच्चा लेने गई थी क्या ?

'नहीं, उन्हें धन्यवाद देने गई थी ।' रामा ने उत्तर दिया ।

'बेचारा जाने कहाँ से तेरे लिये बकरी का बच्चा लाया पर···'भाभी ने कहा ।

'मैंने उनसे माँगा थोड़े ही था ।' रामा ने उत्तर दिया ।

'इससे क्या होता है ।'

'तो धन्ययाद तो दे दिया भाई ।' रामा ने तनिक खीझ कर उत्तर दिया और भीतर चली गई ।

भाभी बैठी बड़ी देर तक बिचार करती रही । आज की यह घटना उन्हें कुछ बिचित्र सी लग रही थी । पर बात कुछ उनकी समझ में न आई ।

सदाशिव विचारों में मग्न घर पहुँचा । बच्चे को उसने आँगन में छोड़ दिया और जाकर अपनी खाट पर लेट गया । उसका समस्त संसार ही जैसे ढह गया हो । थोड़ी देर बाद जब माँ आई तो सदाशिव को लेटे देख कर उन्होंने पूछा—क्या बात है सदाशिव ?

'आज मेरी तबीयत ठीक नहीं !'

'क्यों, क्या बात है ?'

'कुछ नहीं मुझे पड़े भर रहने दो।' उसने खीझ कर उत्तर दिया।

माँ को आश्चर्य हुआ पर वे चली गईं !

५

रामा को जिस दिन से नवजीवन का संदेश मिला उसी दिन से उसमें परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा। विपिन के यहाँ से वह आई तो माँ ने उसे हृदय से लगा लिया रामा के पिता की मृत्यु के बाद से उसकी माँ ने रामा को ही अपने जीवन का एक मात्र आधार बना कर रखा है। मनुष्य के जीवन में बहुत दुःख होता है परन्तु वह समस्त दुःख को अपने में समेट कर रख लेता है। एक आधार को वह अपना लेता है और भविष्य की कोमल आशा पर ही वह अपने जीवन को अग्रसर करता रहता है यही बात रामा की माँ के लिये भी थी। पति की मृत्यु के पश्चात उसके जीवन में अंधकार व्याप्त हो गया तब उसको केवल एक प्रकार की रेखा दिखाई पड़ रही थी। इसी प्रकार की रेखा के सहारे वह अपने जीवन को अग्रसर कर रही थी।

जीवन में उसे धनाभाव नहीं था। पति ने अपने पौरुष के बल पर काफी सम्पत्ति उपार्जित की थी। समस्त सम्पत्ति को उपभोग करने वाली केवल रामा थी। रामा की माँ ने आशा की थी कि जब रामा बड़ी हो जायगी तब वह किसी ऐसे व्यक्ति से उसका विवाह कर देगी जो आकर उन्हीं के साथ रहेगा। वह जानती थी कि अपनी रामा को वह अपने से अलग नहीं रख सकती। उसे अलग रखने की बात को उसने कभी सोचा भी नहीं था। यही कारण था कि अभी तक उसे रामा के लिये कोई उपयुक्त वर नहीं मिल रहा था। सम्बन्धियों ने जाने कितने

लड़के बताये परन्तु रामा की माँ को कोई लड़का पसन्द न आता था। और आता भी कैसे किसी ऐसे वैसे लड़के के हाथ में वह अपनी रामा के भाग्य को दे भी तो नहीं सकती थी।

मोहनलाल रामा का सजातीय था। परन्तु बहुत दिन हुये वह गाँव छोड़ कर अपने बाल बच्चों को लेकर अन्यत्र चला गया था। गाँव में उनका निर्वाह होता नहीं था, अपने पास कोई जायदाद थी नहीं जिसका मोह उन्हें गाँव में रोक रखता। इसलिये मोहनलाल गाँव छोड़ कर चला गया। उस समय जयदेव की अवस्था पाँच छः वर्ष की थी। मोहनलाल को अपनी इस एक मात्र संतान पर बड़ा मोह था। वह चाहता था कि भविष्य में जयदेव को आर्थिक संकट का सामना न करना पड़े। इसलिये वह उसे सब तरह से योग्य बनाने का प्रयत्न करता रहा।

शहर में जाकर उसने छोटी सी एक दूकान कर ली थी। उससे मोहनलाल के कुटुम्ब का निर्वाह बड़े मजे में हो जाता था। वहाँ उसके एक लड़की भी हुई जिसका विवाह उसने मरने के एक वर्ष पूर्व शहर ही में कर दिया। उसके बाद उसकी एक मात्र इच्छा थी कि वह जयदेव का भी विवाह करके मुक्त हो जाय। पत्नी उसकी पहले ही मर चुकी थी। परन्तु मनुष्य जो कुछ चाहता है वह कभी पूरा नहीं हो पाता। मानव इच्छाओं का पारवार भी तो नहीं है। यदि उसकी सभी इच्छायें पूरी हो जायँ तो भी तो असम्भव है। यही नहीं, मानव की प्रगति उसकी इच्छाओं पर ही तो निर्भर है। कभी संतुष्ट न होना ही मानव जीवन का एक मात्र रहस्य है।

मोहनलाल भी अपनी अन्तिम इच्छा पूरी न कर सका और जयदेव का विवाह होने के पूर्व ही गत वर्ष हैजे के प्रकोप में उसकी मृत्यु हो गई। पिता के सम्मुख जयदेव ने कभी दूकान का काम न किया। परन्तु पिता की मृत्यु हो जाने पर उसे बाध्य होकर दूकान का काम सँभालना पड़ा।

किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक करने के लिये अनुभव अनिवार्य है। जयदेव को बराबर हानि होने लगी। उसने देखा कि वह नगर में अपना व्यापार नहीं कर सकता।

दुःख और विपत्ति के समय मनुष्य की प्रवृत्तियाँ उसे अपनी मातृभूमि की ओर खींच ले जाती हैं। जयदेव को भी अपनी मातृभूमि का स्मरण हो आया। वह अपनी अवशिष्ट सम्पत्ति को लेकर गाँव चला आया।

रामा की माँ ने जब जयदेव को देखा तो उसके हृदय की चिन्ता को जैसे एक शान्ति का आश्रय मिल गया। देखने में जयदेव अत्यन्त सुन्दर था। स्वभाव उसका बहुत हँस मुख और अच्छा था। रामा की माँ ने सोचा कि रामा के लिये वर उपयुक्त वह होगा। बिना घर बार के वह भी आश्रयहीन है। माँ उसे आश्रय दे सकेगी। मनुष्य पेड़ लगाता है, उसका पालन पोषण वह करता है और फिर उसी के आश्रय में बैठ कर वह शान्ति के दो क्षण व्यतीत करता है रामा की माँ ने भी सोचा कि जयदेव को आश्रय देकर वह स्वयं उसके आश्रय में अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सकेगी।

जयदेव के पिता का नन्दा के परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध था। जब वह वहाँ था तो दोनों एक दूसरे के सुख दुःख में सदैव ही तैयार रहते थे। जयदेव जब गाँव में आया तो नन्दा के ही यहाँ वह ठहर गया। जब तक उसका अपना घर न होगा तब तक तो उसे किसी न किसी के यहाँ ठहरना ही होगा।

जयदेव को गाँव आये हुये दो ही चार दिन हुये थे कि रामा की माँ एक दिन नन्दा के यहाँ गई। नन्दा की बहू ने उसे देखते ही लाकर टाट बिछा दिया। बोली—कहो बहिन, कैसे आई?

रामा की माँ ने बैठते हुये कहा—जयदेव अच्छा है। मेरे यहाँ नहीं गया तो मैंने सोचा लड़का है। जब इसके पिता गाँव से गये थे तब तो बेचारा छोटा था, वह गाँव में किसी को क्या जाने?

'हाँ बहिन, इसलिये तो वह जब से आया है किसी के यहाँ नहीं गया। किसी से उसका परिचय भी तो नहीं है।'

'हाँ, पर अब उसे गाँव में रहना है तो सब से परिचय हो हो जायगा।'

'होगा क्यों नहीं, बेचारे के आगे पीछे और है ही कौन?'

'बेचारे मोहनलाल बड़े अच्छे आदमी थे पर बड़े कुसमय में उनकी मृत्यु हो गई। जयदेव का ठीक ठिकाना वे लगा न सके।'

'हाँ बहिन, उनकी बड़ी इच्छा थी कि वे अपने सामने जयदेव का विवाह करके उसे काम काज में लगा देते पर भग्य की बात को कौन जानता है।'

'तो अब उसने यहाँ क्या करने को सोचा है?' रामा की माँ ने पूछा।

'करेगा क्या? उसका घर तो ढह गया है। उसी में छोटी मोटी रहने की सौर बनवा दी जायगी और कोई छोटी मोटी दूकान कर लेगा उसके और है ही कौन जिसकी चिन्ता उसे करनी है।'

'क्यों, उसकी बहू भी तो कभी घर आयेगी।' रामा की माँ ने जिज्ञासा प्रगट की।

'अभी तो वह दिन दूर है बहिन। बेचारे को कौन अपनी बेटी ब्याहेगा!'

'ब्यहेगा क्यों नहीं। लड़का बड़ा अच्छा है। मैंने तो जिस दिन से देखा है उसी दिन से मेरे मस्तिष्क में यह बात घर कर गई कि रामा के लिये इससे अच्छा वर नहीं मिल सकता।'

नन्दा की बहू ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा—अच्छा तो है रामा की माँ के भी कोई नहीं है। उसे भी ऐसे ही लड़के की आवश्यकता है पर क्या रामा की माँ सचमुच तैयार है इसका उसे विश्वास न हो रहा था।

नन्दा की बहू ने कहा—अच्छा तो है बहिन, पर तुम चाहो तब तो जयदेव का भाग्य ही खुल जाय !

'मैं तो चाहती हूँ, तुम जयदेव से पूछना।'

'पूछने की क्या ? उसे तो अब हम लोगों को अनुमत पर रहना है। मैं उससे कहूँगी। पर तुम भी सोच लेना।'

'मैंने तो सोच लिया है।' रामा की माँ ने कहा।

थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं फिर रामा की माँ चली गईं।

जयदेव उस समय कहीं गया हुआ था जब वह लौटा तो नन्दा की बहू ने उसे अपने पास बुलाया। जयदेव आकर उसके पास बैठ गया, बोला—क्या है चाची !

'बेटा, तेरे बारे में एक बात सोची है !'

'क्या ?'

'यही कि अब तेरा ब्याह कर दिया जाय तभी तू—'

जयदेव जोर से हँस पड़ा। बोला—तुम भी मजे की बात सोचती हो चाची यहाँ अपने रहने का तो ठीक ही नहीं एक औरत लाकर तुम्हारे सिर मढ़ दूँ ! है न !

'नहीं बेटा, यदि तेरे पिता जीवित होते तब तो यह चिन्ता हमें न करनी पड़ती पर अब वे रहे नहीं सो तुम्हारा हित-अहित सोचना भी तो अपना ही कर्तव्य है।'

'ठीक है चाची, पर अभी उसकी जल्दी क्या है।'

'जल्दी तो कुछ नहीं है पर लड़की बड़े मौके की मिल रही है !'

'अच्छा' हँसते हुये जयदेव ने कहा—'अभी मुझे गाँव में आये चार दिन भी न हुये और तुमने लड़की खोज ली !

'लड़की कोई खोजता नहीं। लड़की वाले स्वयं ही खोजते रहते हैं।'

'अच्छा !'

'हाँ, लड़की भी हमारे गाँव में ही मिल गई !'

'कहाँ चाची ?'

'मदन का घर तो तूने देखा है न ! उसी के बगल में जो मकान है वे बड़े मजे में हैं । माँ बेटी हैं । उन्हें भी तो ऐसा ही लड़का चाहिये जो उसके साथ रह कर उनके कार्य की देख भाल कर सके ।'

'अच्छा !

'हाँ, वह बेटा तेरे लिये बहुत ही ठीक है ।'

'चाची, तुम्हें मन के लड्डू खाना बहुत आता है ।' कह कर वह हँसने लगा ।

'आज रामा की माँ आई थीं सो उन्होंने जिक्र किया था । मैंने कहा जयदेव के पिता तो हैं नहीं इसलिये हम ही सब उसके माँ बाप हैं । हम यदि कहेंगे तो जयदेव को मनाना ही पड़ेगा !'

'तब फिर भला मुझ से पूछने की क्या जरूरत ! तुम्हें जो ठीक जँचे करना ।'

'वह तो करूँगी ही । तुमसे भी पूछ लिया ।'

हँसता हुआ जयदेव उठ खड़ा हुआ, बोला—अच्छा, इन सब बातों को छोड़ो चाची, मुझे भूख लग रही है । चलो, खाने को दो ।

नन्दा की बहू उठ कर रसोई में चली गई ।

उस दिन जब नन्दा खेत से आया तो उसकी बहू ने उससे भी राय ली । नन्दा तो इस सम्बन्ध की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । अपनी पत्नी की बुद्धि को वह सराहने लगा ।

नन्दा की बहू ने दूसरे दिन ही अपना निर्णय रामा की माँ को सुना दिया । रामा की माँ प्रसन्नता से फूल उठी । उसी दिन उसने रामा को विपिन के यहाँ से बुला लिया ।

घर आकर रामा ने अपने को स्वच्छन्द अनुभव किया । परन्तु रह रह कर उसे जाने क्यों सदाशिव का स्मरण हो आता है । अन्तिम समय की घटना को वह अपने मस्तिष्क से हटा नहीं पाती । सदाशिव

की वह निराश तथा उदास आकृति उसे जैसे सदैव खाती सी रहती है। यदि उसने सदाशिव की उस भेंट को स्वीकार कर लिया होता तो सदाशिव को कितनी प्रसन्नता हुई होती। परन्तु रामा को इसमें विश्वास नहीं। वह जानती है कि सदाशिव से उसका विवाह हो नहीं सकता इसलिये वह व्यर्थ की पीड़ा को अपनाना नहीं चाहती। प्रेम करना उसे प्रिय है परन्तु जिस प्रेम के प्रतिदान देने को सामर्थ उसमें नहीं है उसे फिर वह क्यों करे।

जयदेव के साथ रामा के विवाह की चर्चा गाँव भर में इस प्रकार फैल गई जैसे उसमें पङ्ख लगे हों। सभी के मुँह पर इस सम्बन्ध की चर्चा थी। कितनी ही नवयुवतियों ने जयदेव को देखा था। वे रामा के भाग्य से ईर्ष्या करती थीं। जयदेव सा पति उनके मन का आदर्श था। परन्तु जब रामा को यह सब ज्ञात हुआ तो उसे जाने क्यों यह सब अच्छा नहीं लगा। यह नहीं कि वह विवाह नहीं करना चाहती थी परन्तु जयदेव को बिना देखे ही जाने क्यों उसे ऐसा लग रहा था कि जयदेव के साथ विवाह करके वह सुखी नहीं रह सकता।

रामा के घर के सामने ही उनकी अमराई है। शैशव से ही रामा उसी में खेलती आई है। जिस दिन वह विपिन के यहाँ से आई उसी दिन वह शाम को अपनी अमराई में जा पहुँची। एक एक पेड़ से वह चिरपरिचित मित्र की भाँति मिल रही थी। तभी यहाँ आ गई अंजनी! अंजनी रामा की बचपन की सहेली है। दोनों अब तक साथ साथ ही खेलती हैं। कितनी ही बार अंजनी के गुड्डे से रामा ने अपनी गुड़िया का व्याह रचाया है।

अँजनी ने आते ही रामा को गले से लगा लिया, बोली—रामा, तू यहाँ से चली गई थी तो मुझे बड़ा उदास सा लग रहा था। तू तो वहाँ बड़े सुख में रही होगी न।

'हाँ रे, बड़े सुख में रही!' रामा ने देखते हुये उत्तर दिया।

सहसा अंजनी को कुछ स्मरण हो आया, उसने कहा—रामा जानती है तू तेरा ब्याह ठीक हो गया।

'तेरे गुड्डे के साथ।' कह कर रामा हँस दी।

दोनों खूब हँसी। अंजनी ने कहा—अब की मेरे गुड्डे के साथ नहीं बल्कि जयदेव के साथ।

रामा को बड़ा आश्चर्य हुआ। विवाह उसका होगा ही पर उसे आश्चर्य हो रहा था कि विवाह उसका निश्चित हुआ उसको तो कुछ पता नहीं पर अंजनी को जैसे सब कुछ मालूम है। उसने पूछा—यह जयदेव कौन है री अंजनी।

'जयदेव को तुम नहीं जानती।'

'भला मैं कैसे जान सकती हूँ।'

'हाँ, वह तेरे सामने गाँव में नहीं आया था'

'तो क्या वह गाँव का ही है?'

'हाँ, पहले उसके पिता यहीं तो रहते थे।'

'तू तो पहेलियाँ बुझाती है। बताती क्यों नहीं ठीक से!' रामा ने अंजनी के गाल पर एक चपत लगाते हुये कहा।

'बताती हूँ सब सुन! वह नन्दा के घर के बगल में जो खण्डहर पड़ा है वह किसका घर था जानती है?'

'हाँ, माँ से सुना है। मोहनलाल का है पर अब तो वह शहर में रहता है।'

'हाँ, उन्हीं का जयदेव बेटा है। रामा, उस बेचारे के कोई है नहीं। अकेला रह गया है। अब आकर यहीं रहने का निश्चय किया है।'

'उसके घर तो है नहीं, क्या उसी खण्डहर में टिका है?'

'नहीं, नन्दा के यहाँ रह रहा है पर उसे अब घर बनवाने की आवश्यकता क्या है। अब तो वह तेरे यहाँ घर जमाई बन कर रहेगा।'

'चल-चल, रहेगा जरूर! मैं ऐसे से ब्याह नहीं करती!' रामा ने कहा।

'अभी चाहे जो कह लो रानी जी, पर देखोगी तो उसके लिये पागल हो जाओगी!'

'बड़ा सुन्दर है न जो पागल हो जाऊँगी।'

'कहने से बात कोई नहीं मानता, पर अब आ ही गई हो देखोगी ही।'

'कितनों को देखा है एक इसे भी देख लूँगी।'

सहसा सदाशिव का स्मरण हो आया तो वह गम्भीर हो गई।

अंजनी ने कहा—भला रे मैंने तो समझा था कि तू अभी वह सब जानती ही नहीं। जान पड़ता है किसी से आँखें लग गई हैं।

'इसमें आँख लगने की क्या बात?' रामा ने तनिक क्रुद्ध होकर पूछा।

अंजनी ने रामा के कन्धे पर हाथ रख कर बड़े प्रेम से कहा—सच बता रामा तू ने किसी को प्रेम किया है?

'धत्, तुझे बस ऐसी ही बात सूझती है। प्रेम, प्रेम, और भी कोई बात तेरे है।'

'और बात भला क्या होगी। तू तो बता!'

'मैं क्या बताऊँ? कोई तेरी तरह मैं प्रेम करती फिरती हूँ क्या?'

अंजनी चुप होने वाली न थी। प्रेम की बात करने में उसे बड़ा आनन्द आता है। उसने कहा—सब से कहाँ प्रेम करती फिरती हूँ! मैंने तो एक से प्रेम किया तो सदा उसी से प्रेम करती रहूँगी।

रामा सहसा हँस पड़ी। उसने आँचल में अपना मुँह छिपा लिया। अंजनी ने रामा को अपनी बातों में भर लिया, बोली—रामा तू हँसती है मेरी बातों पर!

'तेरी बात पर नहीं हँसती।'

'फिर?'

'ऐसे ही एक बात याद आ गई।' रामा ने मुस्करा कर कहा।

'क्या ?'

'तुम प्रेम किसे कहती हो।' रामा ने पूछा।

'यह भी कोई बताने की बात है रानी ! यह तो जब किसी से प्रेम हो जायगा तो अपने आप पता लग जायगा।'

रामा ने कहा—सदाशिव कहता था कि जब दो प्राणी एक दूसरे से मिल जाते हैं तब उसी को प्रेम कहते हैं।

हो हो करके अंजनी हँस पड़ी। बड़ा भोला होगा कहने वाला।

उसने पूछा—यह सदाशिव कौन है ?

'मैं जहाँ गई थी उन्हीं के यहाँ वह आता था। बेचारा बड़ा भोला है।'

'अच्छा तो जान पड़ता है उसी से प्रेम हो गया है।,

'तू तो है पगली, प्रेम हो गया ! प्रेम हो गया ! ऐसे भी कहीं प्रेम होता है।'

'क्यों सच सच कहना क्या वह तुझे प्रेम नहीं करता ?'

'करता हो या न करता हो यह मैं क्या जानू।' रामा ने उदासीनता से उत्तर दिया।

'मुझसे न छिपाओ रानी, मैं सब समझ गई। तुझे सब बातें सच सच कहनी होगी।'

रामा अंजनी के गाल पर एक हलकी सी चपत लगाते हुये बोली—जब कुछ बात हो तो बताऊँ। बस दो एक बार मिल लेना ही तो प्रेम नहीं होता है।

'तो बताती क्यों नहीं।'

'उसने मुझसे कभी बात नहीं की। जब मैं आने लगी तब उसने अवश्य मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया। पूरा मूर्ख है बात करने का भी तो ढङ्ग उसे नहीं मालूम !'

रामा ने सदाशिव के सम्बन्ध की सारी बातें कह सुनाईं।

अंजनी ने गम्भीर होकर कहा—रामा तू भूल कर रही है। तेरा वही सच्चा प्रेमी है उसे फेंक करै तू दूसरे से विवाह करेगी तो यह भारी भूल होगी।

'जैसे मेरे ही हाथ में तो विवाह करना न करना है।' रामा ने कहा। उसके करने में विवशता की करुणा थी। नारी कितनी विवश है। अपने जीवन का साथी भी तो वह अपनी इच्छा से नहीं चुन पाती स्त्री की यही विवशता उसका इतिहास बन कर रहती है।

रामा के अन्तर की यह करुणा अंजनी ने जैसे समझ ली। उसने कहा—रामा, यही तो हमारी विवशता है। हम अपनी इच्छा से किसी को प्रेम भी नहीं कर सकतीं। मुझको ही देखो कितनो की उँगलियाँ मुझ पर उठती हैं पर मैं हूँ कि सब कुछ सहती रहती हूँ।

'अंजनी' रामा ने कहा—'मैंने किसी को प्रेम नहीं किया और न यही समझती हूँ कि मैं सदाशिव को प्रेम करती हूँ पर जाने क्यों उसका ध्यान आते ही मेरे हृदय में एक सरलता सा बहने लगती है।'

रामा और भी कुछ कहने जा रही थी कि सहसा अंजनी जैसे साव-धान हो गई। उसने रामा का हाथ अपनी हथेली में लेकर चुपके से दबा दिया। रामा चौंक उठी। उसने देखा बाग के किनारे जो पग-दण्डी पड़ी हुई है उसी से एक युवक चला जा रहा है सफेद कमीज़ पहने था। पतले किनारे की अधिक लम्बी धोती पहने था। गोरा सुडौल सा चेहरा; आँखों में यौवन का आकर्षण था। उसने एक बार आँख उठा कर उनकी ओर देखा फिर अपने मार्ग पर चलने लगा। ऐसा जान पड़ता था जैसे उसने उनको देखा ही नहीं।

जब वह दूर चला गया तब भी रामा उसी की ओर देखती रही। अंजनी ने चुटकी ली—जान पड़ता है तेरा हृदय भी तेरे पास से चला गया।

'चुप!' रामा ने अंजनी की बाँह में चिकोटी काट ली।

अंजनी ने कहा—यही है वह।

'कौन ?' रामा के मुँह से प्रश्न निकल गया।

'तेरा मंगेतर! जयदेव।

रामा चुप हो गई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने मन में अनेक प्रकार की बातें सोचती रही। आदमी देखने सुनने में तो सुन्दर जान पड़ता है पर शायद उसे अपने सौन्दर्य का गर्व है। इसे देख कर उसने अपनी आँखें कैसे फेर लीं जैसे किसी को देखा ही नहीं। ऐसे ऐसे जाने कितने आते जाते रहते हैं। रामा को प्रतीत हुआ जैसे यह उसकी पराजय है। अपनी पराजय रामा को कभी स्वीकार नहीं। उसने जीवन में एक ही बात सीखी है। किसी भी पुरुष के सम्मुख वह हीन दीन सी होकर नहीं रह सकती। उसे जब अपने ऊपर इतना गर्व है तो फिर वह उसे प्रेम क्या करेगा। मान लो इसके साथ रामा का विवाह हो जाय तो क्या वह उसका समस्त प्रेम प्राप्त कर सकेगी। कदापि नहीं। वह पति ऐसा नहीं चाहती जो स्वाभिमानी हो उसे तो ऐसा पति चाहिये जो उसका दास होकर रहे उसके इंगत पर अपना सरवस निछावर करने को तैयार रहे और यह जयदेव! बस अधिक सोच न सकी। अँजनी ने उसकी विचार धारा को छिन्न भिन्न कर दिया। अंजनी चली गई तो वह घर में आकर अपने कमरे में जाकर बैठी और जयदेव के सम्बन्ध में तर्क वितर्क करने लगी।

रामा के हृदय में जो यह विचार घुन की भाँति लगा तो फिर वह उससे अपने को मुक्त न कर पा रही थी दूसरे दिन वह अपने विचारों में ही उलझी रही। दोपहर को अंजनी आई तो उसने कह दिया उसकी तबीयत ठीक नहीं। अंजनी चली गई माँ ने कई बार उसे अपने पास बुलाया पर हर बार कोई न कोई बहाना बताकर अपने कमरे में ही बैठी रही।

शाम आई तो उसका जी अधिक उचटा-उचटा सा हो रहा था। उसने कपड़े पहने और बाहर निकल पड़ी। उसने सोचा उसे दो दिन

गाँव आये हुये हुआ पर अभी तक वह किसी के यहाँ गई नहीं। इस समय वह मिलने मिलाने के लिये निकल पड़ी।

परन्तु घर से बाहर निकलने पर उसने सोचा कि वह एकान्त चाहती है। सो किसी के यहाँ मिलने न जाकर वह बाहर की ओर चल पड़ी। अपने विचारों में वह उस समय इतनी लीन थी कि उसे इस बात का अनुभव भी न था कि वह किस ओर चली जा रही है। मेड़ का सिरा आ गया। यहाँ से हरे भरे खेत प्रारम्भ होते हैं। खेतों के बीच में आकर वह क्षण भर को रुक गई। तभी एक ओर से आ निकला जयदेव। उसने रामा को देखा, पास ही आकर वह ठहर गया।

रामा ने आखें उठाकर देखा। जयदेव पास खड़ा मुस्करा रहा था। उसने कहा—मैं इस गाँव में नया ही नया आया हूँ पर यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य ने तो मुझे जैसे मुग्ध कर लिया है।

रामा को जयदेव की बात बुरी लगी। किसी को मार्ग में रोक कर बिना पूर्व परिचय के बातें करना उसे कुछ अच्छा न लगता। बिना कुछ उत्तर दिये वह एक ओर को जाने लगी तो जयदेव ने कहा—आपने शायद मेरी बात बुरी मान ली।

'नहीं, पर व्यर्थ की बात करने से लाभ।' रामा ने उत्तर दिया।

'आप इसे व्यर्थ की बात कह सकती हैं। पर मैं इस गाँव के लोगों से अपरिचित हूँ परिचय करने का और उपाय ही क्या है।' जयदेव ने कहा।

'और यदि परिचय न प्राप्त करेंगे तो क्या हानि है?'

'हानि कुछ नहीं है परन्तु मनुष्य जहाँ रहता है वहाँ परस्पर परिचय प्राप्त करना भी आवश्यक होता है।'

रामा को इस बात का कोई उत्तर न सूझ पड़ा। वह चुप रह गई। जयदेव ने फिर कहा—मैं आप का परिचय प्राप्त कर सकता हूँ!

रामा ने सोचा व्यर्थ में बात बढ़ाना ठीक नहीं। उसने अपना परिचय बता दिया तो जयदेव ने कहा—आप से मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता था कि आपसे कुछ देर बातें करने का अवसर प्राप्त होता।

'अवकाश होने पर मैं आपको कहला दूँगी।' रामा ने व्यंग किया!

जयदेव का मुख उदास हो गया। उसने कहा—शायद मैंने आकर आपकी विचार धारा को भंग कर दिया है इसलिये आप मुझ पर रुष्ट हैं। अच्छी बात है जाता हूँ पर मुझे आशा है भविष्य में जब हम मिलेंगे तब आप इतनी रुष्ट न होंगी।

पहली बार जयदेव को देखकर उसके सम्बन्ध में रामा ने जो धारणा बना ली थी वह और भी पक्की हो गई। जयदेव चला गया तो वह आगे बढ़ गई।

खेत की मेड़ पर खिलखिल का एक छोटा सा पेड़ है। रामा उसके नीचे बैठा गई। चारों ओर हरियाली का बिस्तार है। प्रकृति के इस मनोमोहक दृश्य से उसे संगीत की प्रेरणा प्राप्त हो रही थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे प्रकृति का एक एक कण गा रहा हो।

मनुष्य के अन्तर में जो अनुभूति होती है उसी का प्रतिबिम्ब वह सृष्टि में देखता है। रामा के अन्तर में जो मनोगत अनुभूति उत्पन्न हो रही थी उसी को वह प्रकृति में पा रही थी। मन में उसके जो एक वेदना उसे खा सी रही थी उसे वह भूल गई और प्रकृति के मनोरम दृश्यों में जैसे वह भूल सी गई। उसने एक बार चारों ओर देखा फिर सहसा उसकी इच्छा गाने की हुई। उसके मधुर कण्ठ से स्वर लहरी फूट पड़ी।

उसने अपना गीत समाप्त ही किया था कि उसे दूसरे किसी के गाने की स्वर लहरी सुनाई दी। कोई बड़े ही मधुर स्वर में एक करुण गीत गा रहा था। संगीत की स्वर लहरी निस्तब्ध प्रकृति के पथस्थल

पर फैल कर एक अजीब समा उपस्थित कर रही थी। रामा विमुग्ध सी उस गीत को सुनती रही। जब वह संगीत समाप्त हो गया तब उसने एक निश्वास खींची। कितना सुन्दर और करुण गीत था। गाने वाले के हृदय में जैसे वेदना का समुद्र लहरें ले रहा था। अजीब आकर्षण था। उसे लगा कि वह बैठी घण्टों तक उस संगीत को सुनती रहे परन्तु गाने वाले ने अपना संगीत बन्द कर दिया था।

परन्तु इतना मधुर गा कौन रहा था। स्वर से यह प्रत्यक्ष था कि गाने वाला गाँव का नहीं हो सकता। और इतना ही नहीं उसे जैसे संगीत की कला का पूर्ण ज्ञान हो।

थोड़ी देर तक वह उसी प्रकार बैठी रही परन्तु जब उस अज्ञात गायन के कंठ से दूसरा गीत न फूटा तब उसने फिर अपना गीत प्रारम्भ किया। इस बार वह अधिक भावुक हो गई थी, उसका स्वर काँप रहा था। उसे लग रहा था जैसे वह किसी परीक्षक के सम्मुख गा रही हो परन्तु वह जानती है कि इस स्तब्ध प्रकृति के वातावरण में उसके संगीत को सुनने वाला कोई नहीं है।

उसके मस्तक पर श्रम कण चमक आये थे। गीत समाप्त कर उसने आँचल से पसीने की बूँदे पोंछ लीं। अपने मुँह पर से वह कपड़ा उठा भी न पाई थी कि किसी ने कहा आप तो बहुत अच्छा गाती हैं।

रामा ने सिर उठा कर देखा। सामने जयदेव खड़ा था।

रामा को कुछ अजीब सा लगा। तो यह अभी तक गये नहीं। जान पड़ता है यहीं कहीं यह बैठे थे और मेरा गीत सुनकर मेरी प्रशंसा करने के लिये यहाँ आकर सोचा होगा परिचय करने का यह अच्छा उपाय है। कितना बना हुआ यह व्यक्ति है। उसने उत्तर में मुँह बना लिया। जैसे अपनी प्रशंसा सुनकर उसे कुछ भी प्रसन्नता न हुई हो।

जयदेव ने फिर कहा—इतना अच्छा गाते मैंने पहले किसी को नहीं सुना था।

'आपने पहले भी कभी किसी को गाते सुना था इसमें मुझे सन्देह है।' रामा ने कहना चाहा। पर बात मुँह तक आते आते रुक गई।

उसे सहसा ऐसा लगा कि जिस मधुर संगीत को सुनकर वह अभी क्षण भर पहले विमुग्ध हो गई थी उसका गाने वाला शायद जयदेव ही था। उसने कहा—पर आप तो मुझसे भी अच्छा गा लेते हैं।

जयदेव ने बात छिपाई नहीं बोला—हाँ, गा लेता हूँ। अच्छा या बुरा यह तो मैं नहीं कह सकता।

रामा को जयदेव के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो रही थी। उसने कहा—अभी आपने जो गीत गाया था वह तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा।

'सच ! तो क्या आप मेरा गीत सुन रही थीं।' जयदेव ने आश्चर्य के साथ पूछा।

'हाँ !' रामा ने उत्तर दिया।

'आप को मेरा गीत पसन्द आया ?' जयदेव ने पूछा।

'बहुत !' रामा ने उत्तर दिया।

'यदि आप कहें तो मैं और भी गीत आपको सुना सकता हूँ।'

'सुनाइये।

जयदेव थोड़ी दूर पर बैठ गया। इस बार उसने जो गीत गाया वह अत्यन्त मधुर था। रामा सुनते-सुनते जैसे अपने को भूल गई।

गीत जब समाप्त हो गया तब भी वह जयदेव की ओर अपलक देख रही थी। थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ी हुई, बोली—बहुत देर हो गई, अब चलना चाहिये।

जयदेव भी उठ खड़ा हुआ। दोनों गाँव की ओर चल पड़े। मार्ग में रामा एक शब्द भी न बोली। मेड़ को पार करके वे बस्ती की सीमा पर पहुँच गये। यहाँ से दोनों का मार्ग पृथक होता था। जयदेव ने कहा—आप कल मिलेंगी ?

रामा जल्दी में कुछ निश्चय न कर सकी, उसने कहा—हाँ !

'कहाँ।'

'वहीं!' और वह मुड़ कर घर की ओर चल दी।

उस दिन रामा को एक नये जीवन का अनुभव हो रहा था।

६

दूसरे दिन, दिन भर रामा का मन उचटा सा रहा। प्रातः उठते ही माँ ने उससे कहा—रामा आज मुझे तनिक नन्दा के यहाँ जाना है; खाना आज तू बना लेना।

रामा को माँ की यह बात अच्छी न लगी। आज उसका मन यों ही नहीं लग रहा था ऊपर से खाना बनाने की बात सुन कर वह खिन्न हो गई। उसने माँ की ओर एक बार देखा फिर बोली—माँ अभी दिन होते ही तुम्हें कहीं जाने की जरूरत ऐसी क्या आ गई।

'तू तो चाहती है कि मुझे खाना न बनाना पड़े।'

रामा हँस दी। माँ ने प्यार के साथ कहा—पति के घर जायगी और खाना बनाना भी न सीखे रहेगी तो कोई पूछेगा भी नहीं।

'मैं भला तुम्हें छोड़ कर जाने कब लगी।'

माँ को बड़ी हँसी लगी। यह रामा भी बड़ी भोली है। इतनी बड़ी हो गई पर समझ इसे कुछ भी नहीं है। दिन भर यह सखियों के साथ खेलती रहती है। खाना बनाना और घर के सारे काम भी माँ के ऊपर हैं। माँ ने उसे इतने प्यार से पाला है कि कभी भी उसे अपनी आँखों से ओट नहीं करती और न उसे कोई काम ही छूने देती है। माँ ने सोचा इसीलिये तो वह अपनी रामा को किसी के यहाँ भेजना नहीं चाहती। वह तो ऐसा लड़का चाहती है जो उसके ही घर में रहे और उसकी रामा अपने पति की दासी होकर नहीं रानी होकर रहे।

माँ ने कहा -- आखिर कब तक तू इसी तरह खेलती रहेगी। खेलने की अवस्था अब तेरी जाती रही।

'अभी ही मैं इतनी बड़ी हो गई क्या ?'

'तू अपने को बड़ी न समझ पर दुनिया तो समझती है।'

'समझती होगी; दुनिया से मुझे क्या मतलब ?'

'फिर किससे है।'

'मुझे तो तुम से है।'

माँ चुप हो गईं। फिर थोड़ी देर बाद बोलीं---रामा, बेटी अब तू बाहर दिन भर न खेलती रहा कर। कुछ काम-काज सीख।

'अच्छा सीखूँगी पर अभी जल्दी क्या है।'

'अब तेरा ब्याह जो होगा।' माँ ने हँस कर कहा।'

लज्जा की लाली रामा के गालों पर फैल गई। उस समय उसके मुख की शोभा विचित्र हो गई थी। रामा चुप रहा। माँ ने फिर कहा—

'अच्छा, मैं जाती हूँ। खाना बना लेना या रहने देना मैं आऊँगी तभी बनाऊँगी।'

माँ चली गईं।'

रामा घर में अकेली रह गई तो वह अपने मन में सोचने लगी। उसका हृदय स्पन्दन कर रहा था। वह अपने मन में सोच रही थी अब उसका विवाह अवश्य होगा। उसकी सभी सखियों का विवाह हो गया है। गाँव में उसकी अकेली सखी अंजनी रह गई है। उसका विवाह अभी नहीं हुआ है। और वह विवाह करना भी नहीं चाहती। माता-पिता ने उसका विवाह करना चाहा था पर उसने सदैव ही कोई न कोई बाधा उपस्थित कर दी। गाँव वाले तो यहाँ तक कहते हैं कि वह अपने प्रेमी के साथ एक दिन अवश्य ही माँ बाप के मुँह में कालिख लगा कर भाग जायगी। यह गाँव का समाज भी क्या होता है ? जब देखो किसी न किसी की बदनामी करना ही उसका उद्देश्य होता

है; जहाँ किसी की लड़की का विवाह होने में विलम्ब हुआ कि चारों ओर से उस पर उँगलियाँ उठने लगीं। बेचारे का रहना दुष्कर हो जाता है।

रामा ने जीवन में किसी से प्यार नहीं किया; प्यार करना भी उसे ज्ञात नहीं है। सदाशिव से जब उसका परिचय हुआ था तब उसने अपने मन में यह नहीं सोचा था कि वह उसे प्यार करता है। पर सदाशिव उसे प्यार करता अवश्य है। सदाशिव की बात सोचने में उसे कुछ आनन्द सा आता है। वह चाहती है कि वह सदाशिव की ही बात सोचती रहे। बहुधा वह अपने में एक अभाव का अनुभव करने लगती है। वह उस अभाव को पहचान नहीं पाती पर वह अभाव उसके जीवन में बस कर रहता है। वह चाहती है कि वह सदाशिव को भूल जाय पर वह भूल पाती नहीं। जब उसे यह नहीं ज्ञात था कि सदाशिव उसे प्रेम करता है तभी यदि वह चली आई होती तो वह सदाशिव को अवश्य ही भूल जाती पर अन्तिम समय सदाशिव ने उससे व्यर्थ ही तो प्रेम की बात की।

आँगन में एक खाट पड़ी थी। उसी पर लेटी हुई वह अपने विचारों के प्रवाह में बह रही थी। धूप उतरती हुई आँगन में धीरे-धीरे बढ़ रही थी। थोड़ी देर बाद उसके सिर पर धूप छा गई। उसे गर्मी लगी तब वह उठ खड़ी हुई। अरे, इतना दिन चढ़ आया और उसे इसका पता भी नहीं लग सका। कितनी देर हो गई और अभी उसे खाना भी तो बनाना है। माँ आयेगी तो क्या कहेगी।

उसने एक निश्वास ली और नहाने-धोने के लिये कुएं की ओर चली। उसका मन कहीं और विचरण कर रहा था पर मनुष्य का शरीर इच्छाओं के विरुद्ध भी कभी-कभी कार्य करता है।

पनघट पर काफी भीड़ थी। गाँव के इस भाग में यही एक पक्का कुआँ है। रामा के पिता ने इस कुये को उस वर्ष की अनावृष्टि में बनवाया था। उस वर्ष इतना कम पानी बरसा था कि सारी फसल

नष्ट हो गई थी। गाँव में दो चार जो अधपक्के कुएँ थे उनका पानी कीचड़ हो गया था और गाँव में पानी के लिये एक भी कुआ न रह गया था। सेठ भैरोसिंह के कुयें में काफी पानी था पर खारा था। जब गाँव वालों को कहीं और पानी न मिलने लगा तब उन्हें इसी कुएँ का पानी पीने के लिये बाध्य होना पड़ा।

एक दिन रामा की माँ ने कहा—पानी की तो अब इस गाँव में बड़ी तकलीफ हो रही है। कैसे काम चलेगा। यह खारा पानी पीने को तो जी नहीं चाहता।

रामा के पिता पत्नी को बहुत चाहते थे। उन्होंने उसी दिन निश्चय कर लिया कि वे एक कुआ अवश्य बनवायेंगे। सम्पत्ति का अभाव उनके पास था नहीं। उन्होंने दूसरे ही दिन अपना निश्चय रमई काका को कह सुनाया। गाँव के वे ही सब से अधिक वृद्ध थे। इसलिये उनकी राय आवश्यक थी। रमई काका को यह बात पसन्द आई और रामा के पिता के घर से थोड़ी दूर पर ही कुएँ के लिये स्थान चुना गया।

अच्छी सायत में रामा के पिता ने कुएँ में काम लगवा दिया। उनके पुण्य का प्रताप था कि इस कुएँ का पानी गाँव भर से अच्छा था इसलिये इस पर बड़ी भीड़ रहती थी।

रामा ने अपनी रस्सी और गगरा लाकर पनघट पर रख दिया और जगत पर बैठ गई।

पड़ोस के गनेश की बहू पानी भर रही थी। अभी उसे व्याह कर आये थोड़े ही दिन हुये हैं इसलिये घूँघट काढ़े हुये थी। रामा ने उसे देख कर मुस्कराते हुये कहा—भाभी न हो लाओ तुम्हारा डोल मैं खींच दूँ।

भाभी ने घूँघट की ओट से एक बार रामा की ओर देखा और कहा—रामा, अरे तुम आज अभी ही आ गई। इतनी जल्दी।

'मेरे कौन काम रखा है। मन में आया आ गई।'

रमेश्वरी अपना भरा हुआ घड़ा उठाने जा रही थी। सिर पर कपड़े को लपेट कर रखते हुये उसने कहा—इसीलिये तो और भी आश्चर्य है।

'तुझे तो मेरी हर बात से ही आश्चर्य होता है।'

'नहीं बता भला इतनी जल्दी तू कब पनघट पर आती।'

'आज माँ नहीं हैं।'

'कहाँ गईं।'

'पता नहीं, पर कह गई हैं खाना बना लेना।'

'तो यह कह तुझे भी आज हम सब की ही तरह रसोईं में जाना है।'

'हाँ।'

'तब ठीक! बहू तू अपना डोल जल्दी निकाल।'

गनेश की बहू ने रामेश्वरी की ओर देखा।

रामेश्वरी ने कहा—आज हमारी रानी जी को खाना बनाना है उन्हें जल्दी नहाने दे।'

गनेश की बहू अपना डोल पानी में डुबा रही थी बोली—ऐसी जल्दी हो तो में पानी खींच कर नहला सकती हूँ।

रामा हँसने लगी।

'तुम क्या मुझे पानी खींच कर नहला सकोगी। एक डोल पानी तो खींचा नहीं जाता!' रामा ने कहा।

'अभी तुम से तो अधिक ही खींच सकती हूँ!'

रामा उठ कर पास आ गई। रस्सी हाथ में पकड़ उसने गनेश की बहू के घूँघट से ढके गाल को छू दिया और कहा—लाओ मैं तुम्हारा डोल निकलवा दूँ।

दोनों डोल खींचने लगीं। जब डोल बाहर आ गया तब गनेश की बहू ने कहा—लाओ रामा अब तुम्हारा भी गगरा भरा दूँ।

'नहीं नहीं, रहने दो तुम जाओ।'

'जाऊँ क्यों लाओ खिंचा दूँ।'

'जाओ देर होगी तो गनेश भैया तुम्हारी खबर लेने लगेंगे।' रामा ने हँस कर कहा।

'तुम्हारे भैया मेरी क्या खबर लेंगे।'

'क्यों, क्या कभी कुछ कहते नहीं।'

'मुझे कुछ कहने की उनकी हिम्मत कहाँ।'

सब हँस पड़ीं। दयावंती ने कहा—तेरा मर्द तो तेरी लुनाई का गुलाम है।

गनेश की बहू साँवली जरूर है पर चेहरे की गढ़न बड़ी ही सुन्दर है। इसीलिये दयावन्ती ने 'लुनाई' कहा।

गनेश की बहू मुस्करा उठी। उसके अधरों पर मुस्कान की जो रेखा खिंच गई वह बड़ी आकर्षक थी। रामा ने कहा—भाभी जब हँसती हो जैसे फूल झड़ता है।

'अब तुम सब मेरा ही परिहास बनाने लगीं।'

'परिहास की बात यह नहीं है भाभी।'

गनेश की बहू ने कुछ उत्तर न दिया। दयावन्ती ने फिर कहा—सच ही तो है। न हो तू गनेश से पूछ देखना!

'उनको तो मेरी हँसी अच्छी नहीं लगती पूछूँगी क्या?'

'क्यों दोष देती है बेचारा इतना तो तुझे प्यार करता है कि क्या कोई भी किसी स्त्री को करेगा।'

रामा गम्भीर हो गई। वह सोच रही थी क्या उसका पति भी उसे इतना ही प्यार नहीं करेगा। क्यों न करेगा। गनेश की बहू से तो वह कहीं अधिक सुन्दर है। कोई भी पुरुष उसका पति क्यों न हो पर वह उसे प्यार अवश्य करेगा······पर सब पुरुष भी तो गनेश की तरह नहीं होते। हो सकता है कि उसका पति उसे इतना प्यार न करे तो

उसका जीवन कितना दुर्वह हो जायगा। बिना प्यार पाये वह कैसे जीवित रहेगी।

माँ उसका विवाह जयदेव से करना चाहती है। तो क्या जयदेव उसे इतना ही प्यार कर सकेगा। वह विचार मग्न हो गई। गनेश की बहू ने रामा की गम्भीरता को जान लिया। उसे जैसे रामा के मन का भाव भी ज्ञात हो गया हो। उसने कहा—रामा दीदी तुम व्यर्थ ही चिन्तित हो रही हो।

रामा चौंक उठी। उसने कहा—चिन्तित किस लिये हो रही हूँ।

'जैसे मैं कुछ जानती ही नहीं।'

'क्या जानती हो।'

'यही जिस लिये तुम चिन्तित हो रही हो।'

रामा हँस पड़ी—'किस लिये।'

'सोच रही होगी कि जयदेव भी तुम्हें इतना ही प्यार करेगा कि नहीं।'

'धत्! भाभी तुम बहुत बुरी हो।'

गनेश की बहू ने रामा का दुपट्टा पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया और कहा—अब चाहे बुरी कहो या भली पर बात यही है।

'तुम्हारी समझ की बलिहारी।' रामा ने कहा।

'अच्छा सच बताओ दीदी क्या यह ग़लत है।'

'ग़लत नहीं फिर क्या? मैं तो किसी को जानती भी नहीं।'

'काहे को जानोगी।'

रामा चुप हो गई। उसने कुछ उत्तर न दिया। भाभी हँसती रही। दयावन्ती अपना घड़ा लेकर चली गई थी। गनेश की बहू ने भी एक हाथ में डोल लटका कर दूसरे हाथ में रस्सी ली और चल पड़ी।

रामा ने पूछा—अब न आओगी क्या भाभी।

'नहीं अब तो मैं पानी भर चुकी।'

रामा चुप रही। भाभी ने फिर कहा - तुम कहो तो आऊँ।

'नहीं किसी को कष्ट देना मैं नहीं चाहती।'

गनेश की बहू घूँघट के भीतर मुस्कराती हुई चल पड़ी। उसकी गति में यौवन छलक रहा था। रामा उसे क्षण भर देखती रही। भाभी बड़ी हँसमुख है। जब तक रहती है तब तक हँसती-हँसाती ही रहती है।

थोड़ी देर तक रामा अपने गागरे के पास बैठी रही। फिर जब घाट खाली हो गया तब उसने अपना गागरा भरा और पनघट के एक ओर लाकर रख दिया। पहनने के लिये वह एक धोती लाई थी। लाल रंग का चौड़ा किनारा था। धोती उसने पहले घाट के एक ओर रख दी थी। फिर उसे उठा कर अपने पास रख लिया और बैठ गई।

तब उसे सहसा ध्यान आया कि नहाने के लिये वह लोटा तो लाई ही नहीं। अजीब उसकी सुध भी है। वह सोच रही थी कि घर जाकर वह लोटा ले आये। अंजनी इतने में आ गई। वह भी नहाने आई थी लोटा डोल और कंधे पर धोती रखे हुये।

अंजनी को देखते ही रामा खिल उठी। उसने कहा—अंजनी तू भी आ गई चल अच्छा ही हुआ।

'क्यों?'

'मैं नहाने के लिये तो आई पर लोटा भूल आई थी।'

'चल तो मैं लोटा लाई हूँ।'

'हाँ, यहाँ यह सब इतनी हैं पर लोटा किसी के पास नहीं है।'

'तो कोई हम सब लोटा लेकर आती हैं।' रामगुलाम की बहू ने हँस कर कहा।

'नहीं बहिना, तुम्हें भला लोटा लाने की आवश्यकता क्या। तुम तो ऐसे ही प्रेम रस में नहाई रहती हो।'

सब की सब हँस पड़ीं। रामा ने कहा—हँसी छोड़ अंजनी इधर ला अपना लोटा।

पर अंजनी दूर खड़ी हँसती रही। रामा ने कहा—ला अंजनी मुझे देर हो रही है।

'देर कहाँ के लिये हो रही है।'

'घर के लिये।'

'घर में तेरी बाट जोहता कौन बैठा है रे! माँ भी तो नहीं हैं।'

'हाँ पर तुझे कैसे पता चल गया।।'

'जैसे मुझे कुछ पता ही नहीं रहता।'

'यह तो मैंने नहीं कहा कि तुझे पता नहीं रहता।'

'कहोगी कैसे! मैं सब जानती हूँ।'

'अच्छा बता माँ कहाँ गई हैं।'

'बता दूँ।

'हाँ बता।'

'नन्दा के यहाँ, तेरे ब्याह के बारे में बातें करने।'

'धत् दुष्टा!'

'सच बात कहने पर दुष्टा बनाती हो।'

पनघट पर खड़ी सभी स्त्रियाँ एक बार रामा की ओर देखने लगीं। रामा सकुचा सी गई। अंजनी ने कहा—आज कल रामा के बड़े ठाठ हैं। जयदेव को जब से देखा है तब से इसके मुँह पर चमक आ गई है।

'चल चल बहुत शैतानी करेगी तो मुँह तोड़ दूँगी'

इतने में ही गनेश की बहू फिर डोल रस्सी लिये आगई। अंजनी ने दौड़ कर उसकी दोनों बाहें पकड़ लीं और उससे कहा—भाभी एक बात का तुम्हीं फैसला कर दो।

'क्या!' गनेश की बहू ने रुक कर पूछा।

'रामा आज कल बहुत खुश रह रही है न।'

'तो खुश होने के तो उनके दिन ही हैं।'

'नहीं भाभी आजकल जब से इसने जयदेव को देखा है तब से—'

रामा दौड़ कर आई और दोनों हाथों से अंजनी का मुँह बन्द कर लिया। अंजनी ने अपने को उसके हाथों से छुड़ाते हुये कहा—भाभी देखती हो न ! बात नहीं कहने देती।

'तो अच्छी अच्छी बात क्यों नहीं करती।'

'अच्छी नहीं तो क्या यह कोई बुरी बात है।'

'बुरी नहीं तो फिर क्या है।'

'चल दूर हट।'

भाभी ने मुस्करा कर कहा— रहने दे अंजनी जब बेचारी को लज्जा लगती है तो न कह कुछ।

'लज्जा नहीं तो सब लगती है भाभी। मन में तो लगता होगा कि कोई जयदेव की ही बातें करता रहे और ऊपर से बड़ी लजीली बनने आई है।'

'सब तेरी तरह नहीं हैं।' रामा ने कहा और रूठ कर अपने गागरे के पास जा बैठी।

अंजनी उसके पास आगई बोली—तू बिगड़ गई। भाई मुझ से न रूठ, ले लोटा। नहा धो कर अपने घर जा। यह मान जयदेव को ही दिखाना।

क्षण भर रामा उसी प्रकार मुँह बनाये बैठी रही। फिर उसने लोटा उठाया और डोल से पानी लेकर शरीर पर डाल लिया। कपड़ा भीग कर शरीर से चिपक गया ? शायद वह रामा के यौवन भरे शरीर को छोड़ना नहीं चाह रहा था। भीगे कपड़े की ओट से उसका सुडौल सुन्दर गोरा शरीर झलकने लगा। वह नहा चुकी ही थी और उठ कर अपनी धोती पहनने जा रही थी कि सहसा अंजनी दौड़कर उसके निकट आई और कहा—रामा रामा, देख तो वह जयदेव इधर ही आ रहा है।

रामा ने एक बार चारों ओर दृष्टि दौड़ाई फिर सिमट कर बैठ

गई। जयदेव निकट आ गया था। दूर से ही उसने रामा को नहाते देखा तो अनिमेष वह उसके सौन्दर्य को देखता रहा।

आँखों की तृप्ति जब दर्शन मात्र से नहीं होती तब वे प्रिय का सामीप्य पाने के लिये व्याकुल हो उठती हैं। जयदेव भी कुयें के निकट आ गया और जिस ओर रामा बैठी नहा रही थी उसकी दूसरी तरफ जाकर बोला—किसी के पास लोटा हो तो मुझे पानी पिला देना।

अंजनी को परिहास सूझा उसने कहा—इधर आओ यह रामा के पास लोटा है; पिला देगी।

रामा ने एक बार क्रोध के साथ अंजनी की ओर देखा पर उस समय वह करती ही क्या। जयदेव उसके सम्मुख आकर खड़ा हो गया तो सिमिट कर बैठे ही बैठे उसने लोटा आगे की ओर खिसका दिया जयदेव उसे ध्यान पूर्वक देखता रहा। कपड़ों के बीच झलक रहे रामा के शरीर में उसे अमोघ आकर्षण दिखाई पड़ा।

लोटा हाथ में ले उसने अजनी के डोल में से पानी लिया और पीने लगा पर उसकी दृष्टि रामा की ओर ही लगी हुई थी। रामा अपने में सिमिटी जा रही थी। उसे रह रह कर अंजनी पर क्रोध आ रहा था।

पानी पीकर उसने लोटा रामा के पास रख दिया और तिरछी दृष्टि से उसकी ओर देखते और मुस्कराते हुये उसने कहा—धन्यवाद।

और जयदेव जब चला गया तो रामा ने उठकर चुपचाप अपने सूखे कपड़े पहने और बिना किसी से कुछ कहे खाली गागरे को लटकाये घर की ओर चल पड़ी।

७

जिस दिन से रामा विपिन के यहाँ से गई सदाशिव के जीवन में एक असीम परिवर्तन हो गया। जीवन का सारा स्नेह जैसे सदाशिव ने बकरी के बच्चे के ऊपर ही उड़ेल दिया। दिन भर वह उसी बच्चे

के साथ लिपटा रहता। उसने उसका नाम श्यामा रख लिया था। श्यामा भी सदाशिव को इतना हिल गया था कि जहाँ कहीं भी सदाशिव जाता वह बराबर उसके साथ रहता। सदाशिव अब अधिक गम्भीर रहने लगा था; पहले की भांति अब उसके अधरों पर हँसी की रेखा न दिखाई पड़ती। प्रातः वह श्यामा को लेकर घर से बाहर निकल पड़ता। गाँव से बाहर किसी एकान्त स्थान में जाकर वह बैठ जाता और श्यामा उसके आस पास क्रीड़ा करता हुआ चरता रहता।

माँ ने सदाशिव की यह उदासीनता देखी तो उसे बड़ी चिन्ता हुई। सदाशिव ऐसा लड़का भी कभी इतना गम्भीर हो सकेगा इसकी कल्पना उसने कभी स्वप्न में भी नहीं की थी। कई बार उसने सदाशिव के अन्तर की व्यथा को जानने का प्रयत्न किया पर हर बार वह हँस कर टाल देता। भला माँ को वह अपने अन्तर की व्यथा कैसे बताये।

उस दिन माँ ने सदाशिव से पूछा—सदाशिव तू आजकल इतना व्यथित सा क्यों रहता है।

'व्यथित!' आश्चर्य से उसने पूछा।

'हाँ, इतना उदास तो तू पहले कभी नहीं रहता था।'

'उदास कहाँ रहता हूँ माँ?' सदाशिव ने हँसने का प्रयत्न किया पर विषाद की रेखा उसके अधरों पर बिखर गई।

माँ ने कहा—तू चाहे मुझे बता, न पर यह सत्य ही तो है कि तुझे आज कल कोई चिन्ता अवश्य खाये जा रही है।

'नहीं माँ तुम व्यर्थ ही संदेह करती हो।'

'तो फिर तू इतना गम्भीर क्यों रहता है।'

सदाशिव हँसा, कहा—माँ गम्भीर तो मुझे अब रहना ही चाहिये अब मैं बड़ा हो गया हूँ न!

'हाँ पर गम्भीरता इस तरह एक दिन में तो नहीं आती।'

सदाशिव इस सम्बन्ध में माँ से अधिक देर बात करना नहीं चाहता। उसे अपने ऊपर विश्वास नहीं। वह जानता है कि यदि माँ

ने उससे अधिक पूँछ-ताँछ की तो अवश्य ही उसे सब बातें सच-सच कह देनी पड़ेंगी। और यह भी बातें कुछ कहने की होती हैं। बातचीत की श्रृंखला में एक मोड़ देने के उद्देश्य से सदाशिव ने कहा—माँ श्यामा को तो देखो कैसा उछल रहा है।

श्यामा आँगन में क्रीडा कर रहा था। अपने नाम से जैसे वह परिचित है। तुरन्त ही उसने घूम कर सदशिव की ओर देखा। आँखों में उसके जैसे ममता छलक रही थी। सदाशिव ने पुचकार कर उसे अपने निकट बुलाया तो वह उछलता हुआ पास आ गया। सदाशिव ने उसके ऊपर हाथ फेरते हुये कहा—श्यामा ?

श्यामा ने अपने स्वामी के अङ्क में सिर रख दिया। कितना सुरक्षित वह अपने को सदाशिव के अङ्क में अनुभव करता है। सदाशिव उसके सिर पर हाथ फेरता रहा। माँ ने कहा—सदाशिव तू तो इस श्यामा के पीछे पागल हो गया है।

देखो न माँ यह मुझे कितना हिल गया है।

'हिल क्यों न जाता, इतना प्रेम जो तू इसे करता है।

'हाँ माँ कभी कभी मैं भी सोचता हूँ कि मैं इसे इतना प्रेम क्यों करने लगा हूँ।'

'पशु प्रेम बहुत अधिक होता है।'

'मानव प्रेम से भी अधिक' सदाशिव के मुख से निकल गया।

वह सोचने लगा-प्रेम मनुष्य प्रतिदान की आशा से करता है। पर जब कोई बिना प्रतिदान की आशा के प्रेम करता है तब वह प्रेम कितना दुःखदाई हो जाता है। श्यामा को वह प्रेम करता है पर प्रतिदान की आशा वह उससे नहीं रखता। भला श्यामा उसके प्रेम का प्रतिदान क्या दे सकेगा। परन्तु उसके पास सदाशिव के जीवन की मधुर स्मृतियाँ सकलित हैं उन्हीं के कारण तो वह श्यामा को इतना प्यार करता है।

श्यामा के सिर को हथेलियों से उठाकर उसने अपने गालों से लगा लिया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह रामा का ही स्पर्श कर रहा हो। रामा ने जाते समय श्यामा का भार उसके ऊपर छोड़ा था। इसी लिये तो वह अपना समस्त जीवन श्यामा को ही अर्पित कर चुका है।

पर रामा को वह इतना प्यार क्यों करता है। वह जानता है कि जीवन में वह उसे कभी पा न सकेगा। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह जिसे प्रेम करता है उसे अपनाने के लिये वह सदैव बेचैन रहता है पर रामा को अपनाने की उसके हृदय में कभी इच्छा नहीं हुई। वह उससे दूर है पर जाने क्यों वह सदैव यही अनुभव करता है कि वह उसके अत्यन्त निकट है।

कभी कभी वह श्यामा को लेकर जब गाँव से बाहर एकान्त में जा बैठता है। तो उससे बैठा घण्टों बातें करता रहता है। उस समय उसे ऐसा लगता है जैसे वह रामा से ही बातें कर रहा हो। श्यामा की भाव भरी आँखों में वह अपनी रामा के उत्तर पढ़ने का प्रयत्न करता है मनुष्य के जीवन में कभी कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं जब उसे किसी आधार की आवश्यकता होती है। वह आधार यदि उससे छीन लिया जाय तो वह जीवित नहीं रह सकता। यही बात सदाशिव के भी सम्बन्ध में है। श्यामा उसके जीवन का आधार हो गया है। उसी के बल पर जैसे वह जी रहा है।

अभी उसी दिन की तो बात है। गाँव में चौधरी के यहाँ यह चर्चा हो रही थी कि सदाशिव अब जाने कैसा होता जा रहा है। सदाशिव भी अनुभव करता है कि उसका अब जीवन में कोई आकर्षण नहीं रह गया। उस दिन वह चौमास की ओर गया था। वहाँ जयदेवी मिल गई। जयदेवी उसके शैशव की संगिनी है। दोनों ने अबोध जीवन के कितने ही वर्ष एक साथ बिताये हैं। सदाशिव को अब भी स्मरण है जब खेल-खेल में वह जयदेवी के सिर पर

तड़ातड़ तमाचे लगा दिया करता था । जयदेवी रोती कहती अब वह सदाशिव के पास नहीं खेलेगी पर अपनी बात अधिक समय तक याद न रखती । चोट की पीड़ा जाती तो वह फिर सदाशिव के साथ आ खेलने लगती ।

और फिर उसे वह समय भी स्मरण है जब उसने यह आशा की थी कि जयदेवी उसके घर में आकर परिवार का अंग बन जायगी । माँ भी इस सम्बन्ध को पसन्द करती थीं परन्तु वह सब कुछ हो न सका । जयदेवी उसकी न हो सकी । और यह भी तो उसी की भूल है ।

उसने जयदेवी को देखकर पूछा—कब आई तुम जयदेवी !

जयदेवी ने अधरों पर मुस्कान ला सदाशिव की ओर देखा । अभी पिछली लगन में जयदेवी का विवाह सैदपुरिया गाँव में हो गया है । पति उसका बड़ा परिश्रमी है । अपने परिश्रम के बल पर ही उसने इतनी सारी सम्पत्ति उपार्जित की है । उसके दो छोटे भाई हैं जो उसके साथ ही रहते हैं । जयदेवी उसके घर में लक्ष्मी बनकर गई कि जब से उसने पति के घर में चरण रखा उस घर की उन्नति ही हो रही है । जयदेवी ने उत्तर दिया—मुझे आये तो अब कई दिन हो गये ।

'कई दिन हो गये पर मुझे तुम नहीं दिखाई पड़ी ।'

'दिखाई कैसे पड़ती ? जब तुम मुझे देखना चाहते तब तो ।'

'क्यों, देखना क्यों न चाहता ? कोई तुम से मेरी शत्रुता है क्या ?'

'सदाशिव जीवन में शत्रुता भी कई प्रकार की होती है ।' जयदेवी ने कहा—कभी-कभी हम शत्रु होकर भी किसी के जीवन को इतना नष्ट नहीं कर पाते जितना मित्र होकर करते हैं ।

'तो जयदेवी अब तुम दार्शनिक भी हो गई ।'

'जीवन की परस्थितियाँ ही मनुष्य को दार्शनिक या कवि बनाती हैं । सदाशिव ! मैं उनसे कुछ परे थोड़े ही हूँ ।' जयदेवी ने निश्वास खींच कर कहा ।

'हाँ, तुम ठीक कहती हो जयदेवी !'

जयदेवी क्षण भर चुप रही। फिर उसने कहा—सदाशिव जब से मैं इस बार यहाँ आई हूँ, तुम्हारे सम्बन्ध में मैंने अनेक प्रकार की बातें सुनी हैं ?'

'क्या सुनी हैं ?'

'जो सुना है वही तुममें देखती भी तो हूँ।'

'पर कुछ कहो भी तो।'

'कहने की बात नहीं। तुम स्वयं समझते हो।'

'और यदि मैं न समझता होऊँ तो।'

'तो मुझे कहना ही पड़ेगा।'

'हाँ, तो कहो।'

जयदेवी थोड़ी देर तक सदाशिव की ओर देखती रही। सदाशिव ने एक बार भर आँख उसकी ओर देखा फिर नीची दृष्टि कर वह अपने अँगूठे से धरती कुरेदने लगा। जयदेवी ने पूछा—

'तुम आज कल इतने उदासीन क्यों रहते हो सदाशिव।'

'उदास रहता हूँ! यह कैसे ?'

'मुझसे तुम न छिपाओ सदाशिव! मैं जानती हूँ। तुम इस प्रकार कभी नहीं हो सकते थे। कोई न कोई घुन तुम्हारे अन्तर में अवश्य लग गया है!'

सदाशिव गम्भीर हो गया। उसने कहा—जयदेवी जीवन एक प्रवाह है जिसके वक्षस्थल पर कभी कभी मटमैला फेन एकत्र हो जाता है पर वह क्या कभी टिकता है।

'टिके वह चाहे न पर तट पर उसकी यादगार तो बनी ही रहती है।'

'वह भी समय पाकर बरसात में बह जाती है।'

'पर यदि बरसात ही न हो।'

'तो धूप सुखा कर उसे धूल में मिला देगा।'

'हाँ पर इसमें समय लगता है।'

'यही तो एक प्रश्न है जयदेवी।'

जयदेवी चुप हो गई। सदाशिव के अन्तर की पीड़ा का वह अनुभव कर रही थी। उसने क्षण भर चुप रह कर कहा—सदाशिव तुम ब्याह कर लो।

सदाशिव जोर से हँस पड़ा; बोला—जयदेवी तुम भी क्या कहती हो। क्या तुम समझती हो, कि विवाह करने से मेरी यह गम्भीरता जाती रहेगी।

'हाँ, अवश्य।'

'तुम्हारी यह भूल है।' सदाशिव ने विषाद पूर्ण हँसी हँसते हुये कहा।

जयदेवी को लगा जैसे उसके अतीत के वे दिन वापस लौट आये हों। यह अवश्य है कि उस समय सदाशिव की भूल से जयदेवी उसकी नहीं हो सकी पर क्या वह आज तक उसी की स्मृति को लेकर जी रहा है। जयदेवी को लगा जैसे उसका जीवन सफल हो गया। सदाशिव को उसने अपना समस्त प्यार दिया था और सोचा था यह सदाशिव उसके प्यार का मूल्य नहीं चुका सका। पर आज उसने अनुभव किया जैसे वह सदाशिव से पराजित हो गई। काश, सदाशिव ने उस समय भी इस प्रकार अनुभव किया होता तो यह समय क्यों आता। अब तो वह दूसरे की हो गई। सदाशिव के अन्तर के अभाव को वह दूर ही कैसे कर सकती है।

जयदेवी को यह ज्ञान नहीं था कि सदाशिव उसकी स्मृति के कारण नहीं किसी और की स्मृति के कारण ऐसा हो गया है। जो जयदेवी इतने दिनों में नहीं कर सकी वही तो रामा ने क्षण भर में कर दिया। नारी की शक्ति का पता किसे होता है।

जयदेवी ने कहा—सदाशिव, हमें अतीत को भूल जाना चाहिये।

सदाशिव की वेदना छलक आई। किसी ने अब तक उसके साथ इस सम्बन्ध में इतनी आत्मीयता के साथ वर्तालाप नहीं छेड़ा था।

उसने कहा—जयदेवी, अतीत की रेखायें जब आग से खींची जाती हैं तब उनके मिटने की सम्भावना नहीं रहती।

'तुम पुरुष हो सदाशिव! पराजय तुम्हारे लिये इतना निराशा जनक न होनी चाहिये। मुझे देखो।'

'निराश न होऊँ जयदेवी यदि आशा की एक भी किरण शेष हो पर—'

'हमें सब सहना होता है।'

'हाँ, पर स्मृतियाँ जगाने के लिये जब कोई सजीव आकार धर कर प्रत्येक क्षण साथ रहता हो तब?' सदाशिव ने श्यामा की ओर देखा। वह निश्चिन्त भाव से उनसे थोड़ी दूर पर चर रहा था।

जयदेवी क्या उत्तर देती! उसने परिणाम को इतना दुर्वह नहीं समझा था। उसने कहा—पर मेरे लिये तुम्हें सब कुछ करना होगा।

'तुम्हारे लिये अब कर ही क्या सकता हूँ जयदेवी।'

'सब कुछ! मैं कहती हूँ तुम विवाह कर लो।'

'यह न कहो जयदेवी।'

'न कहूँ! मैं जानती हूँ अतीत को तभी तुम भुला सकोगे।'

'यह न होगा जयदेवी।'

'तो क्या इसी तरह प्राण दे दोगे।'

'प्राण नहीं दूँगा। हाँ ऐसा ही रहूँगा जरूर।'

'सदाशिव जानते हो इससे मुझे कितना कष्ट होगा।'

'समझता हूँ जयदेवी पर सोचो मैं क्या करूँ।'

'कुछ भी हो घर तुम्हें बसाना होगा।' जयदेवी ने सदाशिव का हाथ अपनी हथेली में ले लिया। सदाशिव को लगा जैसे उसके शरीर में बिजली दौड़ गई हो। उसका शरीर सुन्न पड़ता जा रहा था और उसे लगा कि वह गिर पड़ेगा।

जयदेवी की आँखों में आँसू छलछला आये। उसने रुद्ध कंठ से

कहा—सदाशिव मुझे वचन दो कि तुम अपने जीवन को इतना नीरस न बनाओगे।

सदाशिव चुप रहा। अपने जीवन को नीरस वह बनाना कब चाहता है पर जब उसके जीवन की रस की सरिता ही सूख गई तब इसमें उसका कुसूर ही क्या? वह शून्य की ओर निहारता रहा।

जयदेवी ने फिर कहा—सदाशिव तुम्हारी यह दशा देख कर मुझे बहुत कष्ट होता है?

सदाशिव ने अपने हृदय की वेदना को दबा कर कहा—प्रयत्न करूँगा जयदेवी।

जयदेवी के अधरों पर प्रसन्नता की स्मित रेखा खिंच गई। उसने कहा—तो अब मैं तुम्हें पहले सा ही प्रसन्न देखने की आशा करूँ।

'हाँ।' सदाशिव कठिनता से कह पाया।

जयदेवी ने अपना सिर सदाशिव के कंधे पर रख दिया। क्षण भर वह आँखें बन्द किये उसी प्रकार रही फिर एक निश्वास खींच कर वह सदाशिव से दूर खड़ी हो गई। सदाशिव ने पूछा—जयदेवी तुम अपने पति के साथ सुखी तो हो।

'हाँ, मुझे सब प्रकार का सुख है।'

'मैं यही चाहता हूँ।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

जयदेवी जब चली गई तब सदाशिव पास ही पड़ी हुई एक शिला पर बैठ गया। जीवन में कितनी बड़ी भूल वह कर बैठा है। यदि उसने जयदेवी से विवाह कर लिया होता! परन्तु उस समय उसे यह ज्ञात कहाँ था? रामा ने आकर उसके जीवन में एक विप्लव खड़ा कर दिया। वह कितना चाहता है कि उसे भूल जाय पर भूल नहीं पाता।... पर भूल कर भी वह क्या करेगा जीवन में किसी के प्रेम को आधार बना कर ही तो मनुष्य जीवित रह सकता है। अब उसे किसका प्रेम प्राप्त हो सकता है। जयदेवी थी वह भी अब दूसरे की हो गई। अब तो उसे

रामा की स्मृति लेकर ही जीवन व्यतीत करना होगा। विधि की शायद यही व्यवस्था थी।

उसकी करुणा आँखों में भर आई और उस एकान्त स्थान में वह फूट-फूट कर रो पड़ा।

श्यामा चरना छोड़ आ गया था। सदाशिव की गोद में उसने अपना सिर छिपा लिया तो उसे हृदय से लगा सदाशिव जी भर कर रोया। जब कभी सदाशिव के हृदय की वेदना बहुत अधिक हो उठती है तब वह श्यामा से सान्त्वना प्राप्त करता है। श्यामा सदाशिव को रोते देख विकल सा हो रहा था। सदाशिव की वेदना कुछ हलकी हो गई और उसने श्यामा के मुख को उठा कर चूम लिया।

उसके जीवन में जयदेवी अपने आप आई। उसे संजोकर वह नहीं रख सका। पर जयदेवी उसकी स्मृति को फूलों के समान संजोकर रखे हुये है। अपने जीवन में रामा को उसने बरबस खींचने का प्रयत्न किया पर खींच न सका। हाँ उसकी पीड़ा को वह संजोकर अपने हृदय में रखे हुये है। सदाशिव के जीवन की यह कितनी बड़ी असफलता है।

८

दिवाली का दिन था। प्रातः काल से ही गाँव वालों में एक असीम उत्साह व्याप्त था। रामनयन कुम्हार वर्ष में एक दिन उसका भी आता है। वह मिट्टी के दिये लिये प्रातः काल ही सब के यहाँ हो आया। घर-घर वह दिये देता है और फिर शाम को उन्हीं दियों में जीवन का प्रकाश एक बार टिमटिमा उठता है। भारत के ग्रामीण जीवन का यह एक मनोहर दृश्य है।

रामनयन जब सदाशिव के घर पर पहुँचा तो सदाशिव द्वार पर बैठा हुआ श्यामा के साथ खेल रहा था। रामनयन ने देखा तो बोला—सदा-शिव भाई तुम तो जान पड़ता है इस श्यामा के पीछे पागल हो जाओगे।

सदाशिव क्या कहता कि वह तो वास्तव में पागल हो ही गया है। उसे ऐसा जान पड़ता है जैसे उसके अस्तित्व के कण-कण में यह श्यामा व्याप गई है। श्यामा के प्यार में वह इतना लीन क्यों हो गया है यह वह स्वयं नहीं समझ पा रहा है। सदाशिव को जब कभी रामा की याद आ जाती है तब वह श्यामा के निकट पहुँच जाता है और उसी में अपने को भुला रखने का प्रयत्न करता है। श्यामा को वह इसीलिये हर समय अपने साथ रखता है कि उसे रामा की याद न आये पर—

सदाशिव के मस्तिष्क में यह सभी विचार क्षण भर में घूम गये। उसने मुस्करा कर कहा—क्या करूँ रामनयन, यह श्यामा जब बहुत छोटी थी तभी से इसे पाला है सो इतना प्रेम हो गया है इससे—

'इतना प्रेम तो भैया अपनी संतान से भी किसी को न होगा।'

'हाँ, हो सकता है पर वह मेरी संतान से कुछ कम नहीं है।' सदाशिव ने कहा। मनुष्य अपनी संतान को सम्भवतः बहुत अधिक प्रेम करता है परन्तु उससे भी अधिक अपनत्व उसे किसी भूली प्रिय घटना की स्मृति मिटाने वाली चीज़ से होता है। यही बात सदाशिव के सम्बन्ध में है। श्यामा उसके जीवन में एक स्मृति चिह्न की भाँति सुरक्षित रहती है।

सदाशिव को चुप देख रामनयन ने कहा—भैया आज दिवाली है दिये लोगे न!

'मेरे लिये दशहरा दिवाली सभी तो बराबर हैं रामनयन! जब जीवन में प्रकाश न रह गया हो तो फिर इन मिट्टी के दियों से क्या होगा।'

कहने को सदाशिव ने यह कह दिया पर बाद में वह स्वयं सोचने लगा कि उसे ऐसा नहीं कहना चाहिये था। अपने जिस दर्द को वह रहस्य बनाये रखना चाहता है उसे इस तरह प्रगट करके उसने अच्छा नहीं किया।

रामनयन सदाशिव की बात कुछ समझा नहीं। उसने कहा—राम

राम भैया, साल भर का त्योहार और तुम ऐसी बात करते हो। यह भी भला कोई बात है।

सदाशिव सम्भल गया था; उसने कहा—ठीक कहते हो रामनयन पर बात यह है कि मैं आज यह सोच रहा था कि यह दिवाली हम किसानों का कितना पवित्र त्योहार है परन्तु फिर भी आज हमारा जीवन इतना दुरूह हो गया है कि हम इसको भी अपने ऊपर एक अभिशाप समझने लगे हैं।

'अब तो समय ही बदल गया है सदाशिव भाई। नहीं पहले की दिवाली होती थी कि सारा गाँव जगमगा उठता था।'

'अब किसी को भी तो क्षण भर सुख से बिताने को नहीं मिलता।'

'हाँ यही बात है भैया कुछ ऐसा समय लगा है।'

सदाशिव कुछ कहने जाही रहा था कि भीतर से किसी के बोलने की आवाज सुन कर माँ बाहर आ गईं। माँ को देखते ही सदाशिव ने कहा—माँ रामनयन आया है। दिये ले लो।

'दे दे रामनयन!'

'कितने दूँ चाची?'

माँ क्षण भर रुकी फिर कहा—चार कोड़ी दे दे।

रामनयन दिये गिनने लगा और सदाशिव बैठा शून्य की ओर निहार रहा था।

रामनयन जब दिये देकर चला गया तो सदाशिव ने माँ से कहा—माँ इतने दिये तो तुमने बेकार ले लिये क्या होंगे?

'तू क्या समझे हर साल तो देखता है कि इतने ही दिये लेती हूँ पर फिर भी तू कहता है कि कम पड़ गये।'

हर वर्ष सदाशिव दिवाली के दिन कितना उत्साहित रहता था। उसको लगता था कि इतने दिये रखे कि उसका सारा घर जगमगा उठे। माँ से वह हर साल कहता था कि दिये कम हो जाते हैं। इसीलिये माँ ने इस वर्ष अधिक ले लिये थे।

सदाशिव ने कहा—पर इस बार न कम पड़ेंगे माँ।

माँ ने मुस्करा कर उसकी ओर देखा और दिये एक डलिया में भर कर भीतर उठा ले गई।

सदाशिव कुछ देर तक गम्भीर बना बैठा रहा फिर वह उठ कर एक ओर चल पड़ा। श्यामा उसके पीछे-पीछे चलने लगी। घर से थोड़ी दूर पर नीम का एक पेड़ है। सदाशिव जाकर उसी के तने के पास बैठ गया। श्यामा उसके निकट आकर खड़ी हो गई। उसकी आँखों में जैसे प्रश्न था। सदाशिव ने कहा—श्यामा आज दिवाली है।

श्यामा उसके और निकट आ गई।

'आज वह भी दिवाली मनायेगी।' सदाशिव ने फिर कहा।

श्यामा अपने स्वामी को एकटक देख रही थी।

सदाशिव ने फिर कहा—श्यामा आज जब सूर्य अस्त हो जायगा जब उसका प्रकाश इस धरती पर से उठ जायगा तब वह अगनित मिट्टी के दियों में तेल भर कर उन्हें प्रकाशित कर देगी और फिर उनकी टिमटिमाहट से उसका समस्त द्वार प्रकाशित हो उठेगा।

श्यामा भला क्या उत्तर देती।

सदाशिव कहता गया—श्यामा, तू उसी की है, उसी की जो शायद तुझे भूल गई होगी। मुझे भी भूल गई होगी। पर हम दोनों—तू और मैं उसी की स्मृति को लेकर जी रहे हैं। श्यामा क्या कभी तूने सोचा है कि वह कितनी निर्दय है। वह अत्यन्त निर्दय है, कितनी कठोर। पर श्यामा जब तक तू मेरे पास है मैं सब कुछ सह सकता हूँ।

सदाशिव ने सहसा आँखें उठाईं; कुछ आहट मिला तो वह उठ कर खड़ा हो गया देखा उधर से संजीवन आ रहा है। संजीवन सदाशिव का समवयस्क है दोनों में परिचय भी अच्छा खासा है। संजीवन ने पास आकर कहा—कहो सदाशिव यहाँ बैठे किसका ध्यान करते हो।

'किसी निर्दय का !' हँस कर सदाशिव ने उत्तर दिया पर उसकी उस हँसी में जो विषाद था वह छिपा न रह सका।

'कौन ऐसा निर्दय है जो तुम्हें आजकल इतना सता रहा है।'

'यों ही कहा संजीवन तू भी खूब बात पकड़ता है।'

'नहीं मैं स्वयं ही इधर कुछ दिनों से सोच रहा हूँ कि तेरे हृदय में कोई दर्द अवश्य टीस मार रहा है।'

'तुम्हारी समझ तो निराली है।'

'सभी का यही कहना है। अभी विपिन की ओर से आ रहा था। कल शाम को वह आया है उसे देख थोड़ी देर के लिये बैठ गया तो तुम्हारा जिक्र छिड़ गया। विपिन कहता था कि सदाशिव आज कल जाने कैसा होता जा रहा है। अजब विक्षिप्त सा रहता है।'

'तो विपिन आ गया।'

'हाँ कल शाम को आया पर तुम जो कभी उधर जाओ तब न।'

सदाशिव को ध्यान आया महीनों से उधर नहीं गया। विपिन क्या सोचता होगा। सचमुच वह अब कुछ विचित्र होता जा रहा है। उसने कहा—विपिन मेरे सम्बन्ध में और क्या कहता था।

'कहता क्या यही कह रहा था कि जाने तुम्हें क्या हो गया है कि कितनी ही बार वह गाँव आया, तुम्हारे यहाँ भी गया पर तुम्हारा कहीं पता न लगा।'

सदाशिव ने एक निश्वास खींची और कहा—संजीवन सचमुच मैं आज कल जाने कैसा होता जा रहा हूँ। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

'प्रेम में ऐसा ही होता है।'

'नहीं जी प्रेम भला मुझे कौन करेगा'।

'तुम्हें चाहे कोई करे या न करे पर तुम तो किसी को अवश्य ही प्रेम करने लगे हो।'

'संजीवन यदि कोई स्वर्ग की कल्पना को साकार करना चाहे तो वह भला कब सम्भव हो सकता है।' सदाशिव ने कहा !

'पर स्वर्ग की कल्पना का कोई पता भी तो लगे।'

'यों ही कहा संजीवन कोई बात नहीं। मेरा अभिप्राय यह है कि प्रेम स्वर्ग की कल्पना है। मेरे बस की बात नहीं।'

'बस की बात तो किसी के नहीं है पर फिर भी वह दर्द हो उठता है सब के हृदय में।' संजीवन ने कहा।

सदाशिव क्षण भर तक चुप रहा फिर बोला—संजीवन, कभी कभी मैं सोचता हूँ कि जब जीवन में एक बार सभी प्रेम करते हैं तो फिर लोग इसे इतना बुरा क्यों समझते हैं।

संजीवन सदाशिव की भाँति दार्शनिक नहीं है और न वह इस प्रकार के प्रश्नों से अपने को परेशान करना चाहता है उसने उत्तर दिया—बुरा कोई समझे या न समझे पर जो स्वाभाविक है उसे कोई रोक नहीं सकता।

'हाँ यह तो अवश्य है पर यह नियन्त्रण कभी कभी बहुत बुरा होता है।'

'यह तो है ही। मेरे मामा एक गोरे के यहाँ नौकर हैं। वह बताते थे कि गोरों में तो विवाह भी तब तक नहीं होता जब तक लड़की लड़के एक दूसरे को प्रेम नहीं करने लगते।'

'यह कितना अच्छा है संजीवन।'

'यही तो है तभी तो वे लोग हम पर शासन करते हैं। जिससे प्रेम हो गया उसी से विवाह हो गया।' संजीवन ने कहा।

'और एक हमारे यहाँ है कि प्रेम करना भी पाप समझा जाता है।'

'पाप ! कि यदि कहीं पता लग जाय कि कोई किसी लड़की को प्रेम करता है तो फिर क्या पूछना ? दोनों की बदनामी का कोई ठिकाना नहीं।'

सदाशिव सोचने लगा ठीक तो है। यदि कहीं वह किसी से कहे

कि वह रामा को प्रेम करता है तो रामा की कितनी बदनामी होगी। सब लोग उसे पतिता ही समझने लगेंगे। कोई उससे विवाह करने को भी तैयार न होगा। इसीलिये तो वह किसी से कुछ कहना नहीं चाहता। पर आज वह विपिन के यहाँ जब जायगा तो विपिन अवश्य ही उससे पूछेगा। तब वह उसे क्या उत्तर देगा। उससे उसने जीवन में कभी कोई बात नहीं छिपाई। तो क्या इस बात को भी वह न छिपाये। पर विपिन उसे कितना नीच समझेगा। नहीं वह उससे कुछ नहीं कहेगा।

संजीवन ने कहा—क्या सोचने लगे सदाशिव !

'कुछ नहीं सोच रहा था कि चलूँ जरा विपिन से भेंट कर आऊँ।'

'हाँ हाँ अवश्य ! वह तुम्हारी याद भी बहुत कर रहा था।'

'चलो तुम भी न चलो।'

'चलो मेरा क्या ? आज कोई काम थोड़े ही है।'

दोनों विपिन के घर की ओर चल पड़े। श्यामा थोड़ी दूर पर चर रही थी सदाशिव को उसका स्मरण न आया और वह चला गया। श्यामा चरती ही रही जैसे उसे भविष्य का कुछ भी ज्ञान न हो।

सदाशिव संजीवन से बातें करता हुआ विपिन के घर की ओर जा रहा था जैसे जीवन का यही मोड़ हो।

सदाशिव जिस समय विपिन के घर पहुँचा दोपहर हो रही थी। कार्तिक की धूप की तीव्रता वृक्षों की हरी हरी पत्तियों को झुलसा रही थी। विपिन के मकान के द्वार पर एक नीम का वृक्ष है जिसकी शीतल छाया वर्ष भर बनी रहती है। विपिन नीम की छाया में एक चारपाई डाले हुये लेटा था। अभी थोड़ी देर पहले ही लोग उठ कर गये थे। रात भर उसे सोने का अवसर नहीं मिला था। इसलिये वह आराम करने के लिये लेट गया था। सदाशिव और संजीवन के आने की आहट पाकर उसने आँखें घुमा कर देखा तो उठ बैठा। नमस्कार करके संजीवन से कहा—आखिर तुम इसे पकड़ ही लाये संजीवन।

'हाँ भैया पकड़ क्यों न लाता।' संजीवन ने उत्तर दिया।

'कहाँ मिल गया यह तुम्हें।'

'आज कल इनके मिलने का कुछ ठीक नहीं। इधर से जा रहा था तो दादा वाली नीम के नीचे बैठे हुये आप मिल गये।'

सदाशिव चारपाई पर बैठ गया। विपिन ने कहा—आज कल तुम कहाँ रहते हो सदाशिव !

'हाँ इधर आ नहीं पाया विपिन भैया।'

'आ नहीं सके ! क्या करते रहते हो कि कहीं आने जाने का भी अवकाश नहीं मिलता।'

'करता क्या रहता हूँ पर······'

'पर क्या ? तुम आज कल हो कैसे रहे हो।'

यही प्रश्न सदाशिव से सभी करते हैं पर सदाशिव को स्वयं भी तो पता नहीं कि वह कैसा हो रहा है। उसने कहा कुछ भी तो नहीं है भैया तुम भी औरों की बात सुन कर विचार बना लेते हो॥

'विचार मैं नहीं बनाता सदाशिव ! तुम्हें बचपन से ही मैं जानता हूँ पर अब तक तो तुम ऐसे नहीं थे।'

सदाशिव को लगा कि बस विपिन से अपने हृदय की समस्त पीड़ा को कह दे पर उसकी वाणी जैसे मूक हो गई।

संजीवन ने कहा—अच्छा भैया मैं तो चला।

'अच्छी बात है संजीवन।'

संजीवन चला गया तो विपिन ने सदाशिव से कहा—सदाशिव मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय में कोई पीड़ा घर कर गई है। मैंने तुम्हारी इस विक्षिप्ति के बारे में बहुत कुछ सुना है। पिछली बार जब मैं आया था तब तुम से मिलने के लिये तुम्हारे यहाँ गया था पर तुम नहीं मिले। चाची कहती थीं कि तुम्हें आज कल जाने क्या हो गया कि तुम पागलों की तरह दिन भर इधर उधर घूमते रहते हो।'

'मुझे स्वयं भी तो नहीं समझ पड़ता कि क्या हो गया।'

'सदाशिव तुम्हें बताना ही होगा। तुम्हारी भाभी कहती थीं कि कई महीनो से तुम इधर दिखाई नहीं पड़े।'

'हाँ मुझे स्वयं इसका दुःख है।'

'इसकी आवश्यकता नहीं परन्तु प्रश्न यह है कि आखिर तुम्हें ऐसी क्या चिन्ता सता रही है।'

'चिन्ता तो भैया ऐसी कोई नहीं है।'

'तुम अपने विपिन भैया से कुछ छिपाओगे नहीं इसीलिये तुमसे पूछ रहा हूँ।'

सदाशिव को लगा कि उसका हृदय बाहर आने को हो रहा है पर बात उसके मुँह से निकल नहीं पा रही है। कैसे वह विपिन को समझाये। वह चुप रहा।

विपिन ने फिर कहा—सदाशिव मैं जानता हूँ कि यौवन में मनुष्य के हृदय में कभी कभी ऐसी व्यथा जग उठती है जिसे छिपा कर रखने में ही उसे सुख मिलता है। पर तुम्हें तो अपने मन की पीड़ा बतानी ही होगी।

'भैया!' सदाशिव कुछ कह न सका।

'सदाशिव तुम बताओ। तुम्हें ज्ञात है कि मैं तुम्हारे लिये कोई प्रयत्न उठा न रखूँगा।'

'जानता हूँ भैया पर—'

'नहीं सदाशिव तुम्हें बताना होगा

'भैया।'

'हाँ।'

'......'

'सदाशिव तुम किसी को प्रेम करते हो।' विपिन ने पूछा। वह समझ गया कि सदाशिव अपने हृदय की पीड़ा को कह नहीं पा रहा है।

'हाँ!' सदाशिव ने बड़ी कठिनता से उत्तर दिया।

'किसको।'

सदाशिव चुप रहा।

'बोलो सदाशिव वह कौन है।' विपिन ने फिर प्रश्न किया।

भैया यह न पूछो।'

'सदाशिव मुझे तुम से सहानुभूति है। पर तुम जब तक बताओगे नहीं तब तक मैं क्या कर सकता हूँ।'

'पर भैया उसमें तुम मेरी सहायता न कर सकोगे।

'मनुष्य पहले ही यदि अपना विचार बनाले तो वह कदापि सही नहीं हो सकता।'

'हो सकता है पर मैं जानता हूँ कि मेरा विचार ठीक है।'

'फिर भी ?'

सदाशिव बाध्य हो गया। तो क्या उसे सब कुछ कह देना पड़ेगा। पर वह कैसे बताये! वह चुप रहा। विपिन उसकी ओर ध्यान से देख रहा था।

सदाशिव को चुप देख कर विपिन ने फिर पूछा—सदाशिव!

'हाँ।'

'बताओ।'

'भैया मुझ से यह न पूछो।'

विपिन गम्भीर हो गया। उसने कहा—सदाशिव मैं सब समझता हूँ। तुम्हारी भाभी का अनुमान मुझे सही जान पड़ता है।

'क्या ?

'वे कहती थीं कि तुम ने बकरी का बच्चा पाल रखा है ?'

'हाँ।' सचेत होकर सदाशिव ने उत्तर दिया।

'तम्हारे प्रेम का सम्बन्ध उससे है।'

सदाशिव चुप रहा। वह सोच रहा था भाभी की दृष्टि कितनी पैनी है स्त्री पुरुष के प्रेम के सम्बन्ध में जानने में अधिक कुशल होती है।

विपिन ने पूछा—वह बच्चा तुमने रामा को देने के लिये खरीदा था।

क्या उत्तर दे बेचारा सदाशिव वह चुप रहा तो विपिन ने फिर पूछा—बताओ सदाशिव !

'हाँ ।'

'मैं ठीक कहता हूँ ?'

'हाँ ।'

'तो तुम रामा को प्रेम करने लगे हो ।'

सदाशिव फिर चुप रहा ।

विपिन ने कहा—सदाशिव यदि तुम रामा को प्रेम करने लगे थे तो मुझसे तुम्हें कहना चाहिये था । पर तुमने मुझसे कभी उसका उल्लेख भी नहीं किया ।

'मैं तुमसे कुछ कैसे कहता भैया ।' सदाशिव ने कठिनता से उत्तर दिया ।

'यही तो तुम्हारी भूल है । तुम्हें मुझसे कहना चाहिये था ।'

सदाशिव चुप रहा ।

विपिन ने फिर कहा—तो तुम उससे विवाह करोगे !

सदाशिव की जैसे मनोकामना पूरी हो गई हो । उसने उत्सुकता से कहा—क्या यह सम्भव है !

'मैं प्रयत्न कर सकता हूँ ।'

'भैया ।'

'यदि तुम विवाह करना चाहो ।'

'हाँ, मैं करना चाहता हूँ । उसके बिना मेरा जीवन शून्य रहेगा ।'

'मैं तुमको वचन नहीं दे सकता पर प्रयत्न मैं करूँगा । सुना है रामा का विवाह कहीं निश्चित हो रहा है फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा !'

'कहाँ निश्चित हो रहा है भैया !'

'उसी के गाँव में एक लड़का है । रामा की माँ चाहती है कि ऐसे लड़के से रामा का विवाह करे जो उसी के यहाँ रहे । रामा को वह अपने पास से दूर नहीं करना चाहती

सदाशिव तनिक चिन्तित हो उठा। विपिन ने फिर कहा—तुम्हारे उपयुक्त वह लड़की है भी।

'क्यों?'

'दूसरी स्त्री तुम्हें ठीक रास्ते पर नहीं ला सकती।'

सदाशिव चुप रहा।

'आओ भीतर चलें सदाशिव!'

सदाशिव उठकर खड़ा हो गया। विपिन के पीछे पीछे वह आँगन में पहुँचा। भाभी रसोई बना रही थीं। विपिन जाकर दालान में बैठ गया। वहीं से उसने पत्नी को पुकार कर कहा—तुम्हारा अनुमान ठीक निकला।

'क्या।' पत्नी ने रसोई से ही उत्तर दिया।

'सदाशिव आया है।' विपिन ने कहा।

'अच्छा आज किधर को सूर्य उदय हुआ।'

'हाँ भाभी सूर्य तो पूर्व में ही उदय हुआ था पर इस समय तो सर पर आ गया है।'

भाभी हँसने लगी बोली—भला तुम आये तो मैंने तो समझा था कि तुम मुझसे कुछ अप्रसन्न हो गये हो जो आना जाना बन्द कर दिया।

'भला तुमसे भी कोई अप्रसन्न हो सकता है भाभी!'

'तब फिर क्यों नहीं आते थे।'

'यों ही।'

'नहीं कुछ कारण तो होगा ही।'

'कारण तो हर बात का होता ही है पर जब कारण कुछ महत्व न रखता हो तो उसका उल्लेख करना ही व्यर्थ है।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

भाभी चुप हो गईं। विपिन ने कहा— आता क्या? बेचारे को तुम्हारी रामा ने पागल बना दिया है।

भाभी जी खोल कर हँसने लगी। उन्होंने कहा—मैं तो पहले ही

समझती थी कि लल्ला के तीर निशाने पर जा लगा है पर ऐसे भी कोई प्रेम करता है।

'अभी नया ही है प्रेम करना तो इसे तुमसे सीखना चाहिये था।' विपिन ने परिहास किया।

पर भाभी परिहास से पीछे नहीं हटतीं। उन्होंने कहा—मुझसे सीखते तो इन्हें इतनी परेशानी ही क्यों उठानी पड़ती।

'अब तो जो हो गया सो हो गया पर आगे कोई उपाय बताओ।' विपिन ने कहा। सदाशिव संकोच में सिमटा बैठा रहा।

'किस बात का उपाय।' भाभी ने पूछा!

'रामा का विवाह किसी तरह सदाशिव से कराना होगा।'

'तो कराओ न, रोकता कौन है।'

'मैं नहीं कुछ कर सकता तुम्हें करना होगा।'

'क्या लल्ला यदि तुम्हारे घर रामा को ला दूँ तो तुम मुझे क्या इनाम दोगे।' भाभी ने सदाशिव से पूछा।

सदाशिव को लगा कि वह कह दे कि यदि ऐसा कर दोगी भाभी तो मैं जन्म भर के लिये तुम्हारा दास बन कर रह सकता हूँ। पर उसके मुख से आवाज नहीं निकली।

विपिन ने कहा—पहले करा दो फिर जो कहना इनाम मिल जायगा। तुम तो इतनी घूस खोर हो कि बिना कुछ लिये कोई काम करने को तैयार ही नहीं होतीं।'

'और फिर वह भी इतना बड़ा काम।' भाभी ने हँस कर उत्तर दिया।

सदाशिव को लग रहा था कि वह उठ कर चला जाय। पर जा वह नहीं सका। भाभी उससे घर का समाचार पूछने लगीं। विपिन ने कहा—सदाशिव न हो आज तुम यहीं खाना खाओ।

नहीं सदाशिव कैसे कर सकता है। उसने कहा—भैया अभी तो मैंने नहाया भी नहीं।

'तो उसमें कठिनाई क्या है जाकर नहा आओ तब तक तुम्हारी भाभी खाना भी बना चुकती है।'

सदाशिव चुपचाप उठा। आँगन के खपड़ैल पर विपिन की धोती सूखने के लिये टँगी हुई थी। उसको तुरन्त ही उठा लिया और कुएँ पर चला गया। जब सदाशिव चला गया तो विपिन ने पत्नी से कहा—सदाशिव जान पड़ता है इस रामा के पीछे पागल हो जायगा।

'मैंने तो पहले ही समझ लिया था।'

'तुम स्त्रियों का अनुमान इस सम्बन्ध में बहुत पक्का होता है।'

'तुम तो कहते थे कि तुम्हारा सदाशिव ऐसा नहीं हो सकता।'

'स्त्री जिसको चाहे उसको जो चाहे वह बना सकती है।'

विपिन की पत्नी हँसने लगी। विपिन ने कहा—तो अब यह विवाह तो कराना ही होगा।

'तो उन लोगों को लिख कर पूछो।'

'हाँ पूछूँगा पर रामा की माँ जो चाहती है कि उनका दामाद उन्हीं के यहाँ रहे उसका क्या होगा।'

'तो इसमें क्या बात है। सदाशिव वहीं रह सकता है। माँ की जिन्दगी ही कितनी है।'

बातें हो ही रही थीं कि सदाशिव नहा धो कर आ गया। भाभी रसोई तैयार कर चुकी थीं उन्होंने दो थालियाँ परस दी।

दोनों जब खा रहे थे तो वर्तालाप के सिलसिले में विपिन ने पूछा—अच्छा सदाशिव मैंने सुना था कि तुम सदैव ही अपने बकरी के बच्चे को साथ रखते हो पर आज तो वह तुम्हारे साथ नहीं था।

सहसा सदाशिव को श्यामा का ध्यान आया। कौर उठा कर वह मुँह तक ले जा रहा था कि श्यामा का ध्यान आते ही उसका हाथ वहीं का वहीं रुक गया। उसने कौर को थाली में रखते हुये कहा—विपिन भैया मुझे क्षमा करना मैं जाता हूँ। श्यामा का ध्यान मुझे नहीं रहा था।

वह चर रही थी। तभी संजीवन से भेंट हो गई। तुम्हारे आने का समाचार सुना सो उठ कर चला आया। श्यामा घबड़ाती होगी।

इतना कह कर वह उठ खड़ा हुआ। भाभी ने कहा—तो खाना तो खालो।

'वहीं भाभी अब नहीं खा सकता भूख जाती रही।' और वह उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये हुये ही आँगन में आ गया। हाथ मुँह धोकर वह तुरन्त ही श्यामा की ओर चल पड़ा।

नीम के नीचे पहुँच कर उसने श्यामा को पुकारा परन्तु किसी ओर से वह आती न दिखाई दी। सदाशिव का हृदय अज्ञात आशंका से काँप उठा। वह चारों ओर 'श्यामा' 'श्यामा' पुकारता हुआ उसे खोजने लगा। परन्तु श्यामा का कहीं पता न था। सदाशिव का हृदय अत्यन्त दुःखी हो उठा ज्यों ज्यों श्यामा का पता न लगता त्यों त्यों वह और भी अधिक परेशान होने लगा। जब श्यामा कहीं भी न दिखाई पड़ी तो उसने सोचा सम्भव है। श्यामा घर चली गई हो।

यह सोच कर वह घर आया परन्तु वहाँ भी श्यामा का पता नहीं था। सदाशिव के लिये यह घटना अत्यन्त दुःखद सिद्ध हुई। माँ से उसने पूछा कि श्यामा आई थी या नहीं। माँ का उत्तर पा वह विक्षिप्त की भाँति श्यामा को खोजने निकल पड़ा।

सारे दिन वह श्यामा को खोजता रहा परन्तु उसका कहीं भी पता न लगा। शाम हो गई पर सदाशिव घर नहीं लौटा। दिवाली के दिये जल उठे। माँ सदाशिव की प्रतीक्षा में बैठी हुई थीं परन्तु सदाशिव अपनी श्यामा की खोज में था। दिवाली की इस संध्या में भी उसे सर्वत्र अंधकार दिखाई दे रहा था।

६

दीपावली के दीप जगमगा उठे। रामा अपने द्वार के दीप सजा रही थी पर ध्यान उसका कहीं और ही था जिस दिन से जयदेव का

उससे परिचय हुआ है तब से वह उससे कई बार मिल चुकी है। जयदेव का गाना उसे बहुत मधुर लगता है। इसीलिये तो उसने उस दिन उससे फिर मिलने का वचन दिया था। उस दिन जो वह घर आई तो बहुत देर तक सोचती रही। जयदेव से उसने आखिर बातें ही क्यों की। शहर का आदमी ठहरा। कहते हैं शहर वालों में कृत्रिमता बहुत होती है। कहीं जयदेव में भी तो कृत्रिमता नहीं है कि वह उसके आकर्षण में आ जाय। उसने पति का आदर्श जो अपने हृदय में बना रखा है उस पर व: जयदेव को बार बार तौलने लगी। पति से प्रेम चाहती है—इतना कि उसकी कभी इति न हो। पर क्या वह जयदेव से वहीं प्रेम प्राप्त कर सकेगी

सदाशिव से वह जयदेव की तुलना करती रही। सदाशिव देहात का रहने वाला है। उसमें अपने भावों को प्रगट करने का ढङ्ग नहीं है; अपनी भावनाओं को वह प्रगट नहीं कर पाता पर भावना शील वह अधिक है। जयदेव अपनी भावनाओं को प्रगट करने में कितना कुशल है।

रसोई बनने में उस दिन देर हो गई। माँ किसी और काम में लगी थीं सो उन्होंने रसोई देर से प्रारम्भ की। रामा आँगन में लेटी तारों को देख रही थी। यदि उसका विवाह जयदेव से हो जायगा तब भी तो सदाशिव को वह भूल न पायेगी। वह जाने क्यों उसके जीवन में बस कर रहना चाहता है। इन्हीं तारों की भाँति वह उसके जीवनाकाश में टिमटिमाते रहना चाहता है। पर नहीं उसका उससे मोह ही क्या! वह उसे भुला देगी, भुला देगी!

रसोई बन गई तो माँ ने कहा—रामा सोगई क्या?

रामा ने बहाना किया हाँ माँ, नींद आ रही है।

'तो खाना खाले नहीं अभी सो जायगी!'

'नहीं अभी आती हूँ तुम खाना बना लो।'

'बन ही गया है खा न ले।'

'अच्छा।' कह कर वह खाट पर से उठी और हाथ मुँह धोकर आकर चौके में बैठ गई।

माँ खाना परसने लगीं तो उसने कहा— माँ थोड़ा ही देना आज भूख नहीं है।

माँ ने विस्मित होकर कहा—आज तो तूने दिन में कुछ खाया भी नहीं; फिर क्यों भूख नहीं है।

'जाने क्यों माँ।'

'तेरी तो कुछ बात ही नहीं समझ में आती।'

माँ ने थाली परस दी तो उसने खाना खाया। पर खाना उससे कुछ खाया नहीं जा रहा था। खा चुकी तो माँ ने कहा—तो एक आध रोटी और ले रामा!

'नहीं माँ अब न लूँगी।'

खाकर वह उठ आई और कमरे में जा कर लेट रही पर नींद उसे आ नहीं रही थी। वह सोचती रही।

माँ खा पीकर जब आईं तो उन्हें लगा रामा अभी सोई नहीं। उन्होंने पुकार कर पूछा—रामा सोई नहीं क्या तू।

रामा ने करवट लेते हुये कहा—हाँ माँ नींद नहीं आ रही थी।

माँ आकर उसके सिरहाने बैठ गईं। सिर पर हाथ फेरते हुये उससे पूछा—क्यों आज तू कुछ उदास सी है।'

'हाँ माँ जाने क्यों जी उच्चटा सा हो रहा है।'

'क्यों!'

'पता नहीं मन में जाने कैसे विचार आ रहे हैं।'

माँ ने कहा—अच्छा अब सो जा रात अधिक गई।

'हाँ अब सोऊँगी माँ।' रामा ने कहा और आँखें बन्द कर लीं।

माँ थोड़ी देर तक बैठी रही फिर उठ कर अपनी चारपाई पर लेट गई। दिया बुझा दिया। रामा ने फिर आँखें खोल दी और कमरे के अन्धकार में आँखें फाड़-फाड़ कर वह कुछ देखने का प्रयत्न करने लगी।

कितनी देर तक वह जागती रही इसका उसे ज्ञान नहीं फिर नींद आ गई।

दूसरे दिन प्रातः काल रामा अधिक देर तक सोती रही। जब उठी तो उसका जी भारी सा हो रहा था। माँ से उसने कहा—माँ मेरा जी आज कुछ भारी सा हो रहा है।

'कल रात देर तक तू जागती रही न।' माँ ने कहा।

माँ को पता नहीं कि रामा उसके सोने के बाद भी तो बहुत देर तक जागती रही थी। उसने कहा—नहीं, माँ सो तो गई थी पर सिर कुछ आज भारी हो रहा है।

माँ ने उसे अपने पास बिठा लिया और तेल लाकर रामा के सिर में लगाती रहीं।

माँ उसे कितना प्यार करती है। रामा अपने मन में सोचती रही और उसने कहा—माँ अब तुम अपना काम करो मेरे सिर का दर्द अब काम हो गया।

माँ अपने काम में लग गई पर रामा का सिर दुखता ही रहा। उस दिन उसने खाना भी बहुत कम खाया। माँ कहती ही रह गई।

शाम आने को हुई तो रामा को स्मरण हो आया। उसने जयदेव से मिलने के लिये कहा था तो क्या वह जाय! सोचती थी कि वह न जाय पर जयदेव क्या कहेगा। जब जाना नहीं था, तो फिर उसने जयदेव से कल कहा ही क्यों? और फिर जयदेव अपने मन में क्या सोचेगा। कहेगा मैं कितनी झूठी हूँ यदि चली ही जाती तो क्या हानि थी।

रामा ने अपने मन में निश्चय किया कि वह आज जयदेव से मिलेगी तो कह देगी की वह उसे हृदय से घृणा करती है और नहीं चाहती कि उससे मिले।

पर ऐसा वह उससे कह कैसे सकेगी। जयदेव की संगीत की धुन उसके कानों में गूँजने लगी। उसने अपने मन में सोचा—होगा किसी से मिल लेने में क्या हानि है।

अज्ञात प्रेरणा ने जैसे उस पर वश पा लिया। उसने कपड़े बदले बाल सँवारे और जाने को तैयार हुई तो माँ ने पूछा—कहाँ चली।

'जाती हूँ माँ तनिक देर के लिये।'

'दिन भर तो जी नहीं ठीक रहा और अब चली घूमने।'

'दिन भर घर में बैठे बैठे जी ऊब गया माँ।'

'तो जा पर जल्दी आ जाना।'

'अच्छा।'

घर से बाहर ही निकली थी कि अंजनी मिल गई। रामा ने उसे अपने पास बुलाया कहा—यहाँ आ अंजनी, तुझे तो मैं आज खोज ही रही थी।

'कहाँ खोज रही थी रे।'

रामा हँस पड़ी; अंजनी के गले में हाथ डाल वह, गाँव के बाहर की ओर चल पड़ी। अंजनी ने कहा—क्यों खोज रही थी।

'तुझसे कुछ बातें करनी थीं।'

'क्या ?'

'चल बताऊँगी।'

'गाँव से बाहर आने पर अंजनी ने पूछा—ऐसी कौन सी बात है जो गाँव से बाहर आकर तू बतायेगी।

'बात ऐसी है अंजनी।'

'अच्छा।' कह कर अंजनी वहीं बैठ गई बोली—तो अब मैं आगे नहीं जाती। तू भी बैठ बातें कर लेंगे तब चलेंगे।

रामा को बैठना पड़ा।

रामा को चुप देख अंजनी ने कहा—अच्छा कह अब सब!

'हाँ कहती हूँ इतनी उतावली क्यों हो रही है।'

'अच्छा भाई उतावली नहीं होऊँगी।'

'कल मुझसे जयदेव से भेंट हो गयी।'

'नाम लेती है रे तेरा उससे ब्याह होने वाला है।'

'जब हो जायगा तब नहीं नाम लूँगी पर अभी नाम लेने में क्या हर्ज ।'

'अच्छा तो ? प्यार करने लगी ।'

'हँसी छोड़ नहीं मैं न बताऊँगी ।'

नहीं, नहीं कह ? कहाँ मिल गया वह तुझे ।'

'मैं कल शाम को टहलती उधर निकल गई ।' रामा ने उँगली से दिशा की ओर इंगित किया ।

'अच्छा ।'

'वहाँ एकान्त में मैं बैठ गई । जी में आया कि थोड़ी देर बैठी रहूँ ।'

'मिलने की जगह तो तूने अच्छी चुनी थी ।

'फिर बोली ।'

'अच्छा नहीं ।'

'जयदेव पहले ही मिला था । मुझसे बात करने को बड़ा इच्छुक जान पड़ता था पर मैंने फटकार दिया तो अपना सा मुँह लेकर चला गया ।'

'तो उसको तुझसे प्रेम हो गया है ।'

'होगा इससे क्या तू बात सुन ।'

'हाँ ।'

'फिर मैं वहाँ एकान्त में बैठ गाने लगी ।'

'.........'

'गीत समाप्त हुआ तो दूर पर किसी के गाने की आवाज सुनाई पड़ी । गाना बड़ा अच्छा था और गला भी बहुत सुरीला सो मैं सुनती रही ।'

'इसी को तो प्रेम कहते हैं ।'

'होगा ! फिर जब उसका गीत समाप्त हुआ तो मैंने दूसरा गीत गाया ।

'यह होड़ा-होड़ी हो रही थी।'

'अरे नहीं, यों ही मुझे भी जाने क्या सूझा था। इस बार वह मेरे सामने आकर खड़ा हो गया बोला—आप बड़ा अच्छा गा लेती हैं।'

'चल, अभी से तेरी प्रशंसा शुरू हो गई।'

'मैं सकुचा गई। उसका गाना मुझे बहुत रुचा था। मैंने उससे कहा तो उसने कहा यदि अच्छा लगा हो तो और गाऊँ।'

'कहता क्यों न।'

'मैंने कह दिया तो उसने एक बहुत सुन्दर गीत गाया।'

'बस बस समझ गई। तो यह कह कि प्रेम शुरू हो गया।'

'अंजनी तेरा परिहास मुझे बुरा लगता है।'

'परिहास की इसमें क्या बात प्रेम कोई पाप थोड़े ही है।'

'न होगा पर यहाँ प्रेम कहाँ हो गया।'

'अरे मुझ से यह क्या कहती है। जैसे मैं कुछ जानती ही नहीं। आज दोनों ने फिर मिलने को सोचा होगा। जा आज वह तुझे मिलेगा अवश्य।'

'नहीं रे मैं नहीं जाती।' सकुचा कर रामा ने कहा।

'जायगी क्यों नहीं। आज वह तेरी प्रतीक्षा में अवश्य वहाँ जायेगा।'

'यह तो उसने चलते समय कहा था।' रामा के मुँह से निकल गया।

'वह तो मैं पहले ही से जानती थी।'

'धत्। इसी से तो मैं तुझे कुछ बताती नहीं।'

'पर बिना बताये तुझसे रह क्यों जायगा।'

'रामा मुस्करा दी बोली—हाँ, पर आज मैं नहीं जाना चाहती।'

'क्यों।'

'यों ही।'

'नहीं जा बेचारा तड़प रहा होगा तेरा चाँद सा मुखड़ा देखने को।'

'तो तू भी चल।'

'मैं।'

'हाँ रे तू।'

'न बाबा, मैं तेरे भाग्य में हिस्सा नहीं बँटाती।'

'चल फिर हँसी करना।'

'नहीं भाई मुझे अभी बहुत काम है। तू जा।'

रामा उसे लाख कहती रही पर अंजनी न रुकी।

जब वह चली गई तो रामा थोड़ी देर तक वहीं उसी प्रकार बैठी रही। फिर उठ कर वह उसी ओर चल पड़ी जहाँ जयदेव से उसकी भेंट हुई थी। वहाँ पहुँचते ही उसने देखा जयदेव पहले से ही बैठा है। रामा को देख कर वह उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—आ गई मैंने तो सोचा था कि शायद भूल गई होगी।

'आज मेरा जी अच्छा नहीं था सोचा तो कि न चलूँ।' रामा ने संकोच से कहा।

जयदेव मुस्कराया। जीवन का उसे अनुभव है। सोचा तीर निशाने पर लगा जान पड़ता है।

फिर दोनों में बातें होती रहीं। जयदेव ने रामा से गाने का अनुरोध किया पर आज उसका जी न हो रहा था उसने कहा—आज मेरी तबीयत ठीक नहीं मैं गा न सकूँगी।

जयदेव ने अधिक आग्रह न किया। रामा ने उससे जो कहा तो उसने एक मधुर गीत गाया। रामा खोई सोई सी उसका गीत सुनती रही।

देर होती देख रामा ने कहा—अब चलना चाहिये। माँ घर पर राह जोह रही होंगी।

'हाँ चलो।'

दोनों चलने लगे। खेतों के किनारे झंखाड़ उग आई थी। रामा की धोती उलझ गई। रामा उसे छुड़ाने के लिये झुकी ही थी कि

जयदेव ने भी झुक कर उसकी धोती मुक्त करनी चाही। दोनों की उँगलियाँ एक दूसरे से छू गईं। रामा के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। अपना हाथ वह पीछे न खींच सकी। ठगी सी क्षण भर वह बैठी ही झुकी रही। जयदेव ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। रामा थर थर काँप रही थी।

जयदेव ने उसका हाथ अपने हाथ में लिये हुये कहा—रामा!

कठिनता से रामा के मुख से निकला—हाँ, क्या?

'तुम कितनी सुन्दर हो कितनी आकर्षक?'

रामा कुछ कह न सकी। चाह कर भी वह अपना हाथ न खींच सकी।

जयदेव ने फिर कहा—जिस क्षण से तुम्हें देखा है रामा प्रत्येक क्षण तुम मेरी आँखों में छाई रहती हो।

रामा चुप रही और जयदेव कहता गया—

'तुम्हारी माँ ने विवाह के लिये प्रस्ताव किया है तभी से तुम्हें देखने की इच्छा थी। अब सोचता हूँ एक क्षण भी तुम्हारे बिना बिता न सकूँगा।

क्या कहे रामा। इसके लिये तो वह तैयार होकर न आई थी।

जयदेव ने फिर कहा—रामा तुम्हें मुझे एक वचन देना होगा। मुझ पर एक कृपा करनी होगी। मैं तुम्हारे बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता। बोलो क्या तुम रोज मुझसे मिल सकोगी।

रामा चुप रही।

जयदेव ने फिर पूछा—बताओ रामा।

'क्या?' कठिनता से उसके मुख से निकला।

'तुम फिर मिलोगी।'

'हाँ।'

जयदेव ने उसके हाथ को दबा दिया; बोला—रामा तुम कितनी अच्छी हो। जितनी तुम सुन्दर हो उतना ही तुम्हारा हृदय भी सुन्दर है।

रामा ने अपना हाथ खींच लिया और जयदेव की ओर क्षण भर देखती रही। फिर धीरे धीरे आगे की ओर चल पड़ी। जयदेव साथ साथ चल रहा था। गाँव निकट आया तो जयदेव ने दूसरा रास्ता पकड़ते हुये कहा—रामा भूलना नहीं। मिलना कल!

रामा ने एक बार उसकी ओर देखा। फिर आँखें नीची किये वह चल दी।

गली के निकास पर ही आई थी कि जाने किधर से अंजनी आ गई, बोली—ऐसी बेचैनी क्या थी रामा, ब्याह तो हो जाने देती।

रामा ने कोई उत्तर न दिया वह आगे बढ़ती रही। अंजनी ने उसे पकड़ लिया, कहा—मिल आई अपने प्रेमी से।

हट अंजनी मुझे परेशान न कर।' रामा ने कहा और अपने को छुड़ा कर वह चल पड़ी।

अंजनी ने एक बार रामा को ध्यान से देखा। रामा का मुख देख कर वह क्षण भर ठिठक गई। अवश्य आज कोई अनहोनी घटना घटी है।

उसने रामा का हाथ पकड़ साथ-साथ चलते हुये कहा—बता रामा कोई विशेष बात हुई क्या?

'तू जा अपना काम कर।'

'मैं नहीं जाती।'

'तो जा भाड़ में।'

'रामा।'

'क्यों मेरी जान खा रही है।'

'तुझे बताना होगा! यह तेवर क्यों है।'

'कुछ नहीं भाई जा, मैं कहती हूँ जा।' चीख कर रामा ने कहा।

अंजनी ने उसका हाथ छोड़ दिया और चुपचाप एक ओर को चल दी। रामा सिर नीचा किये हुये घर आई और कमरे में जा चारपाई पर लेट रही। माँ ने पूछा तो उसने कहा—माँ मेरी तबीयत

ठीक नहीं। मैं खाना न खाऊँगी। मुझे सोने देना।

'मैं तो कहती थी कि जब जी ठीक नहीं तो फिर बाहर जाने की कोई जरूरत नहीं पर जब तू माने तब न!' माँ ने कहा ?

रामा कुछ न बोली। माँ पास आ गईं बोलीं—क्या बात है।

फिर रामा का मुख देख कहा—अरे तेरा तो मुँह तमतमाया हुआ है। बुखार न आ जाय भगवान! आज कल दिन बड़े खराब हैं।

उस दिन माँ ने खाना न बनाया। रामा के ही पास बैठी रहीं। पर रामा को लग रहा था कि माँ वहाँ से चली जाँय और उसे अकेली छोड़ दें।

पर उसके बाद भी रामा अपने को जयदेव से मिलने से न रोक सकी। वे दोनों मिलते रहे। माँ विवाह की बात तै कर रही थीं। जयदेव की ओर से कोई बाधा तो थी नहीं। जयदेव तो चाहता ही था कि जितना शीघ्र हो सके सब निश्चित हो जाय पर ब्याह तो सायत से ही होगा।

माँ ने तिलक की तिथि निश्चित कर दी। दीवाली के दिन ही तिलक की सायत थी। रामा के हृदय में उत्साह था। पर आज जब दीवाली आई तो सहसा रामा को बार बार जाने क्यों सदाशिव की सुधि आने लगी। सदाशिव को उसने बहुत भुलाने का प्रयत्न किया पर आज तक भुला नहीं पाई।

दोपहर को जयदेव से भेंट हो गई। जयदेव ने मुस्करा कर कहा—रामा आज दीवाली है। हमारे जीवन में भी प्रथम दीप का प्रतिष्ठान होगा।

'हाँ।' रामा ने कहा।

'कितना सुखमय दिन है यह आज का।'

'मैं क्या जानूँ।'

'तुम न जानो पर मेरे लिये तो आज का दिन जीवन का सब से भाग्यशाली दिन है।'

रामा हँस पड़ी।

शाम को वह द्वार पर दीप सजा रही थी तो माँ ने भीतर से पुकारा—रामा यहाँ आ तू कहाँ घूमती फिर रही है।

'क्यों माँ।' रामा भाग कर भीतर आई।

तिलक का सारा सामान रखा हुआ था। तिलक ले जाने वाले भी बैठे थे। माँ हल्दी पीस कर एक कटोरी में लिये हुये थीं। रामा को अपने पास बिठा कर उन्होंने उसकी हथेली में हल्दी लगा दी और फिर उसकी एक छाप कपड़े के एक थान पर लगा दी।

रामा यह सब देखती रही।

जब तिलक चली गई तो रामा फिर बाहर भाग आई और जगमग जगमग करते दीपों की बाती उकसाने लगी। प्रकाश बढ़ गया और उस प्रकाश में रामा ने देखा कि सदाशिव की धुँधली आकृति प्रगट हो गई है। जैसे वह बकरी के बच्चे को रामा को दे रहा हो।

१०

श्यामा न मिली। सदाशिव बहुत रात गये घर लौटा। उसका शरीर पीड़ा के मारे जैसे चूर हुआ जा रहा था। आँखें फटी पड़ रही थीं। आकर वह द्वार पर पड़ी एक चारपाई पर गिर पड़ा। माँ ने बाहर किसी के आने की आहट सुनी तो तुरन्त ही वह बाहर आ गईं दिन भर वह सदाशिव को लेकर बहुत परेशान रहीं। शाम तक जब सदाशिव नहीं लौटा तब उसे खोजने निकलीं। अजीब है यह सदाशिव आज दिवाली है और शाम तक वह घर नहीं लौटा। माँ को लग रहा

था कि इस वर्ष वह दिवाली न मना सकेगी। साल भर बाद तो यह त्योहार आता है और यह सदाशिव है कि उसे किसी की चिन्ता नहीं। घर का दिया ही जब ऐसा हो रहा हो।तब बेचारी माँ इन मिट्टी के दीयों को क्या जलाये।

माँ ने जब गाँव में लोगों से पूछा तो पता लगा कि सदाशिव की श्यामा खो गई है उसी को खोजने के लिये वह दोपहर से घूम रहा है। इस समय कहाँ हो यह नहीं कहा जा सकता। माँ विपिन के यहाँ गई। विपिन घर पर नहीं था। विपिन की माँ बैठी दिवाली के दिये ठीक कर रही थीं। सदाशिव की माँ को देखकर वे उठ खड़ी हुईं और कहा—आओ बहिन कैसे आज आ गईं इधर?

'क्या बताऊँ बहिन अपने तो भाग्य ऐसे हैं कि दिन रात रोना ही पड़ रहा है।' सदाशिव की माँ ने कहा।

'क्यों क्या हुआ।'

'होगा क्या आज दोपहर से सदाशिव का पता नहीं है।'

'पता नहीं, दोपहर को वह कहाँ था।'

विपिन की बहू ने सदाशिव की बात सुनी तो आकर बोली—क्या हुआ चाची।

'सदाशिव जाने कहाँ चला गया है।'

'दोपहर को तो दोनों जने खाना खा रहे थे।'

'हाँ।' विपिन की माँ ने कहा।'

'उसकी श्यामा कहीं खो गई थी उसी को खोजने चला गया है।' सदाशिव की माँ ने कहा।

'हाँ हाँ, दोपहर खाते खाते उन्हें सहसा श्यामा की याद आ गई तो वे खाना छोड़ कर चल दिये।'

'ऐसा लड़का है।' विपिन की माँ ने कहा।

'सबने उन्हें बहुत रोका कि खाना खाकर तब जाना पर किसी की बात उन्होंने नहीं सुनी।' विपिन की बहू ने कहा।

सदाशिव की माँ ने कहा—उस श्यामा को वह इतना चाहता है कि उसके पीछे पागल हो गया है।

'माँ तुम लल्ला का विवाह कर दो।'

'करना तो बहुत चाहती हूँ, बहू पर जब वह राजी हो तब न।'

'राजी क्यों न होंगे।

'कोई लड़की ही उसे पसन्द नहीं आती।'

'सब पसन्द आयेगी। जिससे तुम उसका विवाह कर दोगी उसी को पसन्द करना पड़ेगा।'

'यह तो है बहू ! अब तुम्हारा ही प्रस्ताव क्या बुरा था पर वह मानता ही नहीं।'

भाभी क्षण भर चुप रहीं फिर कहा—एक बात और है चाची !

'क्या बहू।'

'मेरे यहाँ जो रामा आई थी उसे तो तुमने देखा था।'

'हाँ। देखा क्यों नहीं।'

'वह लल्ला के लिये कैसी होगी।'

'अरे उसका क्या कहना है। लक्ष्मी है लक्ष्मी पर जब सदाशिव राजी हो तब तो।' माँ ने निराश होकर कहा।

'राजी हो जायेंगे।'

'तूने बात की है क्या बहू।, विपिन की माँ ने हँस कर कहा।

'यही समझो माँ उन्हें ऐसी ही लड़की पसन्द है।,

'तो बहू तू सदाशिव का ब्याह तै करा।' विपिन की माँ ने कहा।

'मैंने कहा तो है देखो।'

'लड़की अच्छी है।' सदाशिव की माँ ने कहा।

'पर एक उसमें कठिनाई है।' विपिन की बहू ने कहा।

'क्या ?'

'रामा की माँ ऐसा लड़का चाहती है जो उन्हीं के यहाँ रहे ! उनके पास काफ़ी जायदाद है। खाने पीने से बड़े मजे में हैं।'

'तो यह तो न होगा बहू ।'

'क्यों ?'

'अपने सदाशिव को मैं भला अपने से अलग कैसे कर सकती हूँ ।'

'हाँ यही कठिनाई है पर तुम्हारी जिन्दगी कितने दिन की । आज आँख मूँदो कल दूसरा दिन ।'

'हाँ यह तो है ही ।'

'देखो यदि यह विवाह तै हो गया तो लल्ला ठीक हो जायँगे ।'

'देखो ।' सदाशिव की माँ ने एक निश्वास खींच कर कहा ।

विपिन की बहू चुप रही ।

बातें हो ही रही थीं कि विपिन बाहर से आ गया । सदाशिव की माँ को देख कर उसने पूछा—कहो चाची कैसी हो ।

'अच्छी हूँ बेटा ।'

'सदाशिव आया ।'

अभी कहाँ बेटा ।'

'श्यामा नहीं मिली ।'

'मुझे क्या पता । वह तो सुबह से ही घर से निकला है ।'

'अच्छा, कुछ पता है कहाँ गया ।'

'कहीं श्यामा की खोज में गया होगा ।'

विपिन थोड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने कहा—चाची तुम शायद उसी की खोज में निकली हो ।

'हाँ ।'

'अच्छा तुम घर जाओ । मैं देखता हूँ कहाँ है ।'

'हाँ बेटा, पता लगा । जाने कहाँ है आज त्योहार का दिन और उसका अभी तक पता नहीं । दोपहर को खाना बना कर उसकी राह देखती बैठी रही और वह न आया ।'

'तो तुमने खाना भी न खाया होगा ।'

'कैसे खाती बेटा । जब···'माँ का हृदय भर आया ।

विपिन ने अपनी माँ से कहा—माँ चाची को तुम खिला पिला कर भेजना। यों ही न जाने देना। यह सदाशिव ऐसा है कि बेचारी चाची के कष्ट का तनिक भी ध्यान नहीं रखता।

विपिन बाहर जाने लगा तो सदाशिव की माँ ने कहा—बेटा, अब खाने पीने की न कहो। शाम हो रही है दिये भी तो आज जलाने हैं। विपिन ने कोई उत्तर न दिया। वह घर के बाहर चला गया तो सदाशिव की माँ विपिन की माँ से किसी प्रकार छुट्टी लेकर घर की ओर चल पड़ी।

राह में उन्हें रामा का ध्यान आया। उन्होंने रामा को देखा है लड़की अच्छी है। कितनी सुन्दर है वह। यदि वह सदाशिव की बहू हो सके तो कितना अच्छा हो। जब रामा विपिन के यहाँ आई थी तो एक दिन सदाशिव की माँ उसके यहाँ गई थी। विपिन की बहू ने उससे रामा का परिचय कराया था। कितनी सरल वह है। बहुत देर तक बैठी वह सदाशिव की माँ से बातें करती रही। विपिन की बहू ने कहा था—चाची यह तो तुमसे बहुत घुल मिल गई।

रामा हँस दी थी पर कहा उसने कुछ नहीं था।

माँ ने बाहर आकर देखा तो सदाशिव चारपाई पर पड़ा था। माँ ने कहा—कहाँ घूमता रहा तू!

सदाशिव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

माँ ने कहा—सदाशिव!

'हाँ!' सदाशिव की आवाज भारी थी।

'श्यामा नहीं मिली?'

'नहीं माँ।' और वह रो पड़ा।

माँ उसके पास आ गई बोली—तो रोता क्यों है।

'माँ जाने कहाँ वह चली गई।'

'चली कहाँ जायगी। कहीं होगी मिल जायगी।

'अब वह नहीं मिलेगी माँ।'

'क्यों नहीं मिलेगी।'

'मैंने बहुत खोजा पर वह न मिली। जान पड़ता है—'

'क्या जान पड़ता है।'

'भेड़िया उठा ले गया।'

माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया। सम्भव है भेड़िया उठा ले गया हो। आज कल गाँव में भेड़िये अधिक आने लगे हैं। अभी उस दिन सुखुआ कि बकरी रात को छूट गई थी फिर बेचारी का पता नहीं लगा। दूसरे दिन गाँव से बाहर खेत में उसकी हड्डियाँ दिखाई दी थीं। माँ कह उठीं।

किन्तु सदाशिव को सान्तवना तो देनी ही है। उन्होंने कहा—तो बेटा उसमें शोक करने की क्या बात! बकरी का बच्चा ठहरा वह नहीं दूसरा पाल लेना।

'पर माँ श्यामा।'

हाँ श्यामा!' माँ कुछ कह न सकीं। उन्हें जान पड़ा कि सदाशिव के हृदय में श्यामा के प्रति कितना अगाध प्रेम था।

रात में सदाशिव को ज्वर हो आया माँ रात भर जागती रही। प्रातः काल उनका भी शरीर भारी था। पर सदाशिव बीमार हो गया है उन्हें उसकी देख रेख करनी है। वे अपने दुख को दबा कर उसकी परिचर्या करती रहीं। सदाशिव का ज्वर तीव्र तर होता जाता था। वह ज्वर की अवस्था में बार बार श्यामा को पुकारता।

गाँव में कोई वैद्य नहीं है। एक वैद्य है। शेरगढ़ में रहते हैं। जब सदाशिव की दशा अधिक खराब जान पड़ी तो माँ ने उन्हें बुलाया। दवा शुरू हो गई।

पर तो भी तबीयत ठीक न हुई। दो तीन दिन के बराबर परिश्रम के कारण उनकी तबीयत और खराब हो गई और उन्हें भी ज्वर आने लगा। घर में माँ बेटे बीमार पड़ गये तो विपिन की माँ रोज आकर

उनका सारा काम कर जाती थी। सदाशिव अच्छा हो रहा था। पर माँ की तबीयत न सुधर रही थी। आठवें दिन सदाशिव की तबीयत सुधरी पर माँ का ज्वर बराबर बढ़ता ही जा रहा था। अच्छे होने पर सदाशिव ने माँ की सेवा करने में कोई कोर कसर न रखी! दिन रात वह उसके पास ही बैठा रहता पर माँ की यह शायद अंतिम बीमारी थी। उनकी दशा बिगड़ती ही गई और एक दिन वे सदाशिव को इस संसार में अकेला छोड़ कर चल दीं।

सदाशिव असहाय हो गया। संसार में उसे केवल माँ का ही सहारा था। उसी की ममता पर उसका जीवन चल रहा था परन्तु अब तो उसका संसार में कोई नहीं था। उसने कभी नहीं सोचा था कि जीवन में वह इतना असहाय हो जायगा। रामा को उसने प्यार किया परन्तु उससे उसे उसका प्रतिदान न मिला। उसने श्यामा को अपने जीवन का आधार बनाया परन्तु वह आधार भी जाता रहा। और अब एक माँ ही उसकी संसार में रह गई थी। उसने भी उसका साथ छोड़ दिया। हाय रे सदाशिव।

जिस दिन माँ मरी विपिन गाँव आया था। समशान से लौटने के बाद सदाशिव ने कहा विपिन भैया अब क्या होगा।

'होगा क्या सदाशिव, यह तो संसार का नियम ही है।

'हाँ भैया पर अब मैं कहाँ जाऊँ।'

'इतना निराश क्यों होते हो सदाशिव एक माँ मर गई तो मेरी माँ तो अभी तुम्हारे लिये हैं ही।'

'तुम्हारा बहुत स्नेह मिला है भैया पर अब तो मेरे लिये सारा संसार शून्य दिखाई पड़ता है।'

'ऐसा न सोचो सदाशिव।'

'क्या करूँ भैया।'

'इससे मनुष्य निर्बल हो जाता है। मनुष्य को चाहिये कि वह जो कुछ सामने आये उसका धैर्य के साथ सामना करे।'

'करूँगा ही भैया !'

'मेरे रहते तुम्हें कोई कष्ट न होगा सदाशिव ।'

'तुम्हारा ही तो अब सहारा है भैया ।'

उसी दिन विपिन ने सोचा कि सदाशिव का विवाह होना अब अत्यन्त आवश्यक है। इसी कारण उसने सदाशिव से माँ की बर्षी भी तेरहवीं के साथ ही कर देने की सम्मति दी। सदाशिव भी सब कार्य से एक बारगी मुक्ति पाना चाहता था इसलिये उसने विपिन की राय मान ली।

विपिन ने सोचा रामा के विवाह की चर्चा चलाने के लिये पत्र लिखने की अपेक्षा उसका स्वयं जाना ही उचित होगा यह सोच कर एक दिन वह रामा के यहाँ गया।

परन्तु वहाँ की स्थिति देख कर उसकी रही सही आशा भी जाती रही। रामा की माँ ने बताया कि रामा का विवाह उसने जयदेव से निश्चित कर दिया है। दिवाली के दिन तिलक भी चढ़ गई अब माघ में विवाह हो जायगा।

विपिन क्या कहता ऐसा लगा जैसे पर्दे के पीछे से अदृश्य ही सब कुछ कर रहा हो। वह चला आया।

दूसरे बार वह गाँव आया तो उसने सदाशिव को बुलाकर कहा—सदाशिव अब माँ नहीं रही इसलिये मैं समझता हूँ माँ की जिम्मेदारी अब मुझ पर ही है।

'वह तो है ही भैया।'

'तो अब विवाह के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है !'

सदाशिव चुप रहा।

'बोलो !'

'मैं क्या कहूँ !'

'हाँ, अब तुझे व्याह कर लेना चाहिये नहीं गृहस्थी बिगड़ जायगी।

सदाशिव थोड़ी देर तक चुप रहा फिर उसने कहा—भैया रामा के सम्बन्ध में !—

'वह बात तुम्हें अब भूलनी होगी !'

सदाशिव ने आश्चर्य के साथ विपिन की ओर देखा।

विपिन ने फिर कहा—सदाशिव रामा अब तुम्हारी नहीं हो सकती। बहुत साहस करके उसने कहा—क्यों ?

'उसका विवाह निश्चित हो गया।'

सदाशिव चुप रहा। सिर झुका कर वह सोचता रहा। तो क्या हर प्रकार से इस समय विधाता उसके प्रतिकूल है।

विपिन ने फिर कहा—सदाशिव उसका विचार तुम छोड़ दो। अब वह मृगमरीचिका है, उसका तिलक चढ़ चुका है। माघ में उसका विवाह होगा !

सदाशिव ने एक बार विपिन की ओर देखा !

'मैं पिछले इतवार को उनके यहाँ गया था।'

एक निश्वास खींच सदाशिव दूसरी ओर देखने लगा।

'अब तुम्हें कोई लड़की पसन्द करके विवाह कर लेना चाहिये !'

सदाशिव ने कहा—अब विधाता ने ही मेरा सारा खेल बिगाड़ दिया ! तब फिर उस को बनाने का प्रयत्न क्यों करूँ भैया !'

'यह तुम्हारा अजीब विचार है सदाशिव।'

'यह मेरा विचार नहीं पर शायद यही होनहार है।'

'तो क्या तुम आजीवन कुँवारे ही रहना चाहते हो।'

'और क्या कहूँ।'

'यह भी तुम्हारा कोई प्रेम है कि अपना जीवन एक साधारण सी बात के पीछे गँवाने को तुले हो।

'भैया, मैंने इस सम्बन्ध में विचार कर लिया है। तुमने शायद सोचा नहीं ! भगवान को यही इष्ट है। उस दिन दिवाली के दिन ही

जब श्यामा खो गई तभी मैंने सोचा था कि कोई दुःखद घटना घटने वाली है। इसीलिये मैं बहुत दुःखी था। वही हुआ।'

'सदाशिव मेरी राय में तुम यदि किसी लड़की से विवाह कर लोगे तो रामा को अवश्य भूल जाओगे।'

'मुझे आशा नहीं।'

'रामा से भी अच्छी लड़कियाँ मिल सकती हैं।'

'पर भैया अब यह न होगा।'

'खैर तुम्हारी इच्छा। पर मेरी यही राय है।'

'तुम्हारी राय भैया मैं कभी न टालता पर बाध्य हूँ।'

'कोई हानि नहीं फिर सोचना। पर साथ ही तुम रामा को भूलने का प्रयत्न करो। जीवन में जो वस्तु अप्राप्य हो जाय उसके लिये जीवन नष्ट करना कहाँ की बुद्धिमानी है।'

'प्रयत्न करूँगा।'

पर क्या प्रयत्न करेगा बेचारा सदाशिव। वह जानता है कि रामा उसके जीवन में इतनी अडिग होकर बैठ गई है कि आज तक उसने उसे भुलाने का इतना प्रयत्न किया पर भुला नहीं सका।

विधि का यह विधान ही तो है। नहीं उसे आज यह दिन क्यों देखना पड़ता। जयदेवी को वह कितना प्यार करता था और जयदेवी भी तो उसे आज तक कितना प्यार करती है। यदि उसने जयदेवी से विवाह करके शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत किया होता तो आज उसे इतना कष्ट क्यों होता। किन्तु नहीं वह ऐसा नहीं कर सका। फिर जयदेवी दूसरे की हो गई और उसके बाद उसने रामा को प्यार किया और अब रामा भी दूसरे की हो गई। रामा का उसके जीवन में अस्तित्व ही क्या है जिसे लेकर वह जीवित रह सके। एक बार भी रामा ने न कहा कि वह उसे प्यार करती है। यदि जीवन में कभी रामा से उसकी भेंट होगी तो वह अवश्य ही एक बार रामा से पूछेगा! पर क्या? यह तो उसे ज्ञात नहीं।

रात में वह अपने घर में एकाकी लेटा विचारों की लड़ियाँ पिरोता रहा। अनेक प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में आ रहे थे। अन्त में वह उठ कर कमरे में टहलता रहा। जब फिर भी तबीयत न लगी तब वह दरवाजा खोल कर बाहर आ गया और एक ओर को चलने लगा।

दूसरे दिन लोगों ने देखा सदाशिव के घर का दरवाजा खुला है। और सदाशिव का पता नहीं। गाँव वालों ने बहुत खोज की परन्तु सदाशिव का कहीं पता न लगा। सदाशिव कहाँ चला गया वह बात एक रहस्य बन कर रह गई।

—

५१

अंजनी के खेत में सिंचाई हो रही थी। प्रातः ही वह उधर चली गई थी। खेत गाँव से काफी दूर पड़ता है। दोपहर को जब वह लौट रही थी तो थक कर एक पेड़ के नीचे बैठ गई। अंजनी का स्वभाव है कि वह बहुधा अपने भविष्य पर विचार किया करती है। जीवन में अनेक उत्थान पतन उसने देखे हैं। वह सुन्दर है, उसकी आँखों में किसी भी युवक को आकर्षित करने की सामर्थ है। गाँव का ऐसा शायद ही कोई युवक हो जो उसकी ओर आकर्षित न हुआ हो, सभी ने उसके निकट प्रेम याचना की परन्तु अंजनी थी कि सब कुछ झेलती रही। जीवन में उसने रामाधार को प्रेम किया था और जब रामाधार के ऊपर गाँव के जमीदार ने नालिस की, उसका घर बार बिक गया तब वह कितनी रोई थी उसने रामाधार को अपने जीवन में घुला मिला लिया था। सोचा था रामाधार की होकर वह जीवन में एक बार अपने व्यक्तित्व को घुला सकेगी। गाँव में जब रामाधार का कुछ रह न गया तब गाँव छोड़ कर कहीं अन्यत्र चले जाने का उसने निश्चय किया। जाते समय

उसने अंजनी से कहा था—अंजनी, तुम्हें मैं भूल नहीं सकता यदि कहीं मैं इस योग्य हो सका तो अवश्य ही आकर तुम्हें अपनी बनाऊँगा।

अंजनी उसी भविष्य की आशा पर अब तक समय काट रही है जब कभी उसके विवाह की चर्चा होती है वह बराबर कोई न कोई बाधा उपस्थित कर देती है। उसे आशा जो है कि रामाधार आयेगा और अवश्य आयेगा। जब कभी उसकी वेदना अधिक बढ़ जाती है तब वह गाकर अपने हृदय को हलका कर लेती है। उसका कंठ इतना मधुर है कि गाँव की सभी स्त्रियाँ उससे ईर्षा करती हैं। जहाँ कहीं भी गाने बजाने की बात होती है। वहाँ अंजनी अवश्य बुलाई जाती है।

आज वह बहुत उदास था। दोपहरी के सुनसान वातावरण में वह और भी उदास हो उठी। सामने हरे भरे खेत फैले हुये थे। दोपहर को खेत से लौटते हुये बैलों के गले में पड़ी घंटियों की आवाज उसे दूर से सुनाई पड़ती थी। यह मार्ग सुनसान है, बहुत कम कोई इधर से आता जाता है। मन उसका गाने का हो उठा तो वह गाने लगी—

प्रियतम दूर देश के वासी!

उनकी सुधि फिर क्यों आकर के
आखों में भर रही उदासी।
बीते सपनों का भूला जग,
करना दुर्गम है अपना मग
व्यथा भरा यह सारा अग जग
देख रही यह आँखें प्यासी!
प्रियतम दूर देश के वासी!

जयदेव उधर से जा रहा था। अंजनी की सुमधुर आवाज सुन कर ठिठक गया! कौन है जो इतने मधुर कंठ से गा रही है। वह निकट आया तो देखा अंजनी ध्यान मग्न सी गा रही है। अच्छा तो यह अंजनी है। इसी के सम्बन्ध में रामा उस दिन कहती थी। स्वर में कितनी पीड़ा है। अंजनी को उसने अनेक बार देखा है पर इतना

आकर्षित वह उसके प्रति कभी नहीं हुआ। वह क्षण भर खड़ा बेसुध उसके सौंदर्य सुधा को पीता रहा फिर जब उसका स्वर रुका तो वह पास आकर बोल—किस दूर देश बासी प्रियतम की याद हो रही है।

चौंक कर अंजनी ने उसकी ओर देखा। जयदेव है। वह क्षण भर उसे देखती रही। जयदेव में उसे रामाधार की भूली तस्वीर दीख पड़ी। आज पहली बार उसने जयदेव को इतने निकठ से देखा था। वह खड़ा मुस्करा रहा था। रामाधार, ऐसे ही तो उसके बाल थे, जयदेव की भाँति वह बन ठन कर रहता था। इसके अधरों की मुस्कान भी बिलकुल उसी की सी है। अंजनी ने एक निश्वास खींची और उट कर खड़ी हो गई।

'बैठो अंजनी, कितना मधुर तुम गाती हो। जी में आता है कि सदा ही तुम्हारा गीत सुनता रहूँ।'

मुस्करा कर अंजनी ने कहा—रामा से अच्छा तो मैं नहीं गाती।

'रामा! अंजनी, वह गाना क्या जाने।'

'तुम्हें तो ऐसा नहीं कहना चाहिये।'

'हाँ मानता हूँ, पर जो सत्य है उसे यदि मैं न भी कहूँ तो क्या?'

अंजनी चुप रही। जयदेव ने फिर कहा—अंजनी, मैं रामा से विवाह करके भूल करूँगा। सोचता हूँ, मुझे तुम्हारी जैसी पत्नी चाहिये।

अंजनी जी खोल कर हँसी। बोली—कहने से ही तो कुछ होता नहीं अपने जी से पूछो।

'जी से पूछने की बात कहती हो। यदि तुम मुझसे विवाह करो तो मैं आज भी रामा को ठुकरा सकता हूँ?'

अरे बात कहाँ की कहाँ पहुँच गई। अंजनी को लगा कि उससे भारी भूल हुई। उसने कहा—जयदेव बाबू आप क्षमा करेंगे हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये थी। अच्छा मुझे तो आज्ञा दें। और वह चल दी।

जयदेव खड़ा देखता रहा। रामा के साथ उसका विवाह अगले महीने में हो जायगा। वह निर्धन हो गया है रामा से व्याह करने के बाद उसे अपनी जीविका उपार्जन करने का प्रश्न नहीं रहेगा। यह क्या कुछ कम है पर यह अञ्जनी है बड़ी सुन्दर! यदि कहीं रामा को भी इसी प्रकार गाना आता होता! और रामा तो कुछ सीखने को तैयार भी नहीं है कितने बार उसने प्रयत्न किया कि रामा को गाना सिखाये पर इस ओर तो कभी ध्यान भी नहीं देती। उसमें शैशव की सी शेखी है जो कभी कभी उसे खलने लगती है।

उस दिन उसने निश्चय किया कि वह अञ्जनी को अपनी बनाकर ही रहेगा।

इस घटना के बाद अञ्जनी से उससे कई बार भेंट हुई। अंजनी सदा ही जयदेव से दूर रहने का प्रयत्न करती परन्तु कौन सी अज्ञात शक्ति उसे बराबर इसकी ओर खींचती चली आ रही थी। जयदेव में उसे रामाधार का ही रूप दिखाई पड़ता था।

एक दिन की बात है। सन्ध्या थी सुनहली धूप में गाँव की लड़कियों ने एक खेल रचा सब खेल रही थीं। अञ्जनी और रामा भी थी। खड़े कमल के खेतों के बीच लुका छिपी का खेल हो रहा था। इतने में उधर से जयदेव आगया। खेत की मेड़ के पास ही रामा और अञ्जनी छिपी हुई थीं। जयदेव ने उन्हें दूर से देख लिया तो उसने दबे पाँव उनके पीछे आकर अपनी हथेलियों से अञ्जनी की आँखें बन्द कर ली। रामा ने चौंक कर सिर ऊपर कर देखा जयदेव था।

जयदेव की उँगलियों को अञ्जनी ने छुआ और तुरन्त ही बोली—अच्छा जयदेव तुम हो छोड़ो।

जयदेव ने छोड़ दिया फिर अंजनी को देख वह जोर से हँसा और आगे बढ़ गया। अंजनी लज्जित हो गयी। रामा को यह सब अच्छा न लगा। तो क्या जयदेव और अञ्जनी पहले से एक दूसरे से परिचित हैं। नहीं जयदेव क्या ऐसा कर सकता था तो क्या वे दोनों परस्पर प्रेम करते

हैं। नहीं ऐसा नहीं हो सकता ! . मैंने यह क्या सोच लिया ! अञ्जनी मेरी सहेली है जयदेव ने इसी लिये ऐसा किया होगा।'

अञ्जनी ने रामा को गम्भीर देख कर पूछा क्या सोच रही हो रामा।

'कुछ तो नहीं।' रामा ने सचेत होकर उत्तर दिया।

'कुछ तो अवश्य ही सोच रही थी।'

रामा हँस पड़ी बोली—सोचती थी कि तूने अपना जादू उन पर भी चला दिया क्या ?

'धत् तू भी बड़ी सन्देही है रामा।'

'सन्देह नहीं करती केवल परिहास किया अञ्जनी।

'ऐसा भी परिहास होता है।'

रामा चुप रही।

पर रात भर उस दिन रामा को शान्ति से नींद नहीं आई। शीघ्र ही वह जयदेव की हो जायेगी। तिलक के बाद जयदेव अब उनके घर का ही प्राणी हो गया है। माँ बराबर उसका ध्यान रखती है। आज उसे लगा कि उसका विवाह जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी हो जाय तो अच्छा है। पर यह भी कोई अपने मान की बात है।

विवाह की तिथि के थोड़े से दिन शेष हैं पर अब उसे जैसे वह विलम्ब अधिक खलने लगा है।

दूसरे दिन जब जयदेव उसे मिला तो रामा ने कहा—तुमने कल अञ्जनी की आखें मूँद कर अच्छा नहीं किया।

जयदेव ने भोले बनते हुये कहा—क्यों ?

'किसी पराई स्त्री के साथ यह व्यवहार अच्छा नहीं।'

'पर वह तो तुम्हारी सखी है।'

'हो पर मेरे कारण तुम्हें मेरी सब सखियों के साथ तो ऐसा अधिकार नहीं मिल जाता।'

जयदेव को मन में लगा कि रामा को उससे यह सब कहने का अधिकार नहीं पर वह चुप रहा उसने कहा—अच्छी बात है अब ऐसा न होगा।

रामा उसको ध्यान से देख रही थी। जब जयदेव चला गया तो उसने मन में सोचा उसने व्यर्थ ही जयदेव पर सन्देह किया था। कितना भोला है बेचारा उसे अभी कुछ समझ नहीं है। कितना सरल हृदय है। मेरी सखी समझ कर ही उसने ऐसा किया नहीं अञ्जनी से उसका भला कब का परिचय था। पर अञ्जनी ने अपने मन में क्या सोचा होगा। उसे जयदेव का यह व्यवहार अवश्य बुरा लगा होगा। पर यह अञ्जनी भी कितनी विचित्र है उसने तुरन्त ही जयदेव को पहचान लिया। शायद उसने समझा हो मैंने उसकी आखें बन्द करली थी और मुझे लजाने के लिये उसने जयदेव का नाम लिया हो।

१२

रामा का विवाहित जीवन बहुत ही सुख मय बीत रहा था। जयदेव उसी के साथ रहने लगा था। माँ ने गृहस्थी का सारा भार रामा पर छोड़ दिया था। अब तक खेती बारी तथा जायदाद का सारा प्रबन्ध रामा की माँ ही करती थी परन्तु जब जयदेव उनके साथ रहने लगा तो माँ ने खेती बारी तथा जायदाद का सारा काम उसी के हाथों में सौंप दिया। आखिर अब उसको आवश्यकता ही क्या? पकी उम्र ठहरी आज की कल कौन जाने वह रहे न रहे।

जयदेव भी रामा का बहुत ध्यान रखता। प्रायः सारा समय वह रामा के साथ ही व्यतीत करता। चैत का महीना आया तो खेतों की कटाई शुरू हो गई। इस वर्ष रामा की खेती गाँव में सब से अच्छी थी। जब तक माँ सब प्रबन्ध देखती थी तब तक उन्हें दूसरों पर निर्भर

रहना पड़ता था पर अब जयदेव ने यह ढंग बदल दिया। उसे किसी बाहरी आदमी का विश्वास नहीं। उसने सारी फसल कटवा कर अपने घर के सामने वाले मैदान में एकत्र करवाई। रामा और जयदेव दोनों ही दिन भर मजदूरों के कामों की देख-रेख करते।

रामा को अपने इस नये जीवन में बड़ा आनन्द आ रहा था। जयदेव कभी कभी नगर जाता तो वह रामा के लिये शहर की स्त्रियों के शृंगार की चीजें लाता। रामा अपने भाग्य से सन्तुष्ट थी।

गर्मी के दिन आनन्द में बीत गये। रामा और जयदेव दोनों प्राणी आनन्द से रहते, काम अधिक था। कभी कभी अंजनी आ जाती पर अब वह पहले की भाँति न दिखाई पड़ती। उसके चेहरे पर भी पहले की उदासीनता न रहती वह सदैव ही हँसती रहती। रामा बहुधा परिहास में कहती—अंजनी आजकल तू बड़ी प्रसन्न रहती है क्या कारण है।

'जयदेव हँस कर कहता अंजनी का परदेशी प्रियतम अब आने वाला है न।'

रामा कहती—सच बता अंजनी रामाधार का कोई समाचार मिला।

अञ्जनी हँस कर कहती—उसका समाचार तो नहीं मिला पर इसमें क्या? क्या प्रसन्न रहना भी कोई अपराध है।

'नहीं नहीं मैं तो तुझे सदैव ही प्रसन्न देखना चाहती हूँ।'

'तभी तो तुम मुझे प्रसन्न देख कर चिढ़ाया करती हो?'

रामा हँस देती।

एक दिन रामा घर में ही थी। उसे कुछ काम करना था। जयदेव बाग़ में चला गया। रामा ने भी कह दिया था कि काम समाप्त कर के वह भी आती है। जयदेव अकेले थोड़ी देर बाग़ में बैठा रहा कि अञ्जनी आगई। जयदेव को देख कर बोली—मैं जानती थी कि तुम वहीं होगे।

'हाँ।'

'रामा कहाँ है।'

'घर पर ही है।'

'तो तुम यहाँ अकेले हो।'

'अकेले क्यों हूँ तुम जो हो।

अञ्जनी हँस दी बोली—रामा को कहीं पता लगा तो समझ लेना—

'क्या समझ लूँगा अञ्जनी; मुझे किसी को भी प्रेम करने का अधिकार है।'

'वह यहाँ नहीं है इसीलिये चाहे जो कह लो।'

'अञ्जनी तुम्हारे कारण ही मैं चुप हूँ नहीं तो मैं तो सब के सामने तुम्हें अपना लेने को तैयार हूँ।'

'मुझे तुम चाहे अपनाओ या न अपनाओ पर अपने प्रेम से बंचित न करो बस यही मैं चाहती हूँ!'

जयदेव ने अञ्जनी को बाहों में भर कर चूम लिया।

जयदेव ने कहा—अञ्जनी आओ आज तुम्हें आम खिलाऊँ।

यह कह कर वह एक पेड़ पर चढ़ गया और पके पके आम तोड़ कर नीचे गिराने लगा। अञ्जनी आम बिन रही थी और गा रही थी—

प्रियतम के संग में तरु तरु जा,
बीनूँ आम रसीले।

जयदेव पेड़ पर पत्तियों के बीच मुस्करा रहा था। अञ्जनी का आँचल आमों से भर गया। जयदेव ने कहा—अञ्जनी तुम मुझे देखो। मैं कहाँ हूँ।

अञ्जनी ने ऊपर की ओर दृष्टि की। जयदेव पत्तियों में छिपा था। अंजनी ने कहा—अरे तुम तो दिखाई नहीं पड़ते।

'पर मैं तो तुम्हें देख रहा हूँ।'

'तुम मुझे देखते रहने पर भी मुझसे सदा दूर रहते हो।'

जयदेव जोर से हँस पड़ा और नीचे उतर आया। अपनी धोती में वह पाँच सात आम बहुत बड़े बड़े लिये हुये था। लाकर उसने अंजनी के आँचल में डाल दिये। फिर दोनों बैठ कर आम खाने लगे।

जयदेव ने कहा—अंजनी यदि हम इसी प्रकार जीवन भर रह सकते।

'रहेंगे ही!'

'पर यदि तुम्हारे माता-पिता किसी दूसरे से विवाह कर दें तो।'

'तो किसी दूसरे की होने के पहले ही मैं जान दे दूँगी।'

चुप यह क्या अशुभ कहती है पगली।'

अंजनी हँसने लगी। पर जयदेव गम्भीर हो गया। वास्तव में वह अंजनी को बहुत प्रेम करने लगा है पर इस प्रेम का अन्त कहाँ होगा यह वह अनुमान नहीं कर पा रही है।

वे आम खाही रहे थे कि रामा आती दिखाई दी। अंजनी तुरन्त ही उठ खड़ी हुई। जयदेव ने पूछा—क्यों अञ्जनी।

'रामा आ रही है!'

रामा आ गई। उसने अञ्जनी को देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अञ्जनी कितनी भयभीत सी लग रही थी। फिर उसने जयदेव की ओर देखा वह उसी प्रकार बैठा हुआ आम खा रहा था। रामा को देख कर उसने कहा—आओ रामा आज मैंने बड़े आम तोड़े हैं। कितने अच्छे हैं।

'रामा पास ही बैठ गई। उसने अञ्जनी से कहा—बैठ अञ्जनी तू देखो भी खा!

'नहीं मैं चलती हूँ।' अञ्जनी ने कहा और चल दी।

रामा को अञ्जनी का यह व्यवहार अच्छा न लगा। उसने पूछा—यह अञ्जनी आज अजीब सी दीख रही थी।

'क्यों ?'

'बैठी नहीं मेरे आते ही तुरन्त चल दी।'

'तो कोई तुम्हारे लिये अपना काम धाम छोड़ दे।'

'बड़ा काम धाम रहता है न उसे।

'नहीं तो क्या सब लोग तुम्हारी तरह बेकार हैं।'

रामा चुप हो गई।

आषाढ़ का महीना आया तो जयदेव ने रामा से कहा—रामा इस साल मैं समझता हूँ हम दो बैल और रख लें खेती बढ़ा दें।

'अच्छा तो है पर काम बढ़ जायगा।'

'तो मैं हूँ जो और फिर कौन हमें अपने हाथ से कुछ करना है।'

'जैसा तुम समझो पर माँ से भी तो राय कर लो।

'माँ तो हमारी राय पर हाँ कर ही देती हैं।

'नहीं पर उन्हें खेती का अधिक अनुभव है।'

'अच्छी बात है।'

माँ ने जयदेव के प्रस्ताव को बहुत पसन्द किया। खेती दुगुनी कर दी गई। दो बैल और खरीद लिये गये और खेती का काम शुरू हो गया। पर जयदेव ने खेती के काम को जितना सरल समझा था उतना वह न था जयदेव को दिन भर इतना कठिन परिश्रम पड़ता कि वह परेशान हो जाता। काम की अधिकता के कारण वह खिजला उठता। रामा उसके काम में हाथ बटाती पर वह अधिक कर ही क्या सकती थी। जयदेव को लग रहा था कि उसने खेती के काम को बढ़ा कर भारी भूल की पर उसे इसकी चिन्ता क्या है। खाने की उसे कमी नहीं है फिर वह अधिक परिश्रम क्यों करे।

एक दिन वह खेत पर से लौट रहा था। रास्ते में अञ्जनी मिल गई बोली—आज कल तो तुम दिखाई ही नहीं पड़ते कहाँ रहते हो।

'अञ्जनी न पूछो यह खेती बढ़ा कर मैंने अपने लिये जंजाल फैला लिया है।'

'तुम भी अजीब हो; अरे इतना धनोपार्जन करके तुम क्या करोगे। अपने स्वास्थ्य को देखो कितना बिगड़ चला है।'

सचमुच आज कल वह अनुभव करता है कि उसका स्वस्थ्य गिर रहा है। पर रामा ने कभी इसकी चर्चा नहीं की। उसका लक्ष्य तो अधिक धन पैदा करना है। उसे उसने नौकर समझ लिया जो उससे दिन रात काम करते रहने की आशा करती है। कितनी स्वार्थी है यह रामा।

उसने पूछा—क्या सचमुच अंजनी इधर मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया है।

'हाँ, बहुत। अब तुम्हारे मुँह पर वह प्रकाश नहीं दिखाई पड़ता।'

'तुम ठीक कहती हो अञ्जनी अब मैं क्या करूँ।'—

'करने को क्या है। तुम काम मत करो। बहुत होगा कम ही पैदा होगा।'

तुम ठीक कहती हो अंजनी। यह रामा तो मुझसे दिन रात काम लेती रहना चाहती है।'—

'खेती के काम के लिये तुम नहीं हो।'

'हाँ, अब मैं भी यही अनुभव कर रहा हूँ।'

उस दिन जयदेव ने रामा से कहा—खेती का काम बहुत बढ़ गया है।

'वह तो बढ़ेगा ही।'

'मैं देखता हूँ कि मैं सब कामों की देखभाल भी नहीं कर पाता।'

धीरे-धीरे अभ्यास हो जायगा।'

'मेरा स्वास्थ्य इधर खराब होता जा रहा है।'

रामा ने पति की ओर देखा उसे कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ रहा है। उसने कहा यह तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारा स्वास्थ्य पहले ही जैसा है।

जयदेव ने सोचा—रामा को मेरा तनिक भी ध्यान नहीं है। उसने कहा—मैं सोचता हूँ कि किसी आदमी को साझा दे दें तो काम कुछ हलका हो वह भी हमारा हाथ बँटा सके।

'तुम व्यर्थ परेशान होते हो। अच्छी बात है। कल से मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।'

जयदेव ने कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन से रामा ने जयदेव के काम में हाथ बँटाना शुरू कर दिया। जयदेव चुप रहा उसने सोचा रामा को हमारे सुख का कोई ध्यान नहीं। वह केवल अधिक धन चाहती है। वास्तव में उसे पति की नहीं बल्कि एक काम करने वाले नौकर की ज़रूरत थी। रामा से विवाह करके उसने भूल की।

१३

उषा की शीतल वायु का झोंका बहने लगा। जौ के छोटे छोटे पौधों पर ओस के कण बिखरे हुये थे! पगडण्डी पर दूब उगी हुई थी जिस पर रात में गिरी हुई ओस बिछी थी। सदाशिव के पैर ओस के शीतल स्पर्श से ठिठुर से गये थे परन्तु वह चलता जा रहा था। रात्रि के विस्तृत अन्धकार में वह चलता रहा है परन्तु उसे यह ज्ञान न था कि वह किस ओर को चलता जा रहा था। हवा के शीतल झोंकों ने उसे जैसे नींद से जगा दिया। उसने देखा आसमान में तारे फीके पड़ रहे हैं। सुबह होने को ही है। पर वह कहाँ आ गया। आसपास कोई घर नहीं दिखाई पड़ रहा था। अपने गाँव से वह कितनी दूर आगया इसका उसे ज्ञान नहीं था।

क्षण भर रुक कर वह सोचत रहा फिर एक ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक ओर दीपक का प्रकाश दिखाई पड़ा। थकावट के मारे उसका शरीर शिथिल होगया था। उसको लग रहा था कि वह किसी स्थान पर पड़ कर सो जाय परन्तु सोने योग्य कोई स्थान दिखाई नहीं पड़ रहा था। दीपक के प्रकाश के सहारे वह बढ़ता जा रहा था।

थोड़ी दूर और जाने पर जब वह प्रकाश के निकट आगया तो उसे मनुष्यों के बोलने चालने की आवाज सुनाई पड़ी। जान पड़ता है वहाँ बहुत से लोग बैठे बातें कर रहे हैं। क्षण भर रुक कर वह उस ओर देखने लगा। अरे यह तो स्टेशन जान पड़ता है। तो सारी रात चलकर वह स्टेशन के निकट आ गया है चलकर वह स्टेशन पर आगया। स्टेशन पर काफी भीड़ थी लोग टिकट ले रहे थे। उसने एक आदमी से पूछा तो उसने कहा—पूरब की गाड़ी आ रही है।

विधि का विधान तो देखो कि वह इस स्टेशन पर आगया है। जान पड़ता है विधाता का यह विधान ही है कि वह गाँव छोड़कर कहीं दूर चला जाय। अपने गाँव में अब उसका रह हा क्या गया है। वहाँ लौट कर वह करेगा ही क्या एक माँ थी वह भी नहीं रही। नहीं अब वह गाँव को नहीं लौटेगा। अब वह यहाँ से दूर चला जायगा। बहुत दूर !

जाकर वह प्लेट फार्म के एक कोने में बैठ गया। थोड़ी देर वह बैठा रहा कि ट्रेन की सर्च लाइट का प्रकाश स्टेशन पर फैल गया। उसके शरीर में एक झनझनाहट व्याप्त हो गई। और फिर झक झक करती ट्रेन आकर स्टेशन पर खड़ी हो गई। बिना किसी से कुछ कहे वह ट्रेन पर बैठ गया। पूर्व में प्रकाश फैल रहा था। गाड़ी में सोते हुये लोग उठ रहे थे। डिब्बे के भीतर पैर रखते ही बीच की बर्थ पर लेटा हुआ एक व्यक्ति उठ बैठा। उसने सदाशिव से पूछा – कौन सा स्टेशन है यह।

सदाशिव को स्टेशन का पता नहीं।

किसी ने पीछे से स्टेशन का नाम बता दिया। गाड़ी सीटी दे चुकी थी।

एक झटका लगा और ट्रेन आगे बढ़ गई। थोड़ी देर तक सदाशिव उसी प्रकार खड़ा रहा फिर जब उसे बड़ी थकावट लगने लगी

तब वह ऊपर की बर्थ पर चढ़ गया और लेट गया। उसे नींद आगई।

जब उसकी नींद खुली तो उसने देखा ट्रेन खड़ी हुई है। प्लेटफार्म पर खोमचे वाले चिल्ला रहे हैं। आँखें मल कर वह नीचे उतरा। देखा ट्रेन के मुसाफिर उतर रहे हैं डिब्बे का हर मुसाफिर अपना सामान ठीक कर रहा है। जान पड़ता है सभी यहीं उतर जायँगे। तो उसे भी यहीं उतरना होगा।

मनुष्य का जीवन भी कितना विचित्र है संसार में वह ट्रेन का मुसाफिर ही तो है। क्षण भर वह विचित्र तथा अपरिचित लोगों के बीच रहता है; उनसे अपना सम्बन्ध स्थापित करता है; प्रेम के दो चार शब्द कह सुन कर वह अपनी यात्रा की घड़ियाँ काट देता है या सदाशिव की भाँति एकान्त में सो कर अपनी यात्रा पूर्ण कर देता है पर जब स्टेशन आता है तो उसे उतरना ही पड़ता है।

सदाशिव भी उतर कर प्लेटफार्म पर आ गया। रात होगई थी। जान पड़ता है वह दिन भर ट्रेन पर सोता रहा। पिछली बात उसे भूल सी गई थी उसे लगा कि वह नये जीवन में प्रवेश कर चुका है। अब वह अपने छोटे से गाँव में नहीं था। उसके सामने अगनित जन समुदाय था। वह एक ओर को चल पड़ा। आगे कुछ लोग चल रहे थे। उन्हीं के पीछे पीछे वह चलने लगा। उसे बड़ी भूख लग रही थी परन्तु उसके पास तो एक भी पैसा नहीं है और इस अपरचित शहर में उसे कौन खिला सकता है।

एक व्यक्ति उसके पास से निकला तो उसने पूछा—बाबू साहब यह कौन सा स्टेशन है।

बाबू साहब ने सदाशिव को आश्चर्य के साथ देखा, उन्हें उसे देख कर कुछ करुणा हो आई। उन्होंने कहा—दिल्ली।

'दिल्ली।' सदाशिव के मुँह से निकल गया। ओह वह कितनी

दूर आ गया। दिल्ली का नाम उसने सुना था पर यह नहीं समझता था कि वह कितनी दूर है।

बाबू साहब ने फिर पूछा—तुम कहाँ से आ रहे हो।

'बहुत दूर से बाबू साहब।'

'टिकट है।'

'नहीं।'

'घर से भाग कर आ रहे हो।'

'घर ही नहीं है। भागूँगा कहाँ से बाबू साहब।'

'घर ही नहीं है।'

'जी घर ही नहीं है। संसार में अकेला रह गया हूँ इसलिये'—सदाशिव की आँखें छल छला आईं।

बाबू साहब ने उसे सान्त्वना दी। सदाशिव ने अपनी सारी कहानी उन्हें सुना दी। बाबू साहब को सदाशिव के प्रति करुणा हो आई। जीवन में उन्होंने भी बहुत ठोकर खाई है इसलिये जब उन्हें इस प्रकार का कोई आदमी मिल जाता है तब वे उसकी सहायता अवश्य ही करते हैं।

बाबू साहब के साथ वह स्टेशन से बाहर आया। बाबू साहब ने पूछा—सदाशिव तुमने कुछ खाया है।

'नहीं।'

'तो चलो पहले तुम खा लो फिर आराम करना। मैं यहीं स्टेशन में हूँ। मेरी ड्यूटी का समय हो रहा है।'

उसने कुछ उत्तर न दिया। बाबू साहब ने उसे कुछ खाने को दिला दिया और फिर स्टेशन के मुसाफिर-खाने को दिखा कर कहा—जाओ वहाँ लेटो सुबह जब मैं चलने लगूँगा तब तुम्हें अपने साथ घर लेता चलूँगा। मुझे घर में एक आदमी की आवश्यकता भी है।

सदाशिव जाकर एक कोने में लेट रहा। पर उसे नींद न आ रही

थी। इतनी भीड़ और कोलाहल में भला उसे नींद कैसे आती। वह अपने सम्बन्ध में विचार कर रहा था। उसके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन हो गया है। इतना बड़ा परिवर्तन कि वह स्वयं उसका अनुमान नहीं कर पा रहा है। दूसरे दिन जब गाँव में वह न दिखाई पड़ा होगा तो लोगों को कितना आश्चर्य हुआ होगा! सबने सोचा होगा सदाशिव पागल हो गया है। और उसके पागल होने में सन्देह ही क्या है। पागल तो वह है ही पर उसे संसार से कोई सम्बन्ध नहीं। वह सारे संसार से दूर रहना चाहता है। अपने गाँव तो वह जाना भी नहीं चाहता। कितनी असफलतायें उसके जीवन से लिपटी हुई हैं। उसने जीवन में जो कुछ भी किया सभी में वह असफल रहा। कभी तो वह सफल नहीं हो सका।

विधाता ने प्यार के नाम पर उसके भाग्य में शायद निराशा ही लिखी थी परन्तु विधाता के इस लेख को वह मिटा देगा; वह रामा को प्राप्त नहीं कर सका, उसे अपनी पत्नी नहीं बना सका पर उसे प्यार करने से तो उसे कोई नहीं रोक सकता। अपना समस्त जीवन वह रामा के प्यार पर ही उत्सर्ग कर देगा। उसके निराश जीवन की यही शान्ति है और इसी में वह अपने जीवन के अन्तिम लक्ष्य को देखना चाहता है। सोचते सोचते उसे नींद आ गई।

सुबह जब बाबू साहब आये तब उन्होंने सदाशिव को जगाया। उनके साथ वह उनके घर गया। यहाँ का जीवन उसे अजीब सा लग रहा था। उसने अपने घर में कभी कोई काम नहीं किया था पर दूसरों के काम में वह सदा हाथ बँटाता आया था। बाबू साहब के यहाँ वह दिन भर काम में लगा रहता उसे अवकाश पसन्द नहीं था। वह चाहता था कि सारे समय वह कुछ न कुछ करता रहे जिससे उसे रामा की सुधि न आये पर जाने क्यों जब वह सोने के लिये अपनी चारपाई पर लेटता तब उसे रामा की सुधि हो आती। बहुधा वह रात रात भर इसी ध्यान में बिता देता।

बाबू साहब का परिवार अधिक बड़ा नहीं था। उनकी पत्नी तथा दो बच्चे थे। मालकिन बड़ी ही सीधी थीं। सदाशिव को बहुत मानती थी। इसलिये सदाशिव उनके घर का सा प्राणी हो गया था। बहुधा मालकिन बैठ कर उससे जीवन की बातें पूँछा करती थीं। एक दिन उन्होंने पूछा—सदाशिव तुमने ब्याह नहीं किया।

सदाशिव ने एक निश्वास खींच कर कहा—नहीं।

मालकिन ने उसकी ओर देखा। सदाशिव की आँखों में पीड़ा छलक रही थी उन्होंने जैसे उसकी पीड़ा पहचान ली हो, कहा—सदाशिव जान पड़ता है तुम्हारे जीवन में कोई घटना अवश्य है पर तुम मुझसे छिपा रहे हो।

सदाशिव ने कोई उत्तर नहीं दिया। मालकिन ने कहा—सदाशिव हृदय की समस्त पीड़ा को कोई अपने पास ही नहीं रख सकता। इससे पीड़ा और अधिक गम्भीर हो उठती है। कह देने से दर्द हलका हो जाता है।

सदाशिव के जी में आया कि वह अपनी सारी पीड़ा मालकिन से बता दे। पर बताने का साहस नहीं हो रहा था।

मालकिन ने कहा—सदाशिव मैं समझती हूँ; जान पड़ता है तुम किसी को प्रेम करते हो।

चौंक कर सदाशिव ने मालकिन की ओर देखा पर चुप रहा।

मालकिन ने फिर पूछा—है न सदाशिव।

सदाशिव अपने को अधिक न रोक सका उसने अपने हृदय की सारी कहानी मालकिन को सुना दी। मालकिन ध्यान पूर्वक सब सुनती रहीं। अन्त में उन्होंने कहा—सदाशिव तुमने स्त्री के हृदय को अभी समझा नहीं।

'क्यों ?'

'नहीं तुम्हें इतनी असफलता का सामना न करना पड़ता।

'सम्भव है।'

'स्त्री को प्रेम की सच्ची पहचान होती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि रामा के दिल में अब भी तुम्हारे लिये स्थान है।'

'हो सकता है पर अब उसका विवाह हो गया।'

'विवाह के बाद भी स्त्री अपने से प्रेम करने वाले को भूल जाय यह नहीं हो सकता सदाशिव।'

'पर उसने मुझे प्रेम ही कब किया था मालकिन।'

'उसने तुम्हें प्रेम किया था पर तुमने भूल की।'

'मालकिन।'

'हाँ सदाशिव, उसने तुम्हें श्यामा को दिया था क्या यह पर्याप्त नहीं था।'

'हाँ।'

'और अधिक कोई स्त्री कह ही क्या सकती है।'

'ओह।' सदाशिव की आँखों में आँसू छा गये।

मालकिन ने कहा—सदाशिव मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि कभी भी तुम जीवन में उससे मिल सके तो तुम्हें मेरी बातों की सत्यता मालूम हो जायगी।'

सदाशिव ने कोई उत्तर नहीं दिया। सम्भव है स्त्री को स्त्री के हृदय की सच्ची पहचान हो। पर सदाशिव तो ऐसा नहीं समझता। सदाशिव उठ कर बाहर चला गया। मालकिन बैठी सोचती रहीं। उन्हें अतीत की बात याद आ रही थी।

तब मालकिन का विवाह नहीं हुआ था। वे एक स्कूल में पढ़ती थीं। जिस मार्ग से उनकी गाड़ी जाती थी उसी मार्ग से रोज एक युवक को वह कालेज जाते हुये देखती थीं। वह चुपचाप सिर नीचा किये हाथ में पुस्तकें लिये अपने मार्ग चला जाता पर जब गाड़ी निकट आती तो वह एक बार आँख उठा कर अवश्य देख लेता।

वर्षा के दिन थे पानी रिमझिम रिमझिम करके बरस रहा था। मालकिन उस गाड़ी के अगले हिस्से में बैठी थीं। उन्होंने देखा

वह एक पेड़ के नीचे खड़ा शायद पानी रुकने की प्रतीक्षा कर रहा था। मालकिन ने उसकी ओर देखा। जाने क्यों उन्हें उसके प्रति एक स्वाभाविक मोह का अनुभव हुआ और जब तक गाड़ी चौराहे से मुड़ नहीं गई तब तक वह उसकी ओर देखती रही। वह युवक अपनी किताबों को भीगने से बचाते हुये बीच बीच में मालकिन की ओर देख लेता।

उस दिन से मालकिन का यह स्वभाव हो गया कि जब वे गाड़ी में बैठ कर स्कूल जाने लगतीं तो उसी स्थान पर एक बार परदा उठाकर बाहर की ओर देख लेती और वह युवक भी उन्हें उसी स्थान पर रोज मिल जाता। यह चलता रहा।

एक दिन उन्हें पैदल स्कूल जाना पड़ा। साथ में नौकर किताब लिये हुये था। वह युवक वहीं पर मिल गया। एक बार उसने मालकिन की ओर देखा। उसे जैसे कुछ आश्चर्य हुआ फिर वह आँखें नीची किये चलने लगा।

नौकर तनिक पीछे चल रहा था। मालकिन ने धीरे से कहा—आप कहाँ पढ़ते हैं।

'यूनीवर्सिटी में।' उसने उसी प्रकार आँखें नीची किये उत्तर दिया।

'हम लोगों का रोज यहीं भेंट होती है।'

युवक शायद इस क्षणिक भेंट के लिये ही इसी समय घर से चलता है। वह चला गया।

नौकर निकट आ गया था इसलिये अधिक बातें नहीं हो सकीं। उस दिन से वह मालकिन को जब देखता तो मुस्करा देता।

दिन और फिर महीने बीतने लगे। फिर उनका विवाह निश्चित हो गया। पिता ने स्कूल जाना बंद करा दिया। अंतिम दिन मालकिन को जब वह मिला तो मालकिन ने अपनी रूमाल गाड़ी से नीचे गिरा दी। वे देखती रहीं। युवक ने वह रूमाल उठा लिया।

दुनिया का काम उसी प्रकार चलता रहा। मालकिन दूसरे घर

की हो गईं। तब से जाने कितने परिवर्तन हुये। बात पुरानी पड़ गई पर कभी कभी उस युवक का स्मरण उन्हें व्यथित कर देता था।

जब मालकिन का विवाह हुआ था उनके पति कालेज में पढ़ते थे। विवाह के पश्चात् उनको पढ़ाई न हो सकी। नौकरी के फेर में वे इधर उधर मारे मारे फिरते रहे। फिर उन्होंने यहाँ प्रार्थना-पत्र भेजा। उन्हें आशा नहीं थी पर नौकरी उन्हें मिल गई। जब वह यहाँ आये तब उन्हें ज्ञात हुआ कि छोटे साहब ने उनकी नौकरी के लिये बड़ी कोशिश की थी। कृतज्ञता प्रकाश के लिये वे छोटे साहब के यहाँ गये तो बहुत देर तक उनसे बातें करते रहे। कोई अफसर इतनी आत्मीयता के साथ उनसे बातें करेगा यह उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। घर आकर उन्होंने जब सब बातें मालकिन को सुनाई तो उन्हें भी आश्चर्य हुआ। भगवान ने ही शायद उनकी सहायता के लिये छोटे साहब को भेज दिया था।

और फिर उसी दिन की घटना मालकिन के मस्तिष्क में आज भी ताज़ी है। वे पति के साथ चाँदनी चौक गई हुई थीं। उस समय उनकी बड़ी लड़की कमला उनकी गोद में थी। जब वे एक दूकान के सामने से जा रही थीं तो उन्हें एक व्यक्ति दूकान से बाहर निकलता दिखाई पड़ा मालकिन के पति ने झुक कर नमस्कार किया। मालकिन ने भी आँख उठा कर देखा। अरे यह तो वही युवक है!

मालकिन धक रह गई। मालकिन के पति के साथ वह चार कदम आगे बढ़ गया था। मालकिन उसी स्थान पर खड़ी रहीं। क्षण भर बातें करके वह व्यक्ति अपने ताँगे पर बैठा और ताँगा चल दिया। मालकिन के पास लौट कर बाबू साहब ने कहा—छोटे साहब थे। बेचारे मुझ पर बड़े कृपालु हैं। मुझसे पूछा यही तुम्हारी बच्ची है क्या। मैंने कहा हाँ तो उन्होंने जेब से दस रुपये का नोट निकाल कर कमला के लिये दे दिया।

मालकिन ने कुछ कहा नहीं केवल पूँछा—तुम्हारे छोटे साहब का विवाह हुआ कि नहीं।

'अभी नहीं।' पति ने उत्तर दिया।

मालकिन गम्भीर हो उठी थीं।

छोटा बच्चा रोने लगा तो मालकिन की विचार धारा टूट गई वे तुरन्त उठीं और बच्चे को गोद में ले लिया। सदाशिव भी बाहर से आ गया। फिर जीवन की व्यस्तता प्रारम्भ हो गई। बाबू साहब के आने का समय हो रहा है। मालकिन को रसोई बनानी होगी।

सदाशिव को बाबू साहब के घर में रहते छः सात महीने हो गये थे। मालकिन नैहर चली गईं। घर में उसे अकेला रहना पड़ता। बाबू साहब के अकेले होने के कारण घर में कोई काम काज था नहीं! दिन भर उसकी तबीयत ऊबती रहती।

सहसा उसके मस्तिष्क में एक दिन आया कि मालकिन कहती थी कि रामा अब भी उसे प्यार करती है। तो क्या वह रामा को खोजे। पर उसे यह भी तो पता नहीं कि रामा कहाँ रहती है। पर उसका विचार जाने क्यों दृढ़ होता जा रहा था। एक दिन उसने कहा—बाबू साहब घर में कोई काम नहीं। यदि आप कहें तो मैं दस पाँच दिन के लिये कहीं घूम आऊँ।

'कहाँ घूम आओगे सदाशिव।'

'कहीं नहीं यहाँ दिन भर बेकार रहते जी ऊबा करता है।'

बाबू साहब थोड़ी देर तक सोचते रहे फिर उन्होंने कहा—अच्छी बात है तुम जा सकते हो। मालकिन अगले महीने में आयेंगी। तब तक के लिये तुम्हें छुट्टी है।

दूसरे दिन सदाशिव घर के लिये रवाना हो गया। ट्रेन पर जब वह बैठा तो उसे लग रहा था कि कब घर पहुँचेगा परन्तु ज्यों ज्यों वह अपने घर के स्टेशन के निकट पहुँचने लगा उसका हृदय जैसे काँपने लगा। नहीं, वह अपने गाँव नहीं जा सकता। तब वह क्या

करे। उसके मन में अनेक प्रकार की भावनायें उठ रही थीं वह घर के स्टेशन पर पहुँचने के बहुत पूर्व ही एक स्टेशन पर उतर पड़ा। सोचा दूसरी ट्रेन से वह फिर दिल्ली लौट जायगा।

स्टेशन पर पूँछने से उसे पता लगा कि दिल्ली की गाड़ी कल प्रातः काल मिलेगी। स्टेशन छोटा था दिन भर वह वहाँ बैठा क्या करे। फिर कुछ खाने पीने का भी तो प्रबन्ध करना होगा। यह सोच कर वह निकट के गाँव को चल पड़ा।

यह गाँव छोटा था। प्रायः छोटी जातियों के लोग वहाँ रहते थे। सदाशिव जैसे ही गाँव में पहुँचा लोग उसे आश्चर्य के साथ देखने लगे। गाँव भर में यह मकान सबसे अच्छा था। वह उसके द्वार पर रुक गया। थोड़ी देर बाद एक युवक बाहर निकला—सदाशिव ने कहा—भाई मुझे दिल्ली जाना है अभी इसी गाड़ी से यहाँ उतर गया हूँ। गाड़ी सबेरे मिलेगी पर दिन और रात काटनी है। यहाँ कहीं ठहरने का प्रबन्ध हो सकेगा।

'यहीं ठहर सकते हो।' युवक ने उत्तर दिया।

सदाशिव ने अपना सामान सामने पड़ी एक चारपाई पर डाल दिया। युवक ने भीतर जाकर उसके लिये सब प्रबन्ध करने को कह दिया और फिर बाहर आकर कहा—मैंने तुम्हारे लिये प्रबन्ध करने को घर में कह दिया। मुझे खेत जाना है वहाँ बुआई हो रही है।

'अच्छा।' सदाशिव ने उत्तर दिया और वह युवक चला गया।

थोड़ी देर बाद एक स्त्री बाहर निकली। सदाशिव ने उसकी ओर देखा अरे यह तो रामा है। वह उठ कर खड़ा हो गया। रामा उसकी ओर आश्चर्य से देखती रही। फिर निकट आकर कहा—तुम यहाँ कैसे आ गये।

सदाशिव ने सब बातें बता दी। रामा ने पूछा—पर घर क्यों नहीं गये।

'इच्छा नहीं होती! तुम्हें एक बार देखने को इच्छा थी वह पूरी हो गई अब प्रसन्नता से लौट जाऊँगा।'

रामा ने कोई उत्तर न दिया। उसने सदाशिव के नहाने धोने का प्रबन्ध कर दिया फिर पूछा—खाना तुम स्वयं बनाओगे या मेरी रसोई में खाओगे।

'जैसी तुम्हारी इच्छा हो!'

'तो रसोई में ही खा लेना!'

'अच्छी बात है।'

खा पीकर जब सदाशिव बाहर आकर बैठा था तो रामा फिर बाहर आई। सदाशिव ने पूछा—क्या जो मुझको पहले मिले थे वही तुम्हारे पति थे क्या?

'हाँ।'

सदाशिव चुप रहा। रामा ने कहा—तुम देहली नौकरी करने क्यों जाते हो। अपने गाँव में खेती बारी से काम नहीं चलता था क्या?

'मेरे अकेले के लिये भला काम क्यों न चलता पर मैं वहाँ रहना ही नहीं चाहता।'

'क्यों क्या विवाह नहीं करोगे।'

'अब उसकी मुझे आवश्यकता नहीं रही।' सदाशिव ने एक निश्वास खींच कर उत्तर दिया।

रामा थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही फिर बोली—यदि अपने गाँव में नहीं तो कहीं दूसरी जगह ही दो चार बीघा जमीन लेकर रह सकते हो। पराये घर की नौकरी तो अच्छी नहीं।

'जहाँ अपना कोई परिचित नहीं वहाँ क्या रह कर करूँ।'

क्षण भर रुक कर रामा ने कहा—यदि तुम यहाँ रहना चाहो तो मैं तुम्हारे लिये खेतों का प्रबन्ध कर सकती हूँ।

सदाशिव को लगा कि मालकिन ठीक ही कहती थीं। उसने कहा—हाँ! जयदेव जब घर लौटा तो रामा ने उससे कहा—तुम्हें एक आदमी की जरूरत थी न।

'हाँ क्यों ?'

'मैंने एक आदमी खोज लिया है ।'

'कौन ।'

'यही जो आया है ।'

जयदेव ने आश्चर्य से पूछा—कैसे ?

'इसके कोई है नहीं मैंने सोचा है इसे हम खेती में साझा दे दें तो तुम्हारी परेशानी कम हो जायगी ।'

'पर उसे यह स्वीकार क्यों होगा ।'

'मैंने उससे बातें करली हैं ।'

'तब ठीक ।' जयदेव ने कहा ।

सदाशिव फिर देहली नहीं गया । गाँव में ही उसने अपना एक छोटा सा घर बना लिया । जयदेव ने उसे कुल खेतों में एक तिहाई हिस्सा देने का वचन दिया । उसका काम खेतो के सारे कामों की देख भाल करना था ।

१४

बरसात के दिन में खेती में काम अधिक बढ़ जाता है । सदाशिव दिन भर खेतों पर काम में लगा रहता है । जीवन में जैसे काम ही आकर्षण हो । सुबह से लेकर अधिक रात गये तक वह काम में लगा रहता । देखने वाले कहते—सदाशिव तो इतना काम करता है जैसे सारी उपज का मालिक वही है । रामा सदाशिव को काम करते देखती तो उसे बड़ी सहानुभूति होती । इतना त्याग वह क्यों कर रहा है । जिस समय उसने सदाशिव को दिल्ली न जाने का प्रस्ताव किया था उस समय उसने सोचा था शायद सदाशिव को यहाँ रहने से कुछ सान्त्वना प्राप्त होगी । सान्त्वना उसे चाहे प्राप्त न हुई हो पर काम वह

इतना अधिक केवल इसीलिये करता है क्योंकि वह सोचता है कि वह रामा के लिये सब कुछ कर रहा है। जयदेव जब से सदाशिव आया है तब से खेती के काम की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता। उसका सारा समय घूमने फिरने में व्यतीत हो जाता है। एक दिन रामा ने कहा—तुम आज कल खेती के कामों से बिल्कुल उदासीन हुये जा रहे हो।

'क्यों काम ही क्या है सदाशिव तो सब करता है।'

'करता तो है पर अपने काम का ध्यान स्वयं भी तो रखना जरूरी है।'

'पर मैं इसमें कोई हानि नहीं देखता।'

'हानि न भी हो पर मैं कहती हूँ आखिर वह भी तो मनुष्य है कितना काम वह करे।'

जयदेव को रामा की बात बहुत बुरी लगी। रामा प्रारम्भ से ही उस पर शासन करती आ रही है। यह जयदेव को पसन्द नहीं। वह उसका पति है और पति का अधिकार चाहता है। शायद यह रामा समझती है कि जायदाद सब उसकी है इसीलिये तो वह उस पर शासन करना चाहती है। यह उसे स्वीकार नहीं। उसने कहा रामा जीवन में तुम्हारा एक मात्र उद्देश्य शायद रुपये पैदा करना ही है।

'और फिर क्या होना चाहिये।' रामा ने व्यंग किया।

'हमारे पास कमी क्या है जो मैं दिन रात काम करता रहूँ!'

'आलस्य के जीवन को मैं जीवन नहीं समझती!'

बात बढ़ जायगी यह सोच कर जयदेव चुप हो गया। पर उस दिन की यह बात उसे बहुत बुरी लगी।

दो तीन दिन बाद उसने शहर जाने का निश्चय किया। अंजनी के लिये बहुत दिन से वह कोई चीज़ भेंट देने को नहीं लाया था। उसने रामा से कहा—रामा मैं शहर जाऊँगा। बीस रुपये दे दो।

'शहर जाने के लिये बीस रुपये की क्या जरूरत।'

'क्या बिना जरूरत मुझे रुपये लेने का अधिकार नहीं !' जयदेव ने खिझला कर कहा।

रामा क्षण भर उसकी ओर देखती रही फिर उसने तुरन्त ही कहा—व्यर्थ में रुपये खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं।

'तो रामा साफ साफ कह दो कि तुम मुझे अपना नौकर समझती हो जिससे काम तो तुम लेना चाहती हो पर अधिकार मेरा कुछ नहीं।'

'तुम जो चाहे सो समझ लो। रामा ने भी क्रोध के साथ उत्तर दिया।

'तुम यह भूलती हो कि मैं तुम्हारा पति हूँ !'

रामा को बात असह्य हो रही थी। वह उठ कर भीतर चली गई पर जब वह जाने लगा तो रामा ने बीस रुपये लाकर उसे दे दिये !

जब वह शहर से लौटा तो रामा ने उन रुपयों का कोई हिसाब उससे नहीं पूछा और न जयदेव ने ही कुछ कहा। पर इतना अवश्य है कि उस दिन से रामा ने अनुभव किया कि जयदेव उससे अलग अलग रहना चाहता है !

क्वार का महीना आ गया। सदाशिव को कई दिन तक बराबर धूप में काम करना पड़ा था ! उसे ज्वर आने लगा। उस दिन प्रातः काल से ही पानी बहुत जोर से बरस रहा था। शाम से पानी बहुत तेज हो गया। धान के खेत पानी से डूब गये होंगे। सहसा रामा को काफी रात गये अपने खेत का ध्यान आया। उसके मेड़ कटे नहीं हैं यदि पानी खेत से निकल नहीं जाता तो प्रातः तक उसका सारा खेत सड़ जायगा। कितनी हानि उसकी होगी। घर में और कोई आदमी नहीं था। सदाशिव अपनी कोठरी में पड़ा था। रामा ने जयदेव से कहा—देखो धान के खेतों में पानी भर रहा होगा। यदि मेंड़ काट न दिये गये तो सारा खेत सड़ जायगा।

'पर इतनी रात में इस आँधी पानी में वहाँ कौन जाय।' जयदेव ने उत्तर दिया।

'तुम्हें जाना होगा नहीं तो सब खेत नष्ट हो जायँगे !'

'पर मैं तो नहीं जाता !'

'अपनी खड़ी खेती मैं इस तरह नष्ट होते नहीं देख सकती !'

'तो तुम्हीं न चली जाओ !'

बात रामा को लग गई। फाड़वा हाथ में लेकर वह पानी में भागते हुये खेतों की ओर चल दी। खेत के पास जाकर वह रुक गई। तभी बिजली चमकी प्रकाश फैल गया और उस प्रकाश में उसने देखा खेत के दूसरे सिरे पर एक आदमी कुछ कर रहा है। उसे भय और आश्चर्य हुआ ! वह बढ़ कर पास पहुँची तो पूछा—कौन है !

'मैं हूँ।'

'कौन सदाशिव !'

'तुम वहाँ क्या कर रहे हो !'

'पानी काट रहा हूँ।'

रामा कुछ न बोली। चुपचाप वह सदाशिव के फाड़वे की छप-छप आवाज सुनती रही। जब वह पानी काट चुका तो उसने रामा से कहा—रामा तुम जाओ पानी में तुम भीग रही हो बीमार हो जाओगी।

'और तुम यह मरने का उपाय क्यों कर रहे हो।'

'तुम्हारे निकट रह कर मैं मर नहीं सकता। जाओ मुझे उस खेत की मेड़ काटना है !'

'मैं नहीं जाऊँगी। तुम्हारे साथ चलूँगी।'

सदाशिव ने कुछ उत्तर न दिया। फड़वा उठा कर वह दूसरे खेत की ओर चल पड़ा। रामा उसके पीछे चुपचाप चल रही थी। उसने कहा—सदाशिव मैं इन खेतों का सड़ जाना सह सकती हूँ तुम घर चलो।

'मेरे रहते यह न होगा। तुम जाओ।'

रामा ने कुछ उत्तर न दिया ! चुपचाप वह घर की ओर चल पड़ी। दूर तक उसे सदाशिव के फाड़वे की आवाज सुनाई पड़ती रही। दूसरे दिन गाँव के और लोगों के खेत के धान पानी में गिर कर डूब

गये थे पर रामा के खेतों में पानी नहीं रह गया। उस दिन सदाशिव को ज्वर अधिक था। रामा दिन भर उसकी सेवा सुश्रूषा में लगी रही। उसे रह रह कर जयदेव पर क्रोध आ रहा था।

कार्तिक की बुआई शुरू हुई तो सदाशिव को बहुत काम लगा रहता। अधिक रात गये वह घर लौटता पर जयदेव रोज उससे भी देर से घर लौटता। जयदेव के इस ढँग को लेकर रामा कई बार क्रोधित हुई पर जयदेव अपना ढँग न बदलता। उस दिन सदाशिव घर लौट रहा था। गन्ने के खेत की ओर वह इधर कई दिन से नहीं गया था। आज सोचा उस ओर भी देखता चले। चाँदनी छिटकी हुई थी। खेत के निकट पहुँचते ही उसे किसी के बातचीत। करने की आवाज सुनाई पड़ी। धीमे पैर वह आगे बढ़ने लगा। खेत के मोड़ पर खड़े होकर देखा जयदेव और अंजनी बैठे बातें कर रहे हैं। क्षण भर खड़ा वह आश्चर्य से उन्हें देखता रहा फिर चुपचाप वह घर चला आया। उस दिन जब रामा उसे खाना परस रही थी तो सदाशिव ने कहा— रामा तुम से एक बात कहना है।

'क्या।'

सदाशिव क्षण भर रुका फिर बोला—तुम्हें जयदेव की ओर से सतर्क रहना चाहिये!

'तुम्हारा मतलब।'

'मुझे अंजनी और जयदेव के ढँग अच्छे नहीं दीखते।'

रामा को क्रोध आ गया। सदाशिव कितना नीच है। उसने कहा—सदाशिव मैंने तुम्हें अपने यहाँ इसलिये नहीं रखा तुम्हें मेरे घरेलू मामले में दखल देने का अधिकार नहीं है।

सदाशिव चुपचाप रामा की बात सुनता रहा फिर कहा—रामा मुझसे भूल हुई। आगे ऐसा नहीं होगा।

रामा ने सदाशिव को फटकार तो दिया पर अपने हृदय से वह इस बात को निकाल न सकी। उसे जयदेव पर सन्देह हो गया तो वह

रात भर उसके एक एक काम पर विचार करती रही। उसे सदाशिव की बात सच जान पड़ रही थी।

जयदेव इधर कई महीने से रामा के कमरे में नहीं सोता था। वह बाहर के कमरे में रहता था। रामा उठ कर बाहर आई देखा तो जयदेव की चारपाई अभी तक खाली थी। रात में सर्दी काफी पड़ती है जयदेव कहाँ चला गया।

सहसा गाँव में चिल्लाने की आवाज होने लगी। कहीं आग लगी थी। सदाशिव की नींद खुल गई और वह दौड़ा हुआ गया। अञ्जनी का घर जल रहा था। चारों ओर से आग लग चुकी थी। अञ्जनी के माता पिता बाहर सोते थे पर अञ्जनी भीतर सोती थी। अञ्जनी की माँ अञ्जनी का नाम ले लेकर चिल्ला रही थी। सदाशिव भाग कर मकान के पिछले दरवाजे पर पहुँचा। वह भी जल रहा था। भीतर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। सदाशिव क्षण भर सोचता रहा फिर दौड़ कर दरवाजे के भीतर घुस गया। अञ्जनी और जयदेव एक कमरे में पागलों की भाँति दौड़ रहे थे। सदाशिव ने दोनों का हाथ कस कर पकड़ लिया और उन्हें खीचता हुआ दरवाजे से बाहर आया।

गाँव के और लोग आ गये थे। अञ्जनी बेहोश थी परन्तु शरीर जलने से बच गया था। जयदेव की एक बाँह जल गई थी। लोगों ने जयदेव की ओर आश्चर्य से देखा। उसे आते किसी ने न देखा था। सदाशिव ने सभी स्थिति समझ ली बोला—जयदेव ने आज बड़े साहस का काम किया। मेरे साथ ही यह वहाँ पहुँचे और बिना क्षण भर की भीदेर किये भीतर घुस गये। यदि यह समय पर न आते तो अञ्जनी की रक्षा होनी कठिन थी।

जयदेव ने आश्चर्य के साथ सदाशिव की ओर देखा।

जयदेव के सम्बन्ध में गाँव में अनेक प्रकार की चर्चा चलती ही रही।

रामा ने भी सुना तो उसने सदाशिव से पूछा—सदाशिव उस दिन उन्होंने अंजनी की रक्षा की थी।

'हाँ।' सदाशिव ने उत्तर दिया।

रामा सदाशिव के मुँह की ओर देखती रही पर आगे बात करने का उसे साहस न हुआ। यह सदाशिव उसके लिये भी रहस्य बना रहना चाहता है। रामा चली गई तो सदाशिव ने एक निश्वास ली और अपने काम में लग गया।

अञ्जनी का सारा घर जल कर राख हो गया। उसके पास खाने रहने का भी प्रबन्ध न रह गया था। गाँव वालों ने थोड़ी बहुत सहायता कर दी थी उसी से काम चल रहा था। जयदेव ने रामा से कहा—रामा हमारा पीछे वाला घर तो खाली है। बेचारी अञ्जनी के रहने को घर नहीं है। झोपड़ी डाल कर वे रहते हैं। न हो हम उन्हें उस घर में रहने को कह दें।

'मैं अपने घर में किसी और को जगह क्यों दूँ।

जयदेव ने बात अधिक नहीं बढ़ाई आज कल वह रामा से अधिक बातें नहीं करता। पर अंजनी की सहायता उसे करनी ही होगी। उनके पास कुछ रह नहीं गया है। धान इस साल रामा के काफी हुआ। रामा ने धान को शहर में बेचने का निश्चय किया। दो गाड़ियों में धान लदा कर वह सदाशिव को शहर भेज रही थी तो जयदेव ने कहा—सदाशिव को जाने की आवश्यकता नहीं। मुझे शहर जाना भी है। दोनों काम हो जायँगे।

रामा यह नहीं चाहती थी पर जयदेव की बात उसे माननी पड़ी। दूसरे दिन जब जयदेव शहर से धान बेच कर लौटा तो उसने रुपये रामा के हाथ पर रख दिये। रामा ने सोचा था उसे और अधिक रुपये मिलेंगे। जयदेव ने धान किस भाव बेच डाला। उसने पूछा—इतने का ही धान बिका।'

'नहीं पचपन रुपये मैंने खर्च कर दिये।'

इतनी बड़ी रकम जयदेव ने कहाँ खर्च कर दी। उसने पूछा—कहाँ खर्च कर दी। जयदेव खिझला उठा बोला—मुझे भी खर्च करने का अधिकार है। जहाँ मन आयेगा मैं खर्च करूँगा तुम्हें हिसाब देना मुझे नहीं पसन्द है।

रामा चुप हो गई। पर उसने दूसरे दिन सुना अंजनी के पिता को कहीं से रुपया मिल गया है और अपने रहने के लिये उसने मकान बनवाना शुरू कर दिया है। रामा ने अपने मन में सोचा—तो मेरे रुपये से अंजनी का मकान बन रहा है।

चैत का महीना आया कटाई शुरू हो गई। सदाशिव अपने खलिहान में व्यस्त रहता। खेत कट चुके थे। सदाशिव ने रामा के बाग में ही अपना खलिहान बनाया था। गेहूँ जौ चने के बोझ के बोझ खलिहान में लगे रखे थे। सदाशिव खलिहान में ही रहता था।

जयदेव इधर शहर अधिक जाने लगा था। उस दिन वह शहर गया था। सदाशिव खलिहान में लेटा हुआ था। आधी रात गये। उसे सहसा किसी की आहट जान पड़ी। सदाशिव उठ कर बैठ गया। चाँदनी में उसने देखा जयदेव है।

सदाशिव ने पुकारा—जयदेव।

'हाँ।' उत्तर मिला।

'कहाँ से आ रहे हो।'

'शहर से।'

'शहर से इस समय ?'

'हाँ, सदाशिव मैं इस समय घर नहीं जाना चाहता।'

'क्यों ?'

'बहुत रात हो गई है। रामा को क्यों कष्ट दूँ।'

सदाशिव ने कुछ उत्तर न दिया। खलिहान में केवल एक ही चारपाई है जिस पर वह सोता है। सदाशिव ने चारपाई छोड़ दी कहा—तो आओ तुम इस पर सोओ मैं कहीं और सो रहूँगा।

जयदेव चारपाई पर लेट रहा। सदाशिव को लगा जयदेव के मुख से दुर्गंध निकल रही है। तो जयदेव शराब भी पीता है। शायद इसी लिये वह बहुधा शहर का बहाना करके चला जाता है।

सदाशिव रामा के भाग्य पर विचार करता हुआ थोड़ी दूर पर एक कपड़ा बिछा कर लेट रहा। जयदेव और रामा के जीवन में ऐसी कौन सी घटना हो गयी है। जिसके कारण वे एक दूसरे से इतनी दूर हो गये हैं। उसकी उपस्थिति तो रामा के दाम्पत्य जीवन में विष वृक्ष बन कर नहीं बढ़ रही है। नहीं यह कैसे हो सकता है। रामा से वह अपने को बराबर दूर रखने का प्रयत्न करता है। फिर यह सब क्यों? उसने निश्चय किया कि वह अब यहाँ से कहीं अन्यत्र चला जायगा। मजदूरी करके गुजर कर लेगा पर रामा के निकट न रहेगा।

पर अपने निश्चय को वह पूरा न कर सका। एक सप्ताह बीत गया। जयदेव शहर गया था कह गया था दो तीन दिन बाद आयेगा। उस दिन सदाशिव और रामा की किसी बात को लेकर कहा सुनी हो गई। रामा इधर कुछ खिझलाई सी रहती है उसने कह दिया—सदाशिव तुम हर बात में मेरा विरोध करने लगते हो। यदि तुम्हें हमारे यहाँ रहना है तो तुम्हें अपने इस ढँग को बदलना होगा।

'रामा मैं अब तुम्हारे यहाँ नहीं रहूँगा।'

'तो तुम्हें रोक किसने रखा है तुम आज ही चले जाओ!'

रात को ही सदाशिव जैसा आया था वैसा ही चल दिया। जब सदाशिव चला गया तो रामा को पश्चाताप हो रहा था कि उसने ऐसा क्यों कहा। पर अब वह उसे बुलाने तो जा नहीं सकती। पर उस दिन रात भर उसे नींद न आई।

सदाशिव गाँव से थोड़ी ही दूर गया था कि उसने देखा जयदेव आ रहा है। सदाशिव ने पूछा—शहर से लौट आये क्या?

'हाँ!' जयदेव ने कहा—तुम कहाँ जा रहे हो।

'रामा ने मुझे अपने यहाँ से निकाल दिया । साल भर पहले जहाँ से आया था वहीं अब फिर जा रहा हूँ ।'

जयदेव ने कोई उत्तर न दिया । विदा ले वह आगे बढ़ गया और सदाशिव भी आगे चलता रहा । रात को वह कहाँ जायगा यह सोच कर उस गाँव में रुकने का निश्चय किया । यहाँ वह अनेक बार आया था कितनों को वह जानता है । ठाकुर बलबीर सिंह के दरवाजे से जा रहा था तो ठाकुर ने पहचान कर कहा—अरे सदाशिव इतनी रात को कहाँ जा रहे हो ।

'मुझे जवाब हो गया ठाकुर साहब तो अब जा रहा हूँ जहाँ भगवान ले जाये !'

ठाकुर साहब सदाशिव के काम और लगन को देखते आ रहे थे । सोचा ऐसा आदमी किसी को भाग्य से ही मिलता है । रामा ने उसे निकाल कर अच्छा नहीं किया । उन्होंने कहा—तो कहीं जाने की क्या जरूरत सदाशिव । यह अपना ही घर समझो; तुम यहीं रहो । दो रोटी तम्हें भी भगवान देगा ।

सदाशिव ने क्षण भर सोचा फिर कहा—अच्छी बात है ।

दूसरे आसपास के गाँवों में चर्चा फैल गई कि अञ्जनी अपने पिता के घर से भाग गई । सदाशिव को बड़ा आश्चर्य हुआ । अञ्जनी भाग गई पर किसके साथ । होगा स्त्री को समझना बहुत कठिन है । रहा होगा उसका कोई प्रेमी ।

दिन भर वह ठाकुर साहब के खलिहान में काम करता रहा । दूसरे दिन प्रातः काल एक घड़ी दिन चढ़े वह खलिहान जा रहा था तो जयदेव मिल गया । सदाशिव को देख कर उसने पूछा—कहो सदाशिव यहाँ कैसे !

'मैंने ठाकुर के यहाँ नौकरी कर ली ।'

जयदेव कुछ देर तक सोचता रहा फिर उसने कहा सदाशिव तुम से एक बात कहना चाहता हूँ वचन दो कि तुम मेरे वचन की रक्षा करोगे ।

'करूँगा !' सदाशिव ने कह दिया !

'तुम यह किसी से न कहना कि परसों रात को मेरी तुमसे भेंट हुई थी !'

'अच्छी बात है !'

'वचन देते हो।'

'हाँ ! पर तुम आ कहाँ से रहे हो।'

'शहर से ! मैं उस दिन तुमसे मिलने के बाद तुरन्त ही फिर शहर लौट गया था दूसरी गाड़ी से।' जयदेव ने कहा।

सदाशिव कुछ न बोला। जब जयदेव चला गया तो सदाशिव सोचता रहा। अंजनी के भागने का सम्बन्ध जयदेव से है। सम्भव है जयदेव ने शहर जाने का बहाना किया हो और परसों रात को चुपचाप आकर वह अंजनी को भगा ले गया हो पर भगा कर आखिर वह उसे ले कहाँ गया सम्भव है उसने शहर में उसे कहीं छिपा रखा हो। पर यदि यह हुआ तो यह अच्छा नहीं हुआ। रामा का जीवन कितना दुःखी हो गया है। सदाशिव को उस पर बड़ी करुणा लगी। जी में आया कि वह जाकर सब बातें रामा से कह दे पर नहीं उसने जयदेव को वचन दिया है। उसके रहस्य की रक्षा तो उसे करनी ही है।।

उसने लोगों से सुना रामा का स्वभाव आज कल बहुत चिड़चिड़ा हो रहा है। जयदेव खेती का कोई काम देखता ही नहीं। वह महीने में पन्द्रह दिन तो शहर में ही रहता है। दो तीन दिन गाँव में रहकर फिर शहर चला जाता और जब दो तीन दिन बाद आता है तो घर में बैठे रहने के सिवा और कोई काम नहीं करता। रामा ने पहले सोचा कि इतनी अधिक खेती वह इस साल चला न सकेगी सदाशिव का उसे बहुत सहारा था पर सदाशिव भी चला गया। उसने उसे कहा ही क्या था। क्या सदाशिव उसकी तनिक से बात नहीं सह सकता था। सदाशिव के लिये उसने क्या नहीं किया पर सदाशिव में कितना अभिमान है वह समझता था कि बिना उसके रामा का सब काम बिगड़

जायगा। पर वह इस साल दिखा देगी कि उसे सदाशिव की परवाह नहीं है। वह स्वयं अपनी खेती बारी की देख-भाल करेगी। उस दिन से वह अपने सारे काम स्वयं देखने लगी।

उस दिन रामा अपने खेत की जुताई देखने गई थी। उसका यह खेत गाँव के सिरे पर था। सदाशिव भी ठाकुर के खेत से लौट रहा था। रामा को देख कर वह क्षण भर के लिये रुक गया पर रामा ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया और दूसरी ओर को चल पड़ी। सदाशिव को रामा का यह व्यवहार अच्छा न लगा और वह चला गया।

किन्तु रामा अपना सारा समय लगा कर भी सफल न हो रही थी। उसका काम पूरा न हो पा रहा था। उस दिन वह बहुत थक गई थी। जयदेव शहर चला गया था उसने सोचा बिना सदाशिव के काम नहीं चलेगा पर सदाशिव को वह बुलाये कैसे। उस दिन से वह बहुधा गाँव के बाहर अपने खेतों पर जाती कि शायद सदाशिव मिल जाय तो वह उसे फिर अपने पास आने के लिये कहे।

एक दिन सदाशिव से भेंट हो गई तो रामा ने कहा—जब तुम्हें चला जाना था तो फिर इतनी खेती बढ़ाने की क्या जरूरत थी।

सदाशिव ने कुछ उत्तर न दिया।

रामा ने फिर कहा—मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अगले साल से सारी खेती बन्द कर दूँगी।

'पर इससे क्या लाभ होगा। कोई आदमी रख लो।' सदाशिव ने कहा।

'नहीं मुझे किसी आदमी की जरूरत नहीं है।'

'तो खेती बन्द करने की भी जरूरत नहीं है।'

'पर मेरे वश का यह काम नहीं है।'

'तुम्हारे वश का न हो पर मेरे वश का तो है।'

'तो आज से तुम्हीं अपना यह सब काम सम्भालो।'

दूसरे दिन से सदाशिव फिर रामा के यहाँ आ गया। लोगों ने

आश्चर्य के साथ देखा। रामा का काम फिर उसी प्रकार चलने लगा।

१५

रामा का जीवन एक पहाड़ी रास्ते से होकर चल रहा था। कम्पित लहरों में वह बह रही थी। जयदेव से उसकी पटती न थी। जयदेव अधिकतर नगर में जाया करता रामा ने उससे कुछ कहना छोड़ दिया था। जयदेव भी रामा से बोलने का कभी प्रयत्न न करता। जमीदारी की आमदनी वही वसूल करता था। इधर कई महीने से उसने उस आय का एक पैसा भी रामा को न दिया। रामा इतनी दुःखी थी पर अपने मन की व्यथा को वह किसी से कहना न चाहती थी। और कहती भी किससे। गाँव में जितनी उसकी सहेलियाँ थीं वह सभी से दूर रहती थी। किसी से भी उसका कोई सम्बन्ध न था।

उसे बहुधा अंजनी की याद हो आती। अंजनी उसकी सबसे प्रिय सखी थी। जिस दिन से वह गाँव से सहसा गायब हो गई उस दिन से रामा और अधिक दुःखी रहने लगी। एक दिन सुशीला की माँ आई तो उसने रामा से कहा—रामा, तेरे जयदेव की इधर बड़ी चर्चा हो रही है।

'क्या।'

'तूने चाहे न सुना हो पर गाँव वाले तो सब कहते ही हैं।'

'आखिर क्या मुझे तो कुछ पता नहीं।'

थोड़ा ठहर कर सुशीला की माँ ने कहा—बुरा न मानना गाँव वाले कहते हैं इसी लिये मैं तुमसे कह रही हूँ।

'कहो कहो इसमें इतना डरने की भला क्या बात ?'

'डरने की बात तो है ! तुम्हें बुरी लग जायगी।'

'न लगेगी तुम कहो।

'बात यह है रामा कि गाँव वाले कहते हैं कि अंजनी अपने आप घर से नहीं भागी।

'तो क्या जबर्दस्ती उसे कोई भगा ले गया।

'जबर्दस्ती तो शायद किसी ने न की होगी पर भगाने वाला कोई जरूर है।'

'होगा पर मैं उसे नहीं जानती।'

'रामा गाँव वाले कहते हैं कि अञ्जनी के भगाने में जयदेव का भी हाथ है।'

रामा चौंक पड़ी। आश्चर्य से वह सुशीला की माँ की ओर देखने लगी उसने कहा—सुशीला की माँ यदि उनका इसमें हाथ रहा है तो फिर इस तरह पीठ पीछे कहने से क्या होता है। अंजनी के माता पिता को चाहिये कि वे उन्हें गिरफ्तार करायें।

सुशीला की माँ ने समझ लिया कि उसकी यह बात रामा को बुरी लग गई है। उसने कहा—रामा तुमने तो व्यर्थ ही बुरा मान लिया। मैं कुछ थोड़े ही कह रही हूँ।

रामा ने कोई उत्तर न दिया। जब सुशीला की माँ चली गई तो रामा बैठी सोचती रही। क्या यह सच है। क्या वास्तव में जयदेव का हाथ अंजनी को भगाने में है। वह अपने काम में लगी रहती है इस लिये गाँव वालों की बातें वह सुन नहीं पाती।

जयदेव अञ्जनी को प्यार अवश्य ही करता था। रामा को एक एक घटना स्मरण आने लगी। जब अञ्जनी के घर में आग लगी थी तब भी गाँव में यह चर्चा चली थी कि जयदेव अंजनी के ही यहाँ था। सदाशिव ने ही उसे बचाया था परन्तु उस बात को सदाशिव ने छिपा लिया। सदाशिव कितना गम्भीर है। रामा के लिये वह सब कुछ करता है परन्तु कभी उसने रामा से कुछ।कहा नहीं उसने सदाशिव से पूँछा भी था परन्तु सदाशिव ने बात टाल दी। कितना ध्यान रखता है सदाशिव उसका। उसने सोचा कि वह सदाशिव से इस सम्बन्ध में

पूँछेगी परन्तु सदाशिव यदि जानता भी होगा तब भी तो वह कुछ नहीं बतायेगा। पूँछ कर ही वह क्या करेगी।

जब से अंजनी गाँव से चली गई है तब से जयदेव का शहर जाना भी अधिक हो गया है। तो क्या जयदेव ही अंजनी को यहाँ से भगा ले गया है और शहर में रखे हुये है। परन्तु वहाँ का खर्च वह कैसे उठाता होगा। तभी उसे ध्यान आया जयदेव जमीदारी की आय वसूल करता है कई महीने से उसने उसे कुछ नहीं दिया। रामा ने निश्चय किया कि वह आज जयदेव के कमरे में हिसाब माँगेगी।

उस दिन शाम को वह जयदेव के कमरे में गई जयदेव ने उसे देखते ही पूछा—क्या है रामा!

रामा भीतर आकर खिड़की से टेक लगा कर बैठ गई। उसने कहा—मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।

'क्या बातें करनी हैं।' जयदेव ने पूछा।

'जमीदारी की आय क्या कई महीने से वसूल नहीं की गई।

'की क्यों नहीं गई।'

'तो तुमने मुझे कुछ दिया नहीं।'

'मैंने सब खर्च कर डाला।'

'खर्च कर डाला?'

'हाँ! इसमें आश्चर्य क्या है।'

'इतना रुपया किस काम में खर्च हुआ।'

'मैंने तुमसे कई बार कहा कि मैं अपने कामों के सम्बन्ध में जवाबदेही नहीं पसन्द करता।' जयदेव ने क्रोध के साथ कहा।

रामा का दबा हुआ क्रोध उभर आया उसने कहा—तुम्हारे कामों पर मैं आक्षेप नहीं करती पर मैं जानती हूँ कि आज कल तुम शहर क्यों जाते हो, मेरा रुपया तुम कहाँ खर्च कर रहे हो

'मुझे इसकी चिन्ता नहीं है।'

'हो सकता है पर मेरे रुपये से तुम अंजनी को शहर में रखो यह

मैं नहीं सह सकती ।' रामा ने क्रोध के साथ कहा ।

जयदेव थोड़ी देर तक रामा की ओर देखता रहा फिर उसने कहा - रामा मैं समझता हूँ अब हम एक दूसरे से बहुत दूर हो गये हैं हमारी परस्पर पट नहीं सकती ।

'मैं भी ऐसा ही समझती हूँ ।'

'तब ठीक है । मैंने अपने रहने का प्रबन्ध शहर में कर लिया है आज से मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं ।'

रामा ने कोई उत्तर न दिया ।

दूसरे दिन सारे गाँव में यह समाचार फैल गया कि जयदेव ने रामा को छोड़ दिया और शहर चला गया । रामा उस दिन अपने कमरे में ही बैठी रही एक क्षण के लिये भी वह बाहर न निकली । उसे अपना यह अपमान असह्य सा हो रहा था । धीरे धीरे जब उसका हृदय कुछ हलका हुआ तब घर का काम फिर पूर्ववत चलने लगा ।

गाँव में जयदेव को लेकर नित्य ही नई नई बातें होतीं कई महीने बाद गाँव के एक आदमी ने आकर बताया कि जयदेव के एक मित्र से उसकी भेंट हुई थी । उसने बताया कि जयदेव अंजनी को लेकर बम्बई चला गया । फिर उसका क्या हुआ यह रामा न सुन सकी । रामा के जीवन में जयदेव एक तारे की भाँति चमका और फिर विलीन हो गया ।

१६

सदाशिव ने कहा—रामा जीवन में कभी कभी एक भूल हो जाती है तो उसका प्रायश्चित हम जीवन भर करने को बाध्य होते हैं ।

रामा कुछ सोच रही थी उसने पूछा—सदाशिव मैंने तुम्हें जो बकरी का बच्चा दिया था उसको तुमने क्या किया ।

'जिस दिन तुम्हारी तिलक चढ़ी थी उसी दिन वह खो गया फिर वह मुझे नहीं मिला ।'

'सदाशिव, तुम विवाह कर लो।' रामा ने सहसा कहा।

'विवाह की अब इच्छा नहीं रह गई रामा।'

रामा व्यथित हो गई माँ ने जयदेव के साथ उसका विवाह इस लिये किया था क्योंकि वह शहर का रहने वाला था उसके तौर तरीकों ने माँ को अधिक प्रभावित किया था। उसे अब भी स्मरण है कि तिलक के बाद विपिन आया था। उसने रामा के लिये सदाशिव का उल्लेख किया परन्तु माँ ने उसे पसन्द न किया। जयदेव सा सुन्दर लड़का उसे कहाँ मिलता। परन्तु शायद माँ ने यह न सोचा था कि देहात की लड़की के लिये नगर का लड़का कभी ठीक नहीं पड़ता।

रामा ने कहा—सदाशिव मैं ने तुम्हारे जीवन को नष्ट कर दिया।

'और तुम्हारा जीवन।'

'उसकी मुझे चिन्ता नहीं।'

'हमें अब अपने जीवन की चिन्ता न करनी चाहिये। समाज की बलि वेदी पर हमने अपने को चढ़ा दिया। हम अब अपने जीवन में रस की सरिता न बहा सकेंगे किन्तु यदि हमारे इस उदाहरण से संसार कुछ सीख सके तो कितना अच्छा हो।'

'सदाशिव।'

'हाँ रामा मैंने सोचा है कि अपना शेष जीवन मैं इसी उद्देश्य की पूर्ति में अर्पित कर दूँगा।'

रामा सोचती रही फिर उसने कहा—सदाशिव जो मैं तुम्हें नहीं प्रदान कर सकी वही फिर तुम्हारे इस उद्देश्य को प्रदान करती हूँ। मेरा सब कुछ तुम्हारे इस लक्ष्य को अर्पित रहेगा हम दोनों समाज की इस कुप्रथा को मिटाने के प्रयत्न में अपना जीवन अर्पित कर देंगे। हमारे बाद आने वाली पीढ़ी यदि इसमें सुखी हो सकी तो हमारा जीवन सफल होगा।

सदाशिव ने कहा—शायद यही व्यवधान था।

[समाप्त]